PRINTED BOOK–POST
MANAVTA MANDIR, HOSHIARPUR
(REGD. 26265/ 74 PB.–HSP./ 7/ 2015–17)

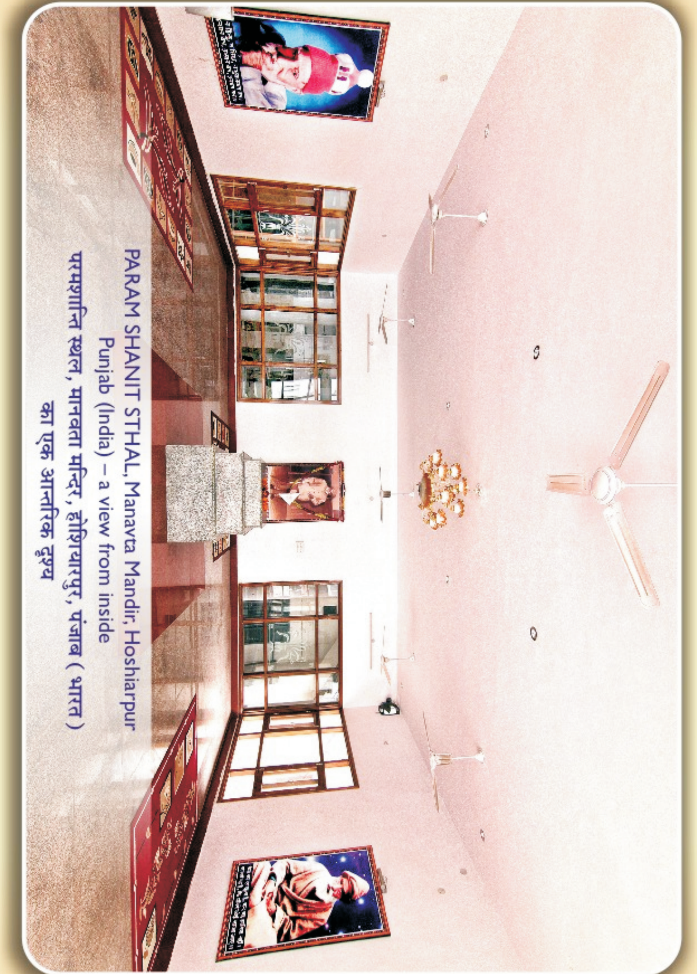

PARAM SHANIT STHAL, Manavta Mandir, Hoshiarpur
Punjab (India) – a view from inside

परमशान्ति स्थल, मानवता मन्दिर, होशियारपुर, पंजाब (भारत)
का एक आन्तरिक दृश्य

MANAVTA MANDIR
Manavta Mandir Road, Hoshiarpur–146001, Punjab
Contact : +91 1882–243154, 502154

मानव मन्दिर

सितम्बर-अक्तूबर 2015 (वर्ष–42, अंक 9–10)

परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर की संत-परम्परा

परमसंत दाताद्याल डॉ. शिवब्रत लाल जी महाराज

परमसंत परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

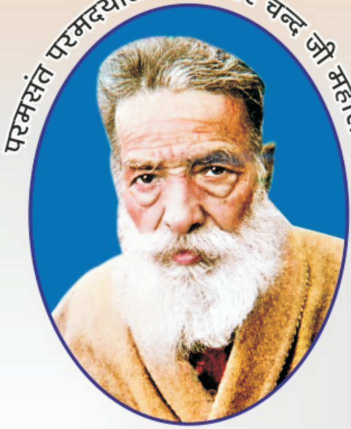

परमसंत मानवदयाल डॉ. आई. सी. शर्मा जी महाराज

हजूर श्री दयाल कमल जी महाराज

गुरू-पूर्णिमा के पावन अवसर पर
दयाल कमल जी महाराज
सत्संग देते हुए

बाई हरबंस लाल जी, श्री कुलदीप शर्मा जी, आचार्य निरंजन लाल शर्मा जी व भदौड़ के सत्संगी दयाल कमल जी महाराज के साथ परमदयाल जी महाराज की समाधि पर फूलमाला अर्पण करते हुए

गुरू-पूर्णिमा के पावन अवसर पर सत्संगी भाई-बहन दयाल कमल जी महाराज व आचार्यगणों द्वारा दिए सत्संग का आनन्द लेते हुए

मानव मन्दिर

सितम्बर-अक्तूबर, 2015 (वर्ष–42, अंक 9–10)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याए और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक : **परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीरचन्द जी महाराज**

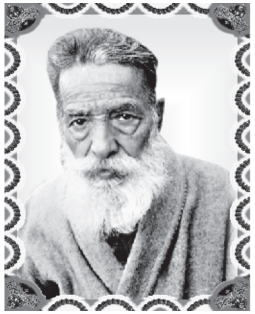

- प्रबन्धक सम्पादक :
  श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान)
  (+91 94177-66913)
- प्रकाशक :
  श्री राणा रणबीर सिंह
  (जनरल सैक्रेटरी)
  +91 94631-15977, +91 97791-05905
  E–MAIL : ranbirrahal@outlook.com

अनुक्रमणिका

1.	सुमिरन आठों याम बने!	2
2.	परमसंत परमदयाल जी महाराज के जन्मोत्सव	3
3.	सत्संग : राम और रामायण हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज	4
4.	महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज द्वारा रचित महारामायण	12
5.	सत्संग : परमसन्त हजूर परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज	18
6.	सत्संग : परमसन्त हजूर परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज	34
7.	सत्संग : सत्संग की महिमा परमसन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज	57
8.	सत्संग : दयाल कमल जी महाराज	75
9.	आभार प्रदर्शन	93

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

FAQIR LIBRARY CHARITABLE TRUST (REGD.)

Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur–146001 (Pb.) Ph.: 01882–243154
e–mail : manavtamandirhsp@gmail.com
web : www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

सुमिरन आठों याम बने!

हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

तू सत है सत की दे सत्ता
सत की सत्ता से काम बने।
तू चित्त है चित्त का चिंतन दे
लय चिंतन से विश्राम बने॥१॥

तू शान्ति है दे शान्ति को
हिया जिया में कुछ शान्ति मिले।
दुःख चिंता से छुटकारा मिले
जीवन मेरा निष्काम बने॥२॥

तू अर्थ है अर्थ मिले मुझको
तू धर्म है धर्म मिले मुझको।
तू मुक्त है मुझको मुक्ति दे
सेवक का पूरन काम बने॥३॥

दे नाम हुआ नामी जब तू
दे रूप, रूप जब धारा है।
जो नाम-रूप नहीं कोई तेरा
तो यह भी अरूप अनाम बने॥४॥

राधास्वामी तू कहलाया
राधास्वामी पद दरसाया।
इस नाम का सुमिरन प्रति पल हो
यह सुमिरन आठों याम बने॥५॥

('शिव शब्द सागर' से संकलित)

परमसंत परमदयाल जी महाराज
के
जन्मोत्सव

पर हार्दिक बधाई!

सभी मानवताप्रेमी सत्संगीजनों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि हर साल की भाँति इस वर्ष भी परमसंत परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज का पावन जन्मोत्सव दिनांक 18 नवम्बर, 2015 (बुधवार) को मानवता मन्दिर, होशियारपुर (पंजाब) में दयाल कमल जी महाराज के सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। कृपया समय से पूर्व पधार कर एवं उत्सव में आयोजित सत्संग-समागम में सम्मिलित होकर पूज्य परम दयाल जी महाराज जी के प्रेरणादायक जीवन-प्रसंगों को सुनकर लाभ उठाएँ।

सभी सत्संगीजनों से अनुरोध है कि इस पावन अवसर पर लंगर तथा प्रसाद ग्रहण करके जायें। बाहर से आने वाले सज्जनों के भोजन व ठहरने का प्रबन्ध फ़कीर लाइब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट की ओर से किया जायेगा।

सचिव,
मानवता मन्दिर, होशियारपुर,
पंजाब (भारत)

सत्संग

राम और रामायण

हजूर दाता दयाल
महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज

राम हिन्दुओं के खास अवतार समझे जाते हैं और हैं भी। हिन्दुओं का एक बच्चा भी ऐसा नहीं होगा जो चौबीस घण्टों में राम का नाम दो-चार बार न लेता हो। बहुत से लोग प्रभात काल में राम नाम का जाप करते हैं। कुछ लोग नहाते वक्त राम-राम कहा करते हैं, यहाँ तक कि जब किसी से कोई बुरा काम भी हो जाता है तब भी लोग अफ़सोस और पश्चात्ताप के रूप में कहते हैं ''राम-राम'' ऐसा नहीं चाहिए था। यह इस नाम की अजमत (महानता) का स्पष्ट सबूत है जो आज तक किसी न किसी सूरत में लोगों के दिलों में मौजूद है। राम के कारनामों से धार्मिक पुस्तकें भरी पड़ी हैं। विशेषकर रामायण प्रारम्भ से अन्त तक उन्हीं की महानता का गीत गाती है। सबसे पहले वाल्मीकि जी ने संस्कृत भाषा में रामायण लिखी। हनुमान जी ने हनुमान-चरित्र का गाना सुनाया। व्यास जी ने भागवत और महाभारत में भी इन्हीं के बारे में कहा। इस किस्म के अनगिनत रामायण संस्कृत भाषा में हैं। गोस्वामी तुलसी दास जी ने सारी ज़िन्दगी रामायण की कथा लोगों को सुनाई। बीसियों रामायण लिखी गई हैं परन्तु सबसे अधिक प्रसिद्ध 'रामचरित

मानस' है। महाराज रघुराज सिंह साहिब रीवा नरेश ने 'राम-स्वयंवर' के नाम से एक बहुत बड़ी किताब लिखी। पारसी भाषा में मिर्ज़ा बेदिल, अलामा फ़ैजी, मुल्लाँ मसीह और कुछ कायस्थ बुजुर्गों ने इस विषय पर बहुत रोशनी डाली। मद्रासी, बंगाली, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, उड़िया, बिहारी, पाली, पूर्वी, मारवाड़ी यानि भारतवर्ष की हर भाषा में रामायण लिखी गई परन्तु कई संस्करण अब देखने में ज़रा कम आते हैं।

पूर्विये जिनको आम तौर पर लोग कम-अक्ल और देहाती कहते हैं वो भी आल्हा रामायण बड़े शौक से गाते हैं। अंग्रेज़ी में मि. ग्रिफिथ (Griffith) की, रमेश चन्द्र दत्त और हनुमन्त नाथ दत्त ने भी बहुत अच्छे रामायण लिखे। उर्दू भाषा में खुशतर, फ़रहत, उफ्क और तमन्ना ने बहुत मेहनत से काम किया। मैंने पंजाब के दौरे में कई रामायणें लिखी हैं जो अब भी पंजाब में मिल सकती हैं। स्व. श्री मुन्शी सूरज नारायण साहिब ने भी बड़ी मेहनत के साथ रामायण का खास नमूना लिखकर पेश किया है। किसी-किसी ने सच्ची रामायण, चम्पू रामायण, रामकलेवा, रामाश्वमेध, राम-स्वयंवर, लंकादहन और राम वनवास इत्यादि किताबें लिखीं। इन सबकी सूची लिखना मुश्किल काम है परन्तु रामायण की इतनी पुस्तकें होने के बावजूद नतीज़ा क्या हुआ? इसे भी ज़रा सोच देखिये। इनके मतलब और भाव पर कोई ध्यान नहीं देता-

कुछ ऐसे सोये हैं सोने वाले कि जागना हश्र तक क़सम है।

हर साल दशहरे के अवसर पर रामचन्द्र जी के जीवन के कारनामे दिखाये जाते हैं परंतु कितने मनुष्य हैं जो इनसे शिक्षा लेकर कुछ लाभ उठाते हैं? बाल-बच्चों के साथ तमाशा देखने गये, खिलौने खरीदे, मिठाईयाँ लीं, इधर-उधर देखा-भाला, दुकानों की सैर की और घूम-फिर कर वापिस घर पहुँच गये। कम से कम बच्चों को ऐसे मौके पर यह भी नहीं बताया जाता कि रामचन्द्र जी कौन थे, उनके कारनामे क्या हैं और उनसे क्या शिक्षा लेनी चाहिए इत्यादि-इत्यादि।

आज हम अपने पढ़ने वालों को लाभदायक बातें चुन कर पेश करते हैं। अगर वो ध्यान से पढ़ेंगे तो उनका भला होगा न पढ़ेंगे तो मुझे कुछ शिकायत भी नहीं है। मैं तो अपना फर्ज़ अदा कर देता हूँ।

मानो न मानो इसका तुम्हें अख्तियार है।
हम नेकी बद हमेशा ही समझाये जाते हैं॥

रामायण से भाइयों को शिक्षा

लक्ष्मण जी ने अपनी नई-नवेली स्त्री को छोड़ा, माता-पिता के प्रेम में मुँह मोड़ा, संसार के ऐशो-आराम को पाँव से ठुकराया परन्तु अन्त तक राम का साथ दिया। युद्ध में वो कारनामें दिखाये कि शायद ही कहीं देखने को मिलेंगे। उन्होंने अपने-आपको राम का शक्तिशाली बाजू साबित कर दिखाया। भरत ने राजा होते हुए भी बड़े भाई के ख्याल से साधुओं की तरह जीवन व्यतीत किया। राजगद्दी के मालिक होते हुए भी श्री रामचन्द्र जी की खड़ाऊओं को सिंहासन पर रखकर अपने-आपको उनका सेवक समझते रहे। चौदह वर्ष तक भक्ति का ऐसा जीवन व्यतीत किया जिससे बच्चा-बच्चा भी वाकिफ़ है। लक्ष्मण जी ने सबसे पहले अपने-आपको भाई के ऊपर कुर्बान कर दिया। बाकी तीन भाइयों ने गुप्तार घाट में जल-समाधि ले ली। जीवन में भी साथ दिया और मौत में भी पीछे कदम नहीं हटाया। यह भाई के साथ सलूक करने का आदर्श है। आजकल के भाइयों की हालत ज़रा ग़ौर से देखो तो पता लग जाये कि ज़मीन-आसमान का अन्तर है या नहीं-

भाग इन पर्दाफरोशों से कहाँ के भाई।
बेच ही डालें जो यूसुफ सा बरादर होवे॥

ऐ हिन्दुओं! रामायण से भाइयों की मोहब्बत का सबक सीखो और अपने आदर्श के पद-चिन्हों पर चलकर अपने बुजुर्गों के नाम को रौशन करो। ऋषियों के नाम को बदनाम न करो। ज़रा-ज़रा सी बात पर भाइयों का गला न काटो और न ही उनका अधिकार छीनो। तुम ऋषियों की सन्तान हो तो वैसे ही काम करो ताकि किसी को तुम्हारी ओर ऊँगली उठाने का अवसर न मिले।

नवयुवकों को शिक्षा

रामचन्द्र जी लक्ष्मण और सीता जी के साथ जंगल को निकल गये। साथ में न धन है, न मुल्क है, न फौज़ है, न नौकर-चाकर हैं और न कपड़े-लत्ते। केवल सदाचरण की दौलत उस वक्त उनके पास थी।

चौदह वर्ष तक मुसीबत का जीवन गुज़ारा परन्तु चेहरे पर शिकन तक नहीं आई। मन में कभी भी कमज़ोरी नहीं आई। वह अपने पवित्र जीवन और सदाचरण पर पर्वत की तरह अटल रहे। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से बन्दरों और रीछों को फौजी शिक्षा देकर काफी बड़ी फौज तैयार कर ली और संसार की सबसे बड़ी शक्ति को युद्ध में पराजित कर ख़ाक में मिला दिया। रावण, कुम्भकरण और मेघनाद को उनका लोहा मानना पड़ा। ऐसा युद्ध हुआ कि जिसका उदाहरण मुश्किल से ही कहीं नज़र आयेगा।

बात क्या थी? उनका मन बहुत मज़बूत था, ख्याल मज़बूत था, सच्चाई थी, नेक-चलनी थी और अपने-आप पर और अपने बाजुओं की शक्ति पर पूरा विश्वास था। अगर यही बातें तुम्हारे अन्दर भी पैदा हो जायें तो तुम्हारी नेक-नीयती, अच्छा व्यवहार और कामयाबी को देखकर लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे।

क्षत्रियों को शिक्षा

समुद्र का राजा पुल नहीं बनाने देता था। लक्ष्मण जी ने तीर को कमान से जोड़ा और रामचन्द्र जी से कहा ''देव-देव आलसी पुकारे''-

उल उल अज़मान दानिशमन्द जब करने पै आते हैं।
समुन्दर फाड़ते हैं कोह से दरिया बहाते हैं॥

समुद्र डर के मारे काँपता हुआ भेंट लेकर आया, पुल के लिए रास्ता दे दिया, पुल बन गया, लंका फ़तेह हो गई। लंका की जीत का सेहरा लक्ष्मण जी के सिर बाँधा गया। जनकपुरी में धनुषयज्ञ के अवसर पर जब कमान के टूटने की निराशा हो गई, राजा जनक ने सबको बुरा-भला कहा, सृष्टि को बहादुरों और दिलेरों से खाली बतला कर अपशब्द कहे तो लक्ष्मण जी अपने क्रोध को दबा न सके और बोले कि जहाँ एक भी सच्चा क्षत्रिय रहता है- किसी को ऐसे अपशब्द मुँह से निकालने की हिम्मत नहीं होती। यहाँ रघुकुलभूषण श्री रामचन्द्र जी उपस्थित हैं परन्तु उनका भी ख्याल न करते हुए राजा जनक ने ऐसी गुस्ताखी की -

रघुवंसन महिमा जहाँ कोउ होई।
तेहि समाज अस कहे न कोई॥

कही जनक अस अनुचित बानी।
विद्यमान रघुकुल मनि जानी॥

इसी क्रोध की हालत में फिर कहते हैं ''यह धनुष तो क्या चीज़ है मैं इस ब्रह्माण्ड के भी टुकड़े-2 कर सकता हूँ। जनक ने अपने-आपको समझा क्या है?'' लक्ष्मण जी की गर्जना को सुनकर पृथ्वी और आकाश काँप उठे। राम ने समझा-बुझा कर उन्हें शान्त किया। धनुष टूटने पर परशुराम जी क्रोध में आ गये। लक्ष्मण जी ने कहा ''सूर्यवंशी मौत से भी नहीं डरते। अगर मलकुलमौत (मौत का फ़रिश्ता) भी मुझे ललकारे तो दम के दम मैं उसके होश ठिकाने कर दूँ। रघुवंशी मुकाबले में पीठ नहीं दिखलाते। यह हमारी खानदानी शान है, इत्यादि-इत्यादि।''

ब्राह्मणों को शिक्षा

परशुराम को जब विश्वास हो गया कि प्रकृति ने रामचन्द्र जी को क़ौम की सरदारी के लिए प्रेरित किया है तो निहायत आदर और मान से उन्हें नमस्कार किया और अपनी कमान उन्हें भेंट कर दी। इसी तरह विश्वामित्र ऋषि ने उनकी बुद्धिमता को देखकर उन्हें तीरन्दाज़ी और कमानदारी की विशेष शिक्षा दी। अगस्त्य ऋषि ने शत्रु के मुकाबिले के लिए उन्हें योग्य बना दिया, क्या इन बातों पर विचार करके लोग सबक हासिल करते हैं? अफ़सोस-सद अफ़सोस!

माताओं को शिक्षा

कौशल्या जी रामचन्द्र जी से कहती हैं ''अगर तुम्हारे पिता ने वन जाने की आज्ञा दी है तो मत जाओ क्योंकि आचार्य से गौ पिता का अधिकार दसगुना होता है परन्तु माँ का अधिकार सन्तान पर सौ गुना बतलाया गया है। इसलिए मैं तुम्हें जाने से मना कर सकती हूँ लेकिन अगर कैकेयी ने तुम्हें हुक्म दिया है तो शौक से जाओ क्योंकि सौतेली माँ का अधिकार सन्तान पर हज़ारगुना होता है। ये धर्म की बातें हैं। कैकेयी की आज्ञा तुरन्त मानो। कोई यह न कहे कि राम ने माता की आज्ञा का उल्लंघन किया। जाओ! खुशी से जाओ!! हँसते-खेलते हुए जाओ!!! और संसार में यश के भागी बनो।''

माता सुमित्रा लक्ष्मण जी को उपदेश देती है, ''बेटा! राम बड़े भाई होने के नाते तुम्हारे पिता के समान हैं। जाओ सच्चे पुत्र की तरह दोनों

की सेवा करो। उन्हें ज़रा भी कष्ट न हो। जहाँ राम हैं वहीं अयोध्या है। मेरी कोख उस समय पवित्र होगी जब मैं सुनूँगी कि लक्ष्मण ने रामचन्द्र जी की सेवा में अपने शरीर का त्याग कर दिया।''

क्या अब हमारे देश में ऐसी माताएँ हैं? राम-राम कहो। अब तो माताएँ सन्तान को बुज़दिल, डरपोक और अधर्मी बना रही है। उनके रहन-सहन को देखो तो पता चले। दस-दस, बारह-बारह साल के लड़के रात के समय डर के मारे पेशाब करने के लिए अकेले नहीं निकलते। जब माँ साथ जाये या कोई बड़ा आदमी पास खड़ा रहे तब पेशाब करेंगे। इस परिवर्तन का कहीं ठिकाना है? विलायत में छोटे-2 बच्चों को बहादुरों के कारनामे सुना-2 कर उन्हें दिलेर और निडर बनाया जाता है परन्तु यहाँ की यह हालत है।

स्त्रियों को शिक्षा

सीता जी ने रामचन्द्र जी की खातिर महल के सारे ऐशो-आराम त्याग दिये और संकट में साथ देने के लिए तैयार हो गई। पतिभक्ति का ऐसा उदाहरण कहाँ मिल सकता है? सीता जी के दिल के भाव का अन्दाज़ा लगाइये। चौदह साल तक कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। क्या यह आसान काम था? लंका से वापसी के बाद पति की आज्ञा से निरपराध को वनवास मिला परन्तु शिकायत का एक शब्द भी जिह्वा पर न आया। यह सच्ची पति भक्ति स्त्री का आदर्श है। सती सीता का यही आदर्श स्त्रियों को अपने मस्तिष्क में रखना चाहिए।

धर्मियों को शिक्षा

दशरथ जी ने रामचन्द्र जी की जुदाई का कष्ट उठाना स्वीकार किया परन्तु अपनी बात पर दृढ़ रहे-

रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाइ पर वचन न जाई॥

दशरथ जी ने पुत्र-वियोग में शरीर छोड़ दिया। मन्त्री जाबालि चित्रकूट में रामचन्द्र जी की सेवा में पहुँचा और प्रार्थना की ''ऐ आर्य! राजा साहिब चल बसे। आप वापिस चल कर राज-काज सम्भालिये। इतनी सख्ती के साथ वचन का पालन करना इस समय मुनासिब नहीं है। आप खुद सोच-विचार से काम लीजिये।'' रामचन्द्र जी ने उत्तर दिया मैं अपने पूज्य पिता जी की आज्ञा को टाल नहीं सकता। मैं उनमें

कोई ऐब नहीं पाता। ऐ मन्त्री! तुम मुझे ग़लत मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हो। क्या यही तुम्हारा कर्त्तव्य है? जाकर इन्तजाम में मन को लगाओ। मैं धर्म के मार्ग से हट नहीं सकता।

शिष्टाचार की शिक्षा

सीता जी के आभूषणों को खोज करके सुग्रीव ने रामचन्द्र जी को दिखाया। वो लक्ष्मण जी से पूछते हैं भाई लक्ष्मण! देखो तो आभूषण सीता जी के हैं या नहीं? लक्ष्मण यति उत्तर देते हैं दूसरे आभूषणों को मैं पहचानता नहीं परन्तु पाँव के नूपुर को जरूर पहचाना हूँ क्योंकि प्रतिदिन माता सीता जी के चरण छूते समय मैं इन्हें देखता था। ये बेशक उन्हीं के आभूषण है।

सदाचार की शिक्षा

मुल्ला मसीह पारसी रामायण के लेखक सीता जी की स्तुति में यूँ लिखते हैं-

तनुष रा पीर हन उरियाँ नदीदा।
चूँ जान अन्दर तन वा तन जा नदीदा॥

लेखक ने बहुत बारीकी से काम लिया है। वो कहता है कि सीता जी के कपड़े ने भी उन्हें नंगी नहीं देखा। जैसे प्राण शरीर के अन्दर हैं परन्तु शरीर ने प्राणों को नहीं देखा। कैसा अच्छा उदाहरण दिया है।

राम की वास्तविक बड़ाई की शिक्षा

वही मुसलमान लेखक भक्ति के ज़ज्बे में आकर कैसा सुहावना राग अलापता है। तबियत फड़क जाती है और मस्ती आ जाती है। कोई हिन्दु इस विचार को प्रकट करता तो और बात थी। यहाँ एक सच्चे मुसलमान को राम में खुदा का जलवा नज़र आता है। उसके विचार बहुत शुद्ध हैं-

बज़ाहर राम व दर बातन खुदा बूद।
बमानी राम कै अज़ूए जुदा बूद॥
चुनी बुत गर व्याबम ऐ ब्राह्मन।
अगर हिन्दु ना मर्दम काफ़रम मन॥

अर्थ- बाहिर में तो राम थे परन्तु असल में वो ज़ाते खुदा थे। वे उससे जुदा नहीं थे। ऐ ब्राह्मण! अगर ऐसा मनुष्य मुझे मिल जाये और मैं हिन्दु न हो जाऊँ तो मुझे काफ़िर समझना।

मित्रता की शिक्षा

रामचन्द्र जी सुग्रीव से कहते हैं ''मेरे लिए मित्र का दु:ख पर्वत के समान है। मैं अपने दु:ख को राई के बराबर भी नहीं समझता।'' –

जो न मित्र दु:ख होय दुखारी।
तिन्हें विलोकत पातक भारी॥

अर्थ– जो मित्र के दु:ख से दु:खी नहीं होता उसका मुँह देखने से पाप लगता है। एक पारसी कवि इस बात को इस प्रकार लिखता है–

दोस्त आँ बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त।
दर परेशाँ हाली व दर मांदमी॥

मित्र वो है जो मुसीबत में मित्र की सहायता करता है।

काम करने वालों को शिक्षा

हनुमान जी के दिल की मज़बूती और दिलेरी को देखिये। समुद्र पार कर गये, लंका में प्रवेश किया, अकेले थे, न कोई यार न मददगार। सीता जी से मिले, तसल्ली दी, रावण को अपमानित किया। विभीषण को अपना सहायक बना लिया। शत्रु के घर में फूट डाल दी। सारा भेद जान लिया उनकी कमज़ोरियों को समझ लिया। अकेले होते हुए भी सोने की लंका को जला कर भस्म कर दिया।

आचार्यों को शिक्षा

वशिष्ठ जी ने रामचन्द्र जी को जप-तप, संयम-नियम और ज्ञान-ध्यान सब कुछ सिखलाया जिसका पता महारामायण और योगवाशिष्ठ को पढ़ने से लगता है परन्तु उनको 'अहं ब्रह्मास्मि' कहने वाला भिखमंगा साधु नहीं बनाया बल्कि वास्तविकता की शिक्षा देते हुए भी उन्हें राज-पाट और काम-काज के योग्य रखा। अगर ऐसी शिक्षा न होती तो न लंका फतेह होती और न रामचन्द्र जी इस खूबी से राज का काम-काज संभाल सकते।

यह सच्ची शिक्षा की बड़ाई है।

महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज

द्वारा रचित

महारामायण

(गतांक से आगे)

छटवाँ समुल्लास
रावण और मन्दोदरी

राम बाण का कौतुक देखकर रावण के मन में संकल्प-विकल्प की घुड़दौड़ होने लगी। वह महल में आया। मंदोदरी पाँव पर पड़ी। ''नाथ! राम के साथ बैर न कीजिए। शत्रुता बराबर वालों के साथ की जाती है। उनकी शरण में आइये। जिससे मेरा सुहाग अचल बना रहे।''

रावण–''राम में इतनी शक्ति कहाँ है जो मेरा सामना कर सके।''

मंदोदरी – ''वह तो आ गये। तुम्हारे सिर पर आकर पहुँच गये। समुद्र पर पुल बाँधकर आये। धूमधाम करते हुए आये। तुम में सामर्थ्य होती तो क्या तुम समुद्र पर पुल न बाँध लेते।''

रावण– ''समुद्र को मैंने लंका की खाई बना रखा है। नहीं तो मेरे लिये ऐसा पुल बाँध लेना क्या कठिन काम था।''

मन्दोदरी– ''यह खाई काम नहीं आई। इससे रोकथाम नहीं हो सकी। बंदर और रीछ दनदनाते हुए लंका में पहुँच गये।''

रावण – ''इनकी मृत्यु यहाँ ले आई। पुल इसका कारण बना। राक्षस उन्हें पकड़-पकड़ कर खा जायेंगे।''

मन्दोदरी– ''समुद्र तटवासी राक्षसों में भगदड़ मच रही है। वह अपने घर छोड़-छाड़ कर लंका में आ रहे हैं। खाने वाले होते तो बंदरों पर मुँह मारते। यहाँ तो उल्टी बात हो रही है। बन्दर उन्हें नोंच-खसोट कर मार रहे हैं। राक्षस माँस भक्षक हैं पर बन्दर ऐसे नहीं हैं। कहीं वह ऐसे होते तो धर-धर कर चबा जाते। तुम बहकी-बहकी बातें न करो। मेरा कहना मान जाओ। राम मनुष्य नहीं है। वह ब्रह्म के अवतार हैं। उनके शत्रु की रक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश तक नहीं कर सकते।''

रावण हँसा– ''भोली-भाली स्त्री! ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तो सारे अनुचर मेरे कारागार में हैं। वह क्या मेरी रक्षा करेंगे। समझ-बुझ कर मुँह खोल! यों ही न बोल।''

मन्दोदरी –''मुझ पर दया कीजिए। मैं आपकी अर्धांगिनी हूँ। सब कुछ कर लिया। संसार की लीला देख ली। सीता श्री राम को दे दीजिए। प्रभु के चरणों की शरण में चले जाइये। वह दयालु कृपालु है। तुम्हारा अपराध क्षमा कर देंगे। मेघनाद सपूत है। इन्द्रजीत तेजवान, बलवान और बुद्धिवान है। राज-काज उसे सौंप दीजिए। वह राजा हो जाये। आपका चौथा पन आ गया। वन परस्तों का भेष धारण कीजिए और मुझे भी अपने साथ लेकर वन को चलिए। वह शास्त्रों की मर्यादा है।''

यह कहकर मन्दोदरी रो पड़ी और रावण के पाँव पर गिरी। ''यह मेरी विनती स्वीकार कीजिए।''

रावण ने मन्दोदरी को उठाकर अंग लगाया। ''तू डरी क्यों है? सारी आयु मेरे साथ रही। क्या मेरे बल, पराक्रम और प्रताप से परिचित नहीं है। देख! कौन ऐसा बली है जो मेरा लोहा नहीं मानता। संसार की सारी शक्तियाँ एक-एक करके मेरे आधीन हो रही है। जिसने सिर उठाया, मैंने उसे वही कुचल दिया। देव, दनुज, किन्नर, नाग और गंधर्व कौन हैं जो मेरे वशीभूत नहीं हैं। लंका सभ्य देश है। सारे जगत में उसकी साख है। अयोध्या इसके सामने क्या है? और फिर अयोध्या के दुबले-पतले दो लड़के! यह क्या मेरा सामना कर सकते हैं?।''

मन्दोदरी बोली – ''राम को तुम राम समझो। नर न समझो। वह व्यापक महान् शक्ति है जो सारे जगत में मन्डलाकार हो रही है। उसका 'सिर' दिव्यलोक में, 'पाँव' पाताल में और 'धड़' अन्तरिक्ष में है। वन और वनस्पति 'रोंगटे', पहाड़ 'हड्डियाँ' और 'नसनाड़ी' नदियाँ है। सूरज और चाँद दोनों उसकी आँखें हैं और देवी-देवता उनकी शक्तियाँ हैं। तुमने मनुष्य का आकार देखकर उन्होंने समझ लिया। ऐसा नहीं होना चाहिए। वह अवतार हैं। ब्रह्म की सामान्य शक्ति जब विशेष रूप धारण कर लेती है, उसमें विशेषता आ जाती है। देखने में छोटा हुआ तो क्या! वह सामान्य से बदल कर विशेष बन गया है और आग की चिन्गारी के समान सारे जगत को जला सकते है।''

रावणह ँसा–''यहत ोम ेरेह ोग ुणोंक ोग ार हीह ै ाम ेराप्रताप अखिल ब्रह्माण्ड में छाया हुआ है और ऐ सुन्दरी! आग की चिन्गारी जब सारे ब्रह्माण्ड को जला देगी तो यह ब्रह्म कहाँ और किसमें रहेगा।''

मन्दोदरी – ''सृष्टि, स्थिति और लय ब्रह्म के आधार पर है। ब्रह्म निराधार है। त्रिगुणात्मक खेल अनादि अनन्त प्रवाह रूप से ब्रह्म में होता ही रहता है। वेद इस ब्रह्म के साँस हैं। उनके अन्तरगत कारण सूक्ष्म और स्थूल जगत बनता बिगड़ता रहता है। यह 'राम' उसी का निज स्वरूप और सत और सत्ता है।''

हुए मण्डलाकार मण्डल बने वह।
बने मङ्गलाकार मङ्गल हुए वह॥
उन्हीं में हैं ब्रह्मा उन्हीं में महेषा।
उन्हीं में है विष्णु उन्हीं में है शेषा॥
जो संसार में निद्धियाँ सिद्धियाँ हैं।
वह सब राम के रूप की शक्तियाँ हैं॥
न धोखे में आओ न भरमो न भूलो।
अविद्या के झोले में आकर न झूलो॥
नहीं नर हैं नर का धरा रूप अद्भुत।
जगत के बने राम जी भूप अद्भुत॥

खुली दृष्टि से इनका दर्शन करो तुम।
तन मन और धन को अर्पण करो तुम॥
उन्हीं की ही सेवा उन्हीं की हो भक्ति।
उन्हीं के सहारे हैं सब योग युक्ति॥

रावण – ''राम यहाँ होते तो तेरी स्तुति सुन कर हँस पड़ते। तू नर को 'नारायण' बना रही है। यह महिमा तुझ में है। तू तो राम से कहीं बढ़-चढ़ कर है।''

मन्दोदरी समझ गई। रावण ने सीता को क्या हरा, उसकी बुद्धि हरी गई। मृत्यु की कोई औषधि नहीं है। जब अन्तकाल हो जाता है रोगी और वैद्य दोनों की मति मारी जाती है। उपयोगी औषधि की तरफ ध्यान तक नहीं जाता। वह सोच-समझ कर चुप हो रही है।

अभी धार कितनी हो बरसे गगन से।
नहीं बेंत में फल फूल बीज उगते॥
किया नीम को युक्ती से किसने मीठी।
रहेगी सदा नीम कड़वी की कड़वी॥
जो अज्ञान के दल दलों में फँसे हैं।
न निकलेंगे वह पाँव सिर से धँसे हैं॥
गुरू शिव हो विष्णु हो ब्रह्मा ब्रहस्पति।
न अज्ञानी की उनसे बदलेगी मति गति॥

रात भर वह समझाती रही, लेकिन रावण कब उसकी सुनने लगा था।

सातवाँ समुल्लास
अंगद-दूत

प्रात:काल राम जागे। नित्य नियम करके बंदरों-आदि की सभा बैठी।

राम ने पूछा– 'तुम लोग लंका में आ गए। अब यह बताओ कि क्या करना चाहिए।'

जामवन्त सब में बुढ्ढा और समझदार था। उत्तर दिया– ''काम युक्ति और मर्यादा के साथ हो। अच्छा मन्त्र जो मैं दे सकता हूँ वह यह है

कि अंगद को रावण के पास दूत बनाकर भेजा जाये। वह उसे जाकर समझाये बुझाये। सीता को लौटा दे, तो लड़ने-झगड़ने का नाम न लिया जाये।'' लेकिन मैं जानता हूँ कि वह ऐसा न करेगा। पहले इसका उत्तर आ जाये तब लंका पर चढ़ाई की जाये।''

जामवन्त की बातें जँची तुली हुई थीं। सब मान गये।

राम ने अँगद से कहा– ''तुम क्रोध के रूप हो। पहिले अपना रूप मुझ से समझ लो। फिर दूत बन कर रावण की लंका में जाओ। प्रकृति में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँचों चंचल मन के स्वभाव कहलाते हैं। यह जीवन की शोभा और महिमा है। समता के साथ हो तो बहुत सुन्दर लगते हैं। जब इनमें असमता आ जाती है तो कुरूप हो जाते हैं। इसी कुरूपता का निषेध किया गया है। नहीं तो वह जब तक तराजू के पल्लों के समान बराबर रहते हैं वह विधि कर्म कहलाते हैं। असमता निषिद्ध है। समता विधि है।''

काम कहते हैं वीर्य, वीरता और सुन्दरता को। यह वृद्धि और उन्नति का कारण है। समता के साथ मनुष्य की सब प्रकार की वृद्धि इसी के सहारे होती है। असमता आई और यह हानिकारक हुआ।

क्रोध कहते हैं डाँट-डपट को। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने स्वभाव, गुण और कार्य की सम्भाल कर सके। दूसरे का प्रभाव उस पर न पड़े। इसमें भी समता रहे। असमता न होने पावे। क्रोध मनुष्य में अवश्य हो, नहीं तो दूसरे उसे कुचल डालेंगे और वह निर्बल होता जायेगा। क्रोध का मान्तव्य मारधाड़, हिंसा और हानि नहीं है। जो ऐसा करता है वह क्रोधी नहीं है, क्रोध का विरोधी है। साँप अपनी फुसकर को न छोड़े, हाँ किसी को काटे नहीं। फुसकराते रहने से दूसरी शक्तियाँ उसको पराजय न कर सकेंगी और जिस पुरुष में क्रोध की अधिकता असमता के साथ है वही क्रोध उसे मार डालता है। उसके शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। लोहू, माँस, हड्डी, चरबी सब जलने लगते हैं। वह चिड़चिड़ा और निर्बल हो जाता है और जिसमें समता है वह बलवान, स्वरक्षक, धीर-वीर गम्भीर बना रहता है।

लोभ न हो तो संग्रह कौन करे। व्यय करने में बल नहीं है। बल संग्रह करने में हैं। लोभ अवश्य हो, नहीं तो उन्नति और वृद्धि कभी न होगी। विद्या, बुद्धि, सभ्यता, धन साधुओं का लोभ समता के साथ होना जीवन का आवश्यक विषय है।

मोह संग्रह शक्ति का भाव है जिसमें और जिससे प्राणी को ममत्व होता है। यह समत्व होता है। यह समत्व व्यौहारिक यत्न का प्रबन्धक है। ढुलकने वाले ढेले पर घास तक नहीं जमती। मनुष्य मोह के बस एक स्थानी होता है और अपना व्यौपार बढ़ा लेता है। वह भी समता के साथ हो।

अहंकार में सबकी जड़ है। यह अहंभाव ही संसार है। लोभ, मोह, काम, क्रोध का यही केन्द्र है और इसी में सब पिरोये हुये रहते हैं। यही दृढ़ता है। यही दृढ़ाता रहता है। समता के साथ हो तब तो उन्नति के शिखर पर ले जाता है। असमता आई और यह नाश का कारण बन जाता है।

ऐ बेटे! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की निंदा करने वाला आप अपना शत्रु है। लोग अनसमझी से कहते हैं, ''काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को मार दो, जलादो, दग्ध कर दो।'' सोचो तो सही! यह न हो तो भक्ति, योग, साधन, ज्ञान, ध्यान किस से और किसके बल से हो। इनके मारने और दग्ध करने का अर्थ यह है कि यह नियम में रहें। इनमें असमता न आने पावे। तब यह दोनों व्यौहार और परमार्थ में उपयोगी और सहायक होते हैं।

तुम मेरे इस मूल आशय को समझ कर लंका जाओ। रावण से मिलो। उसे समझाओ-बुझाओ। तुम सयाने हो। वीर और धीर हो। जिससे मेरा काम बने वही तुम्हारा कर्त्तव्य है।

अंगद ने सर झुकाया। ''मैं और मेरा काम क्या? आप मुझे यश दे रहे हो। आप का काम तो पहले ही से हुआ है।''

दण्ड प्रणाम करके अंगद लंका को चले।

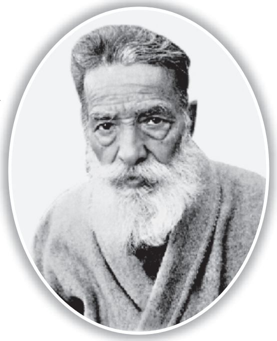

सत्संग

परमसन्त हज़ूर परमदयाल

पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर।

दिनाँक 17 अक्तूबर 1975 ई.

कातिक मास पाँचवाँ चला। सुरत शब्द गुरु चेला मिला।
तक काया कँवलन विधि भाखी, कँवल दुवादस काया राखी
प्रथमें कँवल गनेश बिलासा, कंवल दूसरे ब्रह्मा वासा।
कंवल तीसरे विष्णु प्रकाशा, चतुर्थ कंवल शिवशक्ति निवासा
आतम कंवल पाँचवाँ होई, छटा कंवल परमात्म सोई।
कंवल सातवें काल बसेरा, जोत निरंजन का वहाँ डेरा॥
कंवल आठवाँ त्रिकुटी माहिं, सूरज ब्रह्म बसे तोहि ठाहीं।
नवाँ कंवल है दसवें द्वारे, पारब्रह्म जहाँ बसे निरारे॥
महासुन्न में कंवल अचिंता, कंवल दसम का वहाँ बरतंता॥

राधास्वामी! भारत वासियों! इस प्रकार की वाणियों ने मुझे जीवन में दीवाना बनाया हुआ था और अब भी किसी सीमा तक दीवानगी है।

मैं सन्त मत की असलियत को जानना चाहता था। यह वाणी आपने भी सुनी और मैंने भी सुनी। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्यों फ़कीर! क्या तू इस वाणी के साथ सहमत है? हाँ भी कहता हूँ और नहीं भी। हाँ इसलिए कहता हूँ कि मैंने वाणी के शब्दों के अर्थ को नहीं बल्कि मैंने अपने क्रियात्मिक जीवन से पाठ लिया है और नहीं इसलिए कहता हूँ कि वाणी लिखने वालों ने वाणी तो लिख दी मगर इसके सच्चे होने का प्रमाण नहीं दिया।

कातिक मास पाँचवाँ चला, सुरत शब्द गुरु चेला मिला।
तक काया कंवलन विधि भाखी, कंवल दुवादस काया राखी॥

यह स्वामी जी महाराज की वाणी है। वह कहते हैं कि सुरत शब्द गुरु मिला। संसार यह समझता है कि किसी को हजूर बाबा सावन सिंह जी मिल गये, सन्त कृपाल सिंह जी मिल गये, बाबा चरणसिंह जी मिल गये या बाबा फ़कीर मिल गया, तो उसको गुरु मिल गया। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। जब तक किसी को समझ, विवेक और ज्ञान नहीं मिलता। उनको गुरु नहीं मिलता। स्वामी जी महाराज इस काया में बारह कंवल बताते हैं। शायद कोई और सन्त (18) अठारह बतावे। किसी वस्तु को सिद्ध करने के लिए दर्जे या मंज़िलें रखी जाती हैं। जैसे डाक्टर लोग शरीर के भिन्न-भिन्न भाग बताते हैं अपनी-अपनी खोज अनुसार कोई डाक्टर अधिक बताता है और कोई कम बताता है। मानव जीवन और हस्ती को वर्णन करने के लिए स्वामी जी महाराज ने ये बारह कंवल वर्णन किये है। किसी सन्त ने कितने ही सुन्न वर्णन करके अपने विचारों को प्रकट किया है और किसी ने इनको कोष कहा है।

प्रथमें कंवल गनेश बिलासाः, कंवल दूसरे ब्रह्मा वासा।

अब हिन्दु यह कहेंगे कि गुदा में गनेश और इन्द्री मे ब्रह्म रहता है। लेकिन मैंने क्या समझा है? हमारे शरीर की जो शारीरिक शक्ति है वह गुदा के स्थान पर रहती है। यदि पाखाना (टट्टी) न आए तो आदमी बीमार हो जाता है। यदि दस्त लग जायें तो भी बीमार हो जाता है। तो जो शक्ति शरीर में काम करती है। उसके भिन्न-भिन्न नाम हैं। एक शक्ति गुदा के स्थान पर रहकर हमारे शरीर को ठीक रखती है। ऋषियों ने उसका नाम गनेश रख दिया। ऐसे ही इन्द्री के स्थान पर रहकर जो शक्ति काम करती है। उसका नाम ब्रह्मा रख दिया। ब्रह्मा संसार की रचना करता है। जो शक्ति पेट में या नाभि में रहकर हमारी पाचन शक्ति को ठीक रखती हैं। उसका नाम विष्णु रखा गया। शास्त्र कहते हैं कि विष्णु पालन पोषन करता है। यदि पाचन शक्ति ठीक नहीं है तो आदमी बीमार हो जाता है।

इसलिए कहा गया है कि विष्णु पालन-पोषण करता है। जो शक्ति शरीर में हृदय में रहती है उसका नाम शिव रखा गया है। यदि दिल ठीक काम करता है तो आदमी जीवित है अन्यथा मौत हो जाती है। इसलिए कहा जाता है कि शिव संघार करता है। लोग इन चक्रों को देखने के लिए आयु खो देते हैं। लेकिन मिलता कुछ नहीं। इन चक्रों में स्वामी जी का क्या भाव है? यह वही जानते होंगे। जिस पर विष्णु नाराज़ हो गये। वह नष्ट हो गया। क्यों? जिस की पाचनशक्ति बिगड़ गई वह बीमार हो गया। उसको चैन कहाँ ? उसका शरीर काम नहीं करता। यदि पाचनशक्ति ठीक है तो तुम भी ठीक हो अन्यथा तुम बीमार हो जाओगे। शरीर के छः चक्र कहलाते हैं। हमारी शारीरिक शक्ति हमारे शरीर में इन छः स्थानों पर रहकर विशेष काम करती है।

आतम कंवल पाँचवाँ होई छठा कंवल परमातम सोई।

पाँचवा कंवल आत्मा है। इत और मनन अर्थात् गति और सोचना। यह आत्मा का अर्थ है। हमारे अन्तर में हमारा मन है। मन महाचंचल है। जब तक कोई आदमी शरीर और मन का भूलेगा नहीं, वह आत्मा के दर्शन नहीं कर सकता। जब तक किसी को इन चक्रों का भान है। वह आत्मा चक्र में नहीं जा सकता। इनको भूलने के लिए ही सुमरिन और ध्यान दिया जाता है। सुमरिन और ध्यान से इन चक्रों को भूलकर आदमी सीधा ही आत्मपद में चला जाता है। जब आदमी शरीर को भूलकर Universe में चला जाता है और अन्तर में जब अधिक प्रकाश रूप हो जाता है तब वह परमात्म में चला जाता है। मैं चाहता हूँ कि ये सन्त महात्मा बतायें कि इनके साथ क्या बीती? ये अपनी रहनी बतायें मगर कोई बताता नहीं। शरीर में रहता हुआ कोई आदमी जब तक इन चक्रों की परवाह नहीं करता अर्थात् अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखता, वह सुखी नहीं रह सकता। इस वास्ते मैं अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखता हूँ और यह हर एक आदमी को रखना चाहिए।

कंवल सातवें काल बसेरा, जोत निरंजन का वहाँ डेरा।

हमारी जो शक्ति है उसमें गर्मी है और रोशनी है। यदि गर्मी नहीं होती तो मौत हो जाती है। यह शक्ति कहाँ से आती है? ज्योति स्वरूप से या प्रकाश से। यदि कोई आदमी आगे जाना चाहता है तो उसको इन चक्रों के साधन की आवश्यकता ही क्या है? वह सीधा ही आगे ज्योति स्वरूप में चला जाये। मगर स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए यह साधन आवश्यक है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चोला छोड़ने के एक साल बाद पण्डित बलीराम जी हकीम मेरे पास आये और मुझे स्वास्थ्य को ठीक रखने के विषय में लगभग एक घंटा भाषण दिया। यदि आपकी पाचनशक्ति ठीक है तो आप आसानी से 25 साल और जीवित रह

सकोगे। लेकिन अब तो 25 साल की बजाय चालीस साल हो गये। जो आगे जाना चाहते हैं उनको चाहिए कि वे अपने स्वरूप का ध्यान रखें और सीधे ही ज्योति को पकड़ें। यदि ज्योति नहीं पकड़ी जाती तो ज्योति को प्रकट करने के लिए सुमरिन और ध्यान है। गुरु का जो रूप तुम्हारे अन्तर में प्रकट होता है वह तुम्हारा अपना ही मन है, तुम्हारा ही विश्वास है और तुम्हारी ही श्रद्धा है लेकिन तुमको इसका पता नहीं है। इसी एक बात को परदे में रखकर इन धर्मों, पंथों और गुरुओं ने संसार को मूर्ख बनाकर लूटा है और अपना भारवाहक पशु बनाया है। अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए संसार को धोखा दिया है और असलियत किसी ने वर्णन नहीं की। यदि की भी तो सैन बैन में, जिसको कि संसार समझ न सका। क्योंकि मन चंचल है और ठहरता नहीं इसलिए ज्योति को जगाने के लिए सुमिरन और ध्यान दिया जाता है। ज्योति या सावित्री एक ही वस्तु है। उसको सनातन धर्म वाले सावित्री कहते हैं। यदि मैं गलत कहता हूँ तो सन्तमत वाले या राधास्वामी मत वाले या कोई और महात्मा मेरा खण्डन करें।

द्वापर युग के बाद अर्थात् श्रीकृष्ण जी के युग के बाद जब शरीर और मन की शक्ति में कमी आ गयी तब यह ध्यान का रिवाज़ आरम्भ हुआ। इससे पहले नहीं था। मैं क्यों ऐसा करता हूँ कि गुरु स्वरूप का अन्तर में पैदा होना तुम्हारे अपने ही विचार, विश्वास, श्रद्धा और प्रेम का परिणाम है। बाहर से कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता।

सुनो! हज़ारों आदमी प्रतिदिन देश और विदेश में मेरा ध्यान करते हैं। अपने ही विश्वास से अपना काम बना लेते हैं। लेकिन मुझे कोई पता तक भी नहीं होता। हर एक धर्म और पंथ वालों ने अपनी-अपनी बढ़ाई के लिए अपने इष्ट का लोगों को ध्यान बताया। रामा पंथी वालों ने राम

का ध्यान बताया, कृष्ण पंथी वालों ने कृष्ण का ध्यान बताया और गुरुमत वालों ने गुरु का ध्यान बताया। यह सब पंथों के झगड़े हैं। क्योंकि इस ज़माने में सर्वसाधारण की प्रकृति निर्बल है। इसलिए यह सुमिरन और ध्यान सिवाय विशेष-2 आदमियों के बाकी सब के लिए आवश्यक है। आजकल यदि एक गुरु चोला छोड़ जाता है तो उसके चेलों को लोग कहते हैं कि अब तुम किसी दूसरे गुरु का ध्यान करो। यह बिल्कुल ग़लत बात है। जिसका एक रूप का ध्यान बन जाये उसको बदलने की आवश्यकता नहीं। क्यों? न पहले गुरु ने कुछ दिया और न दूसरा गुरु कुछ देगा। जो कुछ लिया वह अपने ध्यान से लिया। हाँ! यदि मन को शान्ति नहीं मिली तो किसी पूर्ण गुरू के सत्संग में जाओ जो तुमको पूर्ण ज्ञान देकर शान्ति दे। इस बात के लिए दूसरे पूर्ण गुरु के पास जाना चाहिए न कि ध्यान को बदलने के लिए। इसलिए गुरु की महिमा है।

पूरा सतगुरु न मिला, सुनो अधूरी सीख।
स्वांग जाति का पहनकर, कर माँगी भीख॥

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। मगर मुझे किसी बात का दावा नहीं। हो सकता है कि मैंने जो समझा हो वह ग़लत हो।

कँवल आठवाँ त्रिकुटी माहीं, सूरज ब्रह्म बसे तेही ठाहीं।

जब एकाग्रता आ जाती है तो शरीर की सुध भूल जाती है और मन आगे जाने का यत्न करता है। उस समय उस ज्योति का रंग बदलकर लाल हो जाता है वह ध्येय ध्याता और ध्यान की अवस्था है। वहाँ मन एकाग्र हो जाता है और आदमी को समझ आ जाती है। एकाग्रता के बिना समझ नहीं आती। जिस प्रकार पहलवान कुश्ती लड़ते समय अपनी सारी शक्ति को एक स्थान पर ले आता है ऐसे ही ज्योति को प्रकट करने के लिए मन अपनी शक्ति को एक जगह इकट्ठी कर लेता है। शक्ति

के एक जगह इकट्ठा होने से ज्योति का रंग लाल हो जाता है। यदि आगे का गुरु नहीं मिला तो आदमी उस लाल रंग का ही साधन करता रहेगा और उसका मस्तिष्क खराब हो जायेगा।

आपने गामा पहलवान जो कि अपने समय का रुस्तम था को देखा होगा या सुना होगा जो सदा शारीरिक व्यायाम किया करता था और बहुत शक्तिशाली था। मगर अन्तिम आयु में उसका क्या परिणाम हुआ? चारपाई पर पड़ा रहता था और अपने शारीरिक अंग आदि हाथ-पाँव को स्वयं हिला नहीं सकता था। ऐसे ही जो त्रिकुटी के स्थान पर सदा लाल रंग क सूर्य का ही साधन करता रहेगा उसके भी मस्तिष्क के बिगड़ जाने की सम्भावना है। यह मेरा अनुभव है और इसकी पुष्टि प्रोफेसर एस-एन भारद्वाज जी ने की है। उन्होंने मुझे बताया कि उनका एक मित्र राय सालिग राम जी महाराज का चेला था। भारद्धाज हज़ूर महाराज जी ने उस चेले को एक पत्र में (जोकि महाराज जी ने भी पढ़ा है) लिखा था कि त्रिकुटी में लाल रंग के सूर्य का अधिक समय तक साधन नहीं करना चाहिएअ न्यथाम स्तिष्कि बगड़ज ायेगा।म ेरेअ सलीज ीवनम ेंभ ी इसका एक प्रमाण है, वह जबलपुर वाली स्त्री का है। जो त्रिकुटी में लाल रंग के सूर्य में मुझे देखा करती थी और उसके अपने ही बुरे विचारों के कारण नौ महीनों के अन्तर उसके तीनों बच्चे मर गये। लगभग दो साल का समय हो गया जबकि मैं दौरे पर था तो उस स्त्री का पति मुझे मिला। मैंने उसकी स्त्री की दशा पूछी तो उसने बताया कि वह पागल हो गयी है।

नवाँ कँवल है दसवें द्वारे, पार ब्रह्म जहँ बसे निरारे।

दसवाँ द्वारा क्या है? सन्तों ने बात को कठिन कर दिया। लोग कानों में उँगलियाँ डाल कर अभ्यास करते-करते और दसवें द्वार को तलाश

करते–करते मर गये। मैंने भी बारह–बारह घण्टे अभ्यास किया है। क्या समझ आयी कि जब मन को वृत्तियाँ तीन से कम हो कर एक रह जाती है तो वहाँ किसी प्रकार की फुरना नहीं होती। उस अवस्था का नाम दसवाँ द्वार है और उसी का नाम निर्विकल्प समाधि है। निर्विकल्प समाधि की अवस्था में मन न कोई संकल्प उठाता है और न कोई रूप रंग है।

महासुन्न में कंवल अचिता, कंवल दसम का वह बरतता।

जब मन संकल्प करना छोड़ जाता है तो वह कोई विचार भाव रंगरूप नहीं होता। क्योंकि वह कोई चिंतमन नहीं है। इसलिए उस अवस्था का नाम उन्होंने ''अचिंता'' रख दिया। कहते हैं कि वहाँ अन्धेरा होता है। अरे भोले–भाले लोगो! वहाँ यह बाहर का अन्धेरा नहीं होता। जब वहाँ कोई है ही नहीं और न कोई Function है तो अन्धेरा तो अपने आप ही हो गया। इनका नाम खुदमस्ती है या इसका नाम लय हो जाना है।

कँवल इकादस भँवर गुफा पर, द्वादश कँवल सत्त पद अंतर॥

ऐ वर्तमान सन्तों और सुरत शब्द योग के अभ्यासियो! मुझे किसी बात का दावा नहीं सच्चाई की खोज में सारा जीवन व्यतीत हो गया जो समझा वह कहता हूँ। भंवरगुफा क्या है? जैसे पानी में भँवर अर्थात् चक्र बन जाता है। एक ओर से पानी आता है और उसका चक्र बँध जाता है। पानी चक्र खोते–खोते कभी नीचे तह तक पहुँच जाता है और फिर ऊपर आ जाता है और जो वस्तु उसमें फँस जाती है वह उसमें से निकल नहीं सकती। ऐसे ही विचार का बाहर जाना और उसको घेरकर फिर वहाँ लाना, इसके बार–बार के अमल का नाम भँवरगुफा है। उस अवस्था से कोई पूर्ण गुरु निकालता है। महासुन्न में आदमी लय हो जाता है, जड़ हो जाता है। उस जड़ समाधि में से कोई पूर्ण गुरु ही निकालता है। यह सब

मन का खेल है। जब यह ज्ञान हो जाता है कि यह सब मन का खेल है तो फिर मन से जो फुरना निकलती है वह फिर उसको मोड़कर अपने विचार को वहाँ वापिस जाता है। इसका नाम भँवर या भँवरू गुफ़ा या सोहंग है और इसी का नाम वेदान्त है।

इससे आगे है सतपद। जब आदमी को असलियत के जानने की इच्छा होती है जब वह भँवरगुफा से आगे जाता है। जब यह ज्ञान हो जाये कि यह सब मेरे ही मन का खेल है तो फिर निचले दर्जे के साधन की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। शायद इसीलिए हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने श्री काशीनाथ मुखतार से कहा था कि आगे जाने वाले सन्त भँवरगुफा से ही साधन आरम्भ करेंगे और निचले साधन छोड़कर सीधे ही मन पर ठहरने का यत्न करेंगे। मुझे आप लोगों से ज्ञान हुआ। मगर जो आदमी ऊपर चढ़ जाता है वह शरीर की ओर से बेचिन्त हो जाता है ताकि आदमी की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ कायम रहें। यदि आदमी ऊपर ही चला जाये तो उसकी शारीरिक दशा ठीक नहीं रह सकती। इसलिए सुमरिन, ध्यान और भजन सब के लिए आवश्यक है। कई ऐसे भी फकीर होते हैं जो हर समय मन से ऊपर ही रहते हैं। उनकी शारीरिक दशा बिगड़ जाती है और उनके शरीर में कीड़े पड़ जाते हैं। लेकिन उनको उन कीड़ों की परवाह नहीं होती।

खट चक्कर यह पिंड सँवारा, तीन चक्र ब्रह्मांड अधारा।

छः चक्कर शरीर के हैं और छः चक्कर मन के हैं। इनसे आगे केवल प्रकाश और शब्द है और इसी का नाम सतपद है। ऐ मेरे मिलने वालो! मैं यह नहीं कहता कि मेरी बात को सच मानो। यदि दिल मानता है तो मानो अन्यथा मत मानो। मैं किसी का ठेकेदार नहीं हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि मेरा जीवन सच्चाई से व्यतीत हुआ है। सतपद से आगे तीन चक्कर हैं। जब मैं प्रकाश को देखता हूँ और शब्द को सुनता हूँ तो

जो वस्तु प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है मैं अपने अन्तर में उसकी तलाश करता हूँ। उस तलाश के अन्तर्गत जो अवस्थायें आती हैं। उनका नाम अलख, अगम और अनामी है। इसके बाद क्या होता है? न मैं न तू, न गुरु न चेला। वही अवस्था हो जाती है और परमतत्व है–

तीन कंवल जो ऊपर रहे, सन्त बिना कोई वरन न कहे।

जो उस अवस्था में जायेगा वही उसके बारे बता सकेगा दूसरा नहीं बता सकता।

षष्ट कँवल तक योगी आसन, नवें कंवल जोगेश्वर वासन।

ये कंवलों के नाम है। जब तक सतपद में या इन चक्करों में कोई वस्तु मौजूद है वह तो आवागवन में आती ही रहेगी। इसलिए योगीजन का आवागवन समाप्त नहीं होता।

पिंड ब्रह्मंड का इतना लेखा, जोगी ज्ञानी यहाँ तक देखा।

योगी और ज्ञानी का आवागवन समाप्त नहीं होता। यह और बात है कि उसको ऊपर के लोकों में जन्म मिले।

आगे का कोई भेद न जाने, तीन कँवल सो सन्त बखाने।
कोई छः तक कोई नौ तक भाखे सर्व मते इन भीतर थाके॥

यह मतमतान्तर इन कमलों से आगे नहीं गये। मैं राधास्वामी मत का पक्ष नहीं करता। यदि मुझे राधास्वामी मत में सच्चाई न मिलती तो मैं इसका खण्डन कर जाता क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा।

बड़ा सन्त मत सब से आगे, संत कृपा से कोई–कोई जागे।

यदि कोई आगे चला गया तो उसको क्या मिला, मुझे क्या मिला? मुझे यह विश्वास हो गया कि मैं कौन हूँ? मेरी हस्ती सतपद में थी। जब आगे जाता हूँ तो मेरी हस्ती अपने–आपको खो जाती है। बाकी क्या रह जाता है? क्या कहूँ क्या रह जाता है। मैं खोजी हूँ। मुझे यह समझ आयी

है कि वह एक तत्व है। उसी का यह सारा खेल है। केन्द्र बन जाते हैं। उनमें शूँ–शूँ होने लग जाती है। जब ज्ञान हो जाता है कि मैं कौन हूँ तो फिर यह समझ आ जाती है कि न मैं पहले था और न मैं बाद में रहूँगा। उसकी मौज से यह बुलबुला बना और उसकी मौज़ से टूट जायेगा या यह समझो कि हमारी अपनी हस्ती न पहले जुदा थी और न बाद में जुदा रहेगी। जीवन क्या है?

लब खुले और बन्द हुये, यह राजे जिन्दगानी है।

सारा जीवन सच्चाई से चला। नेकी की, परोपकार किया। साधन अभ्यास किया। मिला क्या? मेरा–तेरा अपना चला गया और दौड़–धूप समाप्त हो गयी। अब संसार में रहता हूँ। संसार का कारोबार करता हूँ। आप के साथ बातचीत करता हूँ। मगर जानता हूँ कि मैं एक बुलबुला हूँ। अब आवागवन का भ्रम समाप्त हो गया। ईश्वर पूजा और खुदा परस्ती भी समाप्त हो गयी। बस खामोशी है।

जो पहुँचे द्वादस अस्थाना, सोई कहिये सन्त सुजाना।

जो सतलोक में रहता है वह सन्त है और वह जीवन मुक्त अवस्था है। वह जीवन में खेलता है मगर फँसता नहीं और दुख-सुख को महसूस नहीं करता। जो इससे आगे चला जाता है वह परमसन्त हो जाता है और उसकी विदेह गति की अवस्था आ जाती है। जब यह महसूस करता कि मैं हूँ ही नहीं तो विदेह गति तो स्वयं ही हो गयी। यह परमसन्त की अवस्था है। उसका केन्द्र तो तब बनेगा जब वह कुछ बन के किसी स्थान पर ठहरेगा।

सन्तन का मत सबसे ऊँचा जो परखे साई धुर पहुँचा।

जो परखे का क्या अर्थ है? अर्थात् जो असलीयत को जानता है। वह वहाँ ठहरता है। मैंने असलीयत क्या समझी? कि यह जितने भाव विचार और रंग रूप जो मेरे अन्तर आते हैं ये असल में है नहीं। ये केवल

संस्कार हैं। मुझे आप लोगों से यह ज्ञान मिला। इसलिए मैं आप लोगों का मान करता हूँ और जो कुछ मुझसे हो सकता है वह आपकी सेवा करता हूँ।

पहुँचे की क्या करूँ बडाई, सब मत उसके नीचे आई।
जो मन में प्रतीत न देखो, तो कबीर गुरुवानी पेखे॥

जो वहाँ पहुँच जाता है वह भेद की समझ जाता है और विचारों को कल्पित समझता है। इस बार दिल्ली के दशहरा के सत्संग में भी मैंने यही कहा था कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। इसके प्रमाण में हजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द सुनो। मेरा सारा जीवन तलवार की धार पर बीता है। हो सकता है मेरा अनुभव गलत हो। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं। मैं हूँ खोजी। कौन हिन्दु या सनातनधर्म के मानने वाला सन्तों की इन वाणियों को सुन सकता है। जिसमें उसके पूर्वजों का खण्डन है।

मैंना मैंना रे मैं न, मैंना मैंना रे मैंना।
मैंना तन पिंजरे में रहकर, बोली बोले रे मैंना।

जब तक मैं है तब तक तू है, मोर तोर का झगड़ा।
'मैं' जब गया-गया तब तू भी, अब किसका है रगड़ा।

सतगुरु देनी सैना॥

सतगुरु सैन बैन करते हैं। मगर मैंने स्पष्ट वर्णन का डण्डा हाथ में ले लिया। जब तक मैं हूँ तब तक तू है। जब ज्ञान हो गया तो न मैं रहा और न तू रहा, सब समाप्त हो गये।

जो 'तू' कहता वह अन्धा है 'मैं' कहता दिवाना।
'मैं मैं' 'तू तू' को जो छोड़े, वही है चतुर सयाना॥
यह है सच्ची बैना॥

मुझे यह समझ आ गई कि वह एक शक्ति है। हम उससे बने और उसी में समा जायेंगे।

जब मैं है तब गुरु नहीं है, गुरु जब है मैं नाहीं।
प्रेम की गली तंग है भाई, दोनों कैसे समाही।
दोनों रहते हैं न॥

मोर तोर माया की रसरी, प्राणी फाँस फँसाने।
तोड़ के रसरी हो गये न्यारे, फिर नहीं वाहे भरमाने।
हो गये सच्चे मैंना॥

मुरीद को यह ज्ञान किसी पूर्णपुरुष से प्राप्त होता है। मुरीद का शाब्दिक अर्थ है मरा हुआ। कौन मरा ? जिसको यह ज्ञान हो गया कि मैं हूँ ही नहीं। जिसमें अहंकार नहीं है वह है मुरीद।

बकरी मैं कह गला कटावे, मैं मैं कर मायावे।
'मैंना' मैं ना वचन सुनावे, बेसन शक्कर खावे।
कैसी मिठी है 'मैं न'।

'मैं ना, मैं ना' मैंना बोले बोलकर रटन लगावे।
मैं को त्याग शान्त बन जावे, सुख आनन्द धुन गावे।
पावे ही नित ही चैना।

मैं तू भरम विकार है, मन का मन माया का साथी।
जो मैं कहेगा दुख से मरेगा, कुचले का अहं का हाथी।
'मैं' तू दोनों हैं ना।

सुरत की पंछी मैंना बनकर, मैंना मैंना कहती।
सुन वृक्ष के डाल पे बैठी, दुख सुख अब नहीं सहती।
दिन है जहाँ रैना।

मैं ना मैं ना तू न तू न यह सतगुरु की वाणी।
वानी सुन-सुन जो चित लावे, बने सहज निर्वाणी।
माया फिर कभी व्यापे ना।

राधास्वामी शब्द सुरत की धुन गा-गाके सुनावे।
जो गावे नित गा के सुनावे, भव पिंजरे नहीं आवे।
वह वन जावे मैं ना।

सन्तों की वाणी मेरे अनुभव की पुष्टि करती है–

सखिया वा घर सबसे न्यारा, जहँ पूरन पुरुष हमारा।
जहँ नहिं सुख दुख साच झूठ नहिं, पाप न पुन पसारा।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उजियारा।
नहिं तहँ ज्ञान ध्यान नहिं जपतप, वेद कितेव न वानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहाँ हिरानी।

जब तक हस्ती कायम है तब तक करनी और रहनी कायम रहेगी। जब Realisation हो गया तो फिर रहनी कैसी और करनी कैसी?

धर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मंड कछु नाहीं।
पाँच तत्व गुण तीन नहीं तहँ,साखी शब्द न ताहीं।
मूल न फूल बेलि नहीं बीजा, बिना वृच्छ फल सोहे।
ओअं सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहे।
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूलं।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के भूलं।

तुमने ही सब कुछ बनाया था। जब समझ आ गई तो सब कुछ समाप्त हो गया। आप मरे जग परलै।

जहाँ पुरुष तहवाँ कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना।
हमारी सैन लखे जो कोई, पावै पद निरवाना।

निर्वाण क्या है? फूँक मारकर उड़ा देना। जब ज्ञान हो गया और अनुभव हो गया तो यह सब कुछ उड़ गया। मानव की अपनी ही खोज का सारा परिणाम है। असलियत का किसी को कोई पता नहीं लगा। अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार सबने वर्णन कर दिया। सन्तों ने कह दिया कि वहाँ कुछ नहीं। लेकिन किसी ने कोई प्रमाण नहीं दिया। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। सात वर्ष की आयु से

चला था। अब 89 साल का हो गया। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना मैंने जो समझा वह कहा।

तुलसी साहिब का मत जोई, पलटू जगजीवन कहें सोई।
इन संतन का देउं प्रमाना, इन की बानी साख बरवाना।
जोग ज्ञान मत इनहूं भाखा, पुनि संतन मत ऊँचा राखा।

सन्तों ने हालात के अनुसार और समयानुसार लोगों को भक्तियोग और ज्ञान की ओर लगाया। मगर सन्तमत को इन सबसे न्यारा रखा।

जोगी और वेदान्ती भाई, संतन मत परतीत न लाई।

वेदान्ती योगी और ज्ञानी जो हैं। सन्तों ने इनको भूले हुये तो कह दिया और मैं भी समझता हूँ कि ये ठीक भूले हुये हैं। मगर सन्तों ने इसका प्रमाण नहीं दिया। मैंने प्रमाण दिया है।

वेद कतेव न पहुँचे तहं ही, थके बीच में रस्ते माहीं।
बार-बार कह कर समझाऊँ, संतन का मत ऊँचा गाऊँ।

सन्तों का मत ऊँचा क्यों है और इस मत से मुझे क्या मिला? मैं अपने शरीर मन रूह और सुरत का Egoism खो गया। अब मेरा यह अहंभाव कि मैं बाप हूँ, मैं बेटा हूँ, मैं चेला हूँ, मैं गुरु हूँ, मैं ब्रह्म हूँ, मैं संत अलख और अगम हूँ, यह सब समाप्त हो गया।

जो परतीत न लावे या की, जानो काल ग्रसी बुधि बाकी।

किसी बात का विश्वास कराना गुरु का कर्तव्य है। लेकिन विश्वास भी वह गुरु करा सकता है जो स्वयं आमल है और विश्वास भी वह करेगा जो सच्चाई का इच्छुक है।

वे कहा जानें मत संतन की, एक मिलावें कांच रतन की।

अहंभाव (Egoism) समाप्त हो जाने के बाद आदमी को शान्ति मिल जाती है। दुख-सुख तो आते हैं। मगर वह उनकी परवाह नहीं करता। इससे अधिक यदि सन्त कुछ और कर सकते हैं तो मुझे पता नहीं। सन्तों को भी बहुत कष्ट हुये। मगर सन्तमत शान्ति का मार्ग है। योग और ज्ञान से मन बलवान् हो जाता है इससे तुम्हारा संसार अच्छा

बन जायेगा। सन्तमत से यदि मुझे कुछ मिला तो शान्ति मिली और शान्ति ही लक्ष्य पद है।

उनसे यह मत खोल न कहिये, सैन जाय मौन गहि रहिये।
सन्त मता सब से बड़ा यह निश्चय कर जान।
सूफी और वेदान्ती दोनों नीचे मान।
संत दिवाली नित करें सन्तलोक के माहीं।
और मते सब काल के योहीं धूल उड़ाई॥

इन वाणियों ने मेरे मस्तिष्क को परेशान कर रखा था। मैं देखना चाहता था कि सन्तों के पास क्या हक है जो इन्होंने सबका खण्डन कर दिया अब मुझे असलियत की समझ आ गयी और अब मुझको शान्ति है।

मेरी समझ में यह आया है कि यह तलाश भी एक भ्रम है। मगर यह अपने बस में नहीं। मैं यह समझता हूँ कि यदि खोज को छोड़कर अपना जीवन खुशी, चिन्तारहित, परोपकार और किसी दुखिये को सहायता करने में बीते, जो वह अच्छा रहे। अब मैं किसी दुखिये की सहायता और किसी गरीब का भला करना चाहता हूँ।

सब को राधास्वामी।

सूचना

सभी दानी सज नों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab Natonal Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No.– 02060001000-57805, IFSC Code–PUNB0020600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code–PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवास ूचितक रद ें,त ाकिद ानियोंक ास ूचीम ेंउ नकान ाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

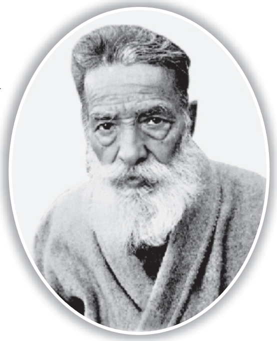

सत्संग
परमसन्त हजूर परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मंदिर, होशियारपुर।
दिनाँक 17 अगस्त, 1969 ई.

राधास्वामी!

ज़िन्दगी बनी दुनिया देखी, ख्याल पैदा हुआ कि इस दुनिया का बनाने वाला कौन है? इस खोज में रोया, तड़पा। एक ज़िन्दगी का दृश्य था जो मुझ को दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गया। मेरा विश्वास था, वहाँ से यह राधास्वामीमत या संतमत मुझ को मिला था। इस में हर मज़हब का खण्डन था और इसमें मालिक को मिलने का कोई और ही तरीका बताया हुआ था, जो मेरी समझ में नहीं आता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते चलूँगा, जो कुछ मुझे मिलेगा वो मैं बताऊँगा। मैं किसी पर अहसान नहीं करता, यह मौज़ है। आज शब्द पढ़ा गया–

अब मन आतुर पुकारे।
कल नहीं पकड़े धीर ना धारे।

दम-दम छिन-छिन दरद दिवानी।
सोऊँ न जागूँ अन्न न पानी।
व्याकुल तड़पुँ पिया तुम कारण।
डस डस खावत चिन्ता नागन।

यह हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब का शब्द है। वह पाँच-छः साल रोते रहे। हकीकत की तलाश के लिये, सूख कर काँटे हो गये थे। फिर इन को चाचा प्रताप सिंह मिले, उन्होंने कहा मेरा भाई अभ्यास करता है, इनके पास चले जाओ। यहाँ से उन को जो कुछ मिला वो तो हजूर महाराज को पता होगा कि क्या मिला, मैं नहीं जानता। मैंने प्रण किया था कि मैं अनुभव कह जाऊँगा मैं नक्काल नहीं हूँ। मुझे क्या पता हजूर महाराज को क्या मिला। बाबा सावन सिंह जी को क्या मिला या दाता दयाल को क्या मिला, मैं क्या जानूँ? मैं यह क्यों कहता हूँ? जो कुछ मुझ को अनुभव ने बताया वो इन सन्तों ने ब्यान नहीं किया शायद परदा रखा हो क्योंकि इन सन्तों की वाणियाँ मेरे अनुभव से मेल नहीं खाती इस लिए मैं नहीं कह सकता कि इन सन्तों को क्या मिला, मैं ऐसा कहने का अधिकार रखता हूँ।

मैंने इन रास्ते में सफर किया है। चेला बन के देखा और गुरु बन के देखा। जैसे यह ऊपर प्रार्थना है, मैं भी ऐसे प्रार्थना किया करता था। अब कई दूसरे आदमी है जो मुझे गुरु मान के, स्वामी जी मान के मेरे सामने प्रार्थना करते हैं तो जो कुछ उन के साथ बीती वो उस बात से बिल्कुल अलग है जो कि वर्तमान राधास्वामीमत वाले या दूसरे सन्तों के अनुयाई कहते हैं, इसलिए मैं कहता हूँ कि मुझे नहीं मालूम दाता दयाल को क्या मिला, स्वामी जी को क्या मिला? जो कुछ मुझे मिला वो बताता हूँ।

इन्सान का मन किसी चीज़ की तलाश करता है। ज़िन्दगी कुछ चाहती है और ढूँढती है किसी चीज़ को और वो तलाश उसके अन्तर क्यों पैदा होती है? यह एक सवाल मेरे अन्तर में आता है, यह इस वास्ते पैदा होता है कि शारीरिक जीवन अर्थात् इन्सान के अन्तर जो शारीरिक

प्रकृति है जब यह कमज़ोर हो जाती है, उस समय शरीर में बेचैनी पैदा होती है, तुम देखो! जिस बच्चे की सेहत ठीक है, वो किसी सूरत में भी ज्यादा रोयेगा नहीं, खुश रहेगा। जिस की मन की आशायें कम हैं जिस की दुनिया की जरूरतें पूरी हैं वो भी कम हाय-हाय करेगा, जिस को किसी बात का पता नहीं है स्वाभाविक उसके अन्तर उस बात के जानने की कोशिश रहेगी तो तीन चीज़ें हैं जो हमारी ज़िन्दगी को अशान्त करती हैं, एक शरीर की कमज़ोरी, बीमारी, हमारी आशाओं का पूरा न होना और हमारा अज्ञान। इन तीन चीजों के कारण हम इस संसार में अशान्त होते हैं। किसी महापुरुष ने अपने जीवन का कच्चा-चिट्ठा पब्लिक के सामने पेश नहीं किया। हजूर महाराज के बचपन की क्या ज़िन्दगी थी, इसको मैं नहीं जानता, हजूर साँवले शाह के बचपन की ज़िन्दगी में जो उन के मन के अन्तर विचार पैदा होते थे मुझे क्या पता।

मेरी ज़िन्दगी में जो कुछ ख्यालात पैदा होते थे वो मैं जानता हूँ। छोटी आयु में शादी होने की वजह से मेरे मन के अन्तर अशान्ति पैदा हुई थी, अब समझ आती है। उस समय नहीं पता लगता था। मैंने ज़िन्दगी का तजुर्बा किया है। यही बात एक बार हजूर साँवले शाह ने कही थी, ''सारी दुनिया'' पत्रिका में कहीं छपी हुई है, अगर मुझको मालूम हो कि मेरा दूसरा जन्म होगा तो मैं दूसरे जन्म में बाल ब्रह्मचारी रहूँगा। यह बाबा सावन सिंह जी के अपनी जुबान के वचन है। किसी महात्मा ने अपने मन की कमज़ोरियों को बताया? Indirect Way से सब बता गये। यह जितनी वाणी है जहाँ मन के विकारों का ज़िकर है वहाँ ब्यान किया हुआ है मगर यह नहीं किसी ने कहा कि मेरे साथ यह बीती। मैंने प्रण किया था अपने जीवन का अनुभव कह जाऊँगा, क्या अनुभव कहना चाहता हूँ कि इन्सान की अशान्ति का मुख्य कारण उसके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है तुम लाख नाम जपो, रोते रहो, पीटते रहो,ग ुरुके द रबारम ेंज ाकर,ज बत क त ुमअ पनेम ानसिकअ ौर शारीरिक ब्रह्मचर्य को कायम नहीं रखोगे। अपनी सेहत का ख्याल नहीं रखोगे, तुमको शान्ति नहीं मिलेगी।

मैं एक बार हजूर साँवले शाह के समय व्यास गया था। 1941 की बात है, मैं भी सत्संग में हाज़िर था। जब मैं सत्संग से वापिस आया। मैंने एक लेख लिखा कि उस समय जितने सत्संगी बैठे हुए थे। इनमें से किसी को Diabetes है, किसी का जरयान है, किसी को अनीमिया है और किसी को कुछ है यह नाम जपते हैं, काश! यह नाम की बजाय अपने का, अपने ख्यालात का और अपने Character विचारों का ध्यान रखते। ऐसे मैंने चार सफे भरे। ''सारी दुनिया'' वाले का बुलाया मेरी जेब में साठ रुपये थे, दस मैंने अपने किराये के लिए रख लिये और पचास रुपये उसके आगे रख दिये, कि यह लेख छाप दो। उस ने लेख पढ़ा, वो कहता है मैं नहीं छाप सकता। मेरी रोटी है यहाँ। मैंने अपने आप को संत सतगुरु वक्त कहा है संसार में। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, वो देता हूँ। ऐ इन्सान! तेरी ज़िन्दगी की अशान्ति का मुख्य कारण तेरे मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है।

मेरा एक मित्र है यहाँ बैठा हुआ है, उसने मेरे दाता दयाल जी से नाम लिया हुआ है। किसी देश में रहता था। वहाँ जाकर एक साधु के काबू आ गया। उसने कहा मैं तेरी सुरत चढ़ाऊँगा। दस हजार रुपया दे के वहाँ लुट गया। दाता दयाल का चोला छूट गया। फिर किसी वक्त मेरे पास आया अपनी बात कही, मैंने कहा तेरी समाधि कैसे लगेगी। तू तो कामी रहा है बोल! उसने माना। यह मेरे तजुर्बे हैं। यह मैं संत सतगुरु वक्त के रूप में संसार को बताना चाहता हूँ कि लाख तुम प्रार्थना करो, लाख तुम सिर पटक के मर जाओ जब तक इस कूँजी को तुम नहीं पकड़ोगे तुम को शान्ति या मालिक का घर नहीं मिल सकता। मेरा अपना जीवन मेरे सामने है। मेरा तजुर्बा है, जाती अनुभव, मैं कही सुनी बातों को नहीं देखता, न सुनता हूँ। यही बात राय साहिब राय सालिग राम साहिब की जातपाक ने एक किताब लिखी है। जिसमें लिखा है कि लोग नाम ले लेते हैं, जो अनुपान नाम के साथ बताया जाता है उस अनुपान को नहीं

करते। उसका नतीजा इनको नाम का फल नहीं मिलता। यह मेरा सन्देश है। उस मालिक को मिलने वालों को या शान्ति की इच्छा करने वालों को कहे जाता हूँ।

अशान्ति का पहला कारण यह है कि हमारी सेहत खराब होती है। इसके खराब होने का कारण हमारी जीभ का स्वाद है। ज्यादातर कुछ हमारा विषय-विकार का जीवन है। जो आदमी अभ्यास करते हैं, नाम जपते हैं अगर वो जीभ पर कन्ट्रोल नहीं रखेंगे। नाम भी जपेंगे और विषय विकार में भी रहेंगे, उनको नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती।

मेरा अपना जीवन है, बसरे बगदाद में बारह साल रहा। मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य ठीक था। दाता ने कहा अब सन्तान पैदा करो फ़कीर। अभ्यास छोड़ दो। मैं घर में आया, मगर सन्तान के विचार से स्त्री के पास जाता तो मुझे कोई कष्ट न होता। मैं तो अपने स्वाद के लिए स्त्री के पास जाता रहा। नतीजा यह हुआ मेरी सेहत गिर गई मजबूरन अनाज को छोड़ना पड़ा। मैंने पैंतीस साल अनाज नहीं खाया, गंदम नहीं खाई, चावल नहीं खाये, दालें नहीं खाई, केवल सब्जी ही खाता था। जब मैं कहीं जाता, लोग कहते महात्मा जी बड़े त्यागी हैं। मैं उनको हँसा करता था। त्यागी नहीं हूँ मैं। यह मेरे बुरे कर्मों का फल है। तुम सोचो! मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा, संसार के प्राणियों के हित के लिए मैं वचन कह रहा हूँ कि एक तो हमारी अशान्ति का यह कारण है। तुम बेशक किसी गुरु के पास से नाम ले लो। जब तक अपनी जुबान के चसके को, अपने विषय विकार के जीवन को नहीं छोड़ते तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। मेरा मतलब यह नहीं कि स्त्रियों को त्याग दो। स्त्री साथी है तुम्हारी, जीवन की साथी है। मगर तुम लोगों ने जीवन के साथी का अर्थ यह समझा हुआ है कि काम को भोगने के लिए ही जीवन का साथी है। सोच लो।

तो ऊपर के शब्द में पुकार की गई है गुरु से। गुरु इस पुकार का उत्तर क्या देता है जीव को? शान्ति को प्राप्त करने के लिए गुर बताता है।

अरे मन रसिया काया के वसिया।

ऐसे-ऐसे शब्द हैं यह तो कह देते हैं कि माँस, शराब न खाया करो। जो असली चीज़ कहने वाली है वो तो कहता कोई नहीं। भई, जीभ का स्वाद न लिया करो। माँस अपने-आप छूट गया, शराब भी छूट गई, बस!!

दूसरी अशान्ति है हमारे मन की तरंगें और आशायें, उसके लिये क्या ज्ञान है? मौज़ पर रहना, जिनको नाम दिया जाता है उनके लिये पहली शर्त यह है जो राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी में लिखी है कि ज़र, ज़न और ज़मीन को मौज़ के हवाले छोड़ के आ। क्यों कहा स्वामी जी ने यह? क्योंकि स्वामी जी जानते थे कि स्वामी जी ने किसी को ज़र नहीं देना, ज़मीन नहीं देनी। अगर स्वामी जी ज़र, ज़मीन दे सकते होते तो यह शर्त न रखते। आँख खोलो, मैं क्या कह रहा हूँ। क्यों? क्योंकि जो कुछ तुम को इस दुनिया में मिलना है वो तुम्हारे प्रारब्ध कर्मों का फल है। जो कर्म यहाँ करोगे उनके अनुसार तुम्हारी ज़र, ज़न और ज़मीन का सम्बन्ध होता है। समझ रहे हो मेरी बात को, सत्संग में आते हो।

कान खोल कर सत्संग सुना करो वरना मत आया करो। क्यों अपना कीमती समय जाया करते हो? जो कुछ किसी को मिलना है, मिलेगा या मिला वो उसके अपने ही कर्मों का फल है। कोई महात्मा, कोई गुरु तुम्हारे प्रारब्ध कर्मों को नहीं काट सकता, हज़ूर बाबा सावन सिंह जी की टाँग टूट गई। उनके गुरु थे बाबा जैमल सिंह, क्या वह टाँग टूटने से बचा सके? राय सालिग राम साहिब का लड़का मर गया। सत्संग में आये, स्वामी जी ज़रा उदास थे। वे पूछते हैं महाराज, उदास क्यों है? उन्होंने कहा भाई, तेरा लड़का मर गया है। हज़ूर महाराज बोले मुझे कोई अफसोस नहीं। स्वामी जी ने कहा अच्छा हमें भी कोई उदासी नहीं। अब स्वामी जी ने हज़ूर महाराज के लड़के को क्यों न बचाया? क्या कह रहा हूँ? संसार वालो आँखें खोलो। इस वास्ते सन्तोष रखो, हाय-हाय करने से कर्म नहीं टलता।

आज प्रात: मेरे पास एक आदमी आया। उस की औरत का दिमाग़ ठीक नहीं, क्योंकि उसके बच्चा भी कोई न था। घर में कलह रहती थी वोक ईस ालोंस `द ुखीथ ी ाज बम ैंफ रीदकोटस टेशनम ास्टरथ ा। चारपाई पर प्रात: बाहर लेटा हुआ था, तभी वो आदमी मेरे पास आया, कहने लगा, यहाँ कोई राधास्वामी का सत्संग होता है। मैंने कहा और तो कोई नहीं मैं ही हूँ, वो सत्संग में आता रहा, आज शब्द था-

मत देख पराये अवगुण।
मक्खी सम मत करे भिन भिन॥

इस शब्द पर मैंने अपना भाषण दिया, वो आदमी मेरे पाँव पड़ा। बाबा जी! आप ने बचा लिया। मैं अपनी औरत से दुखी होकर खुदकुशी करने के लिए घर से निकला था। हम जब दूसरों के ऐब देखते हैं, हम अपने कर्मों को बढ़ाते हैं। क्योंकि जब किसी की बुराई करते हैं, किसी में ऐब देखते हैं, किसी के साथ ठगी करते हैं हम अपने कर्मों को बढ़ाते हैं। वो कहता था मैं भृगु संहिता में गया, वो कहता है तुम पिछले जन्म में यह थे किसी औरत के साथ मिलकर उस के पति को मरवा दिया था। उस के फल से यह सज़ा मिली है। हिन्दू फिलोसफी ग़लत नहीं है। इसलिए ऐ संसार वालो! मैंने अपने जीवन में गृहस्थ में भी और इस गुरु पदवी पर भी आकर बात को परदे में नहीं रखा जिस बात को पिछले सन्तों ने परदे में रखा, मैं डर गया। लोग कहते हैं मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट होता है, दवाईयाँ बताता है। सूरतें बढ़ाता है और मैं नहीं होता। अगर मैं यह नहीं कहता पब्लिक को, चुप कर जाता हूँ, उनके सामने लाऊड स्पीकर रख देता हूँ, सुनो भाई! यह क्या कहता है? Indirect Way से अपने मान के लिये, तो मैं इस कुकर्म से कैसे बच सकता हूँ? सोचो मैं क्या कह रहा हूँ? हम एक दूसरे की बुराई करते हैं, निर्दोष को दोष लगाते हैं, अपने स्वार्थ के लिए तो अवगुण ही देखते हैं ना! इसलिए स्वामी जी जहाँ नाम देते हैं वहाँ जीवों को कहा गया है-

मत देख पराये अवगुण, क्यों पाप बढ़ावे दिन दिन।
पर जीव सतावे खिन खिन, छोड़ अपने औगन गिन गिन॥

जब यह कहते हैं कि अपने अवगुण छोड़ दे तो मैं भी सोचता हूँ फ़कीर चन्द! तू जब नुक्ताचीनी करता है मौजूदा ग़लत गुरुइज़्म पर तो क्या तू यह अवगुन नहीं करता है? यह मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ, इस वाणी को सुन कर। जब मैं ऐसा कहता हूँ तो मेरा भाव यह है कि क्योंकि मैं संत सतगुरु हूँ, सच्चा ज्ञान देता हूँ कि जीवों का सुधार हो जाये, इन महात्माओं का सुधार हो जावे, सुधार करने के ख्याल से मैं कहता हूँ वरना जो होता है होता रहे, मुझे क्या? अगर मेरा यह तरीका भी ग़लत है तो दूसरों की ग़लतियों के बताने के दोष से तो कबीर साहिब और स्वामी जी भी बरी नहीं। क्योंकि उन्होंने सब का खण्डन किया है। दोष तो उन्होंने भी देखा मगर चूँकि उन्होंने जो खण्डन किया है वो जीवों के हित के लिए है। इन महापुरुषों व साधुओं के हित के लिये कहता हूँ, इसलिए अपने-आप को दोषी नहीं गिनता।

मक्खी सम मत कर भिन भिन।
नहीं खावे चोट तू छिन छिन।
देखा कर सब के तू गुन।
सुख मिले बहुत तोहि पुन पुन।
मैं कहूँ तोहि अब गुन गुन।
तू मान वचन मेरा सुन सुन।
गति गाई मैं यह हसंन।
यों वर्षा सुनाई संतन।
अब कान धरो इन वचनन।
नहीं रोवोगे सिर धुन धुन।

तो जहाँ गुरु नाम देता है वहाँ जीव की अनुपान बताता है, तो पहला अनुपान तो मैंने बोल दिया पेट को काबू रखो इस में विष्णु महाराज रहते

हैं तुम्हारी जठराग्नि है। अगर तुम्हारा हाज़मा ठीक है तो तुम्हारी ज़िन्दगी अच्छी रहेगी, तुम्हें शान्ति मिलती रहेगी। दूसरे, विषय विकार का जीवन कम करो, मेरा भाव बिल्कुल यह न समझना कि औरतों को त्याग दो।

जब मैं आटा चक्की पर काम करता था तो मेरे पास एक रेलवे का रिटायर्ड अफसर ट्रंक और बिस्तरा ले के आया "मैं आप के पास रहूँगा। क्यों भाई?" मेरे पास जगह नहीं थी। उसने पूछा कि राधास्वामी मत क्या है? मैंने कहा यह पूछ कि औरत से और बच्चों से तुम को छुटकारा कैसे होगा? यह न पूछ कि राधास्वामी मत क्या है? अब वो मेरी तरफ देखकर हैरान हो गया, आप को कैसे पता लगा? मैंने कहा मैं जानता हूँ। फिर मैं गया व्यास हजूर साँवले शाह के पास, वो आदमी नीचे से गुज़र रहा था, उस समय मैंने हजूर साँवले शाह से कहा महाराज, यह आदमी मेरे पास आया था और कहता था, राधास्वामीमत क्या है? मैंने कहा तू यह पूछ कि तू औरत और बच्चों से कैसे छुटकारा पा सकता है? फिर मैंने कहा कि अगर हजूर यह तालीम दे चूँकि औरतों और बच्चों से जो तकलीफ़ हम को होती है, कुछ तो हमारे प्रारब्ध कर्म है, कुछ हमारा ज्यादा विषय विकार का जीवन होने से हमारा Balance of Brain ठीक नहीं रहता। वे कहने लगे फ़कीर चन्द! बात तुमने सोलह आने ठीक कही मगर जीव ऐसे मूर्ख हैं कि अगर मैं यह कह दूँ तो इनके घरों में दोनों में झगड़ा हो जायेगा। अगर औरत ब्रह्मचर्य रखना चाहेगी तो मर्द उसको तंग करेगा अगर मर्द रखना चाहेगा तो औरत उस को तंग करेगी, बात उन्होंने सोलह आने ठीक कही।

अब मैं यह कहता हूँ कुछ तो हमारे प्रारब्ध कर्म हैं मगर कोशिश यह करो कि जहाँ तक हो सके हम ख्याल होने की कोशिश करो। ज़िन्दगी विषय विकार के लिए नहीं है। मैं सत्संग करा रहा हूँ, सत्संग से मिलता क्या है?

बिन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

ज़िन्दगी के लिए जीने का राज़ मिलता है। तुम बेशक पचास-पचास वर्ष के सत्संगी हो, सब को शिकायत है, क्या शिकायत है? कि जो अनुपान तुम को बताया गया है नाम दान के साथ उस को तुम ने ग्रहन नहीं किया, इस शब्द में सबसे बड़ी चीज़ क्या है? कि दूसरों के अवगुण मत देखो। अपने आप से काम रखो तब तुम्हारा साधन अभ्यास भी बनेगा और मन को शान्ति भी हो जायेगी। पिछले कर्म के अनुसार तुम को दुनिया में मिलता है। दाता दयाल थे, मेरी नुक्ता निगाह से वो परम तत्व मालिक के अवतार थे, ठीक है। उनको जब पिछली उमर में राहु आ गया तो उनके एक चेले थे ज्योतिषी। उन्होंने कहा महाराज! राहु आ गया। अब आप का काम-काज सब फेल हो जायेगा। हालात ऐसे बने कि वो धाम छोड़कर आप जुदा हो गये, धाम की ईंट से ईंट बज गई और यह सब कुछ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में खुद अपनी आँखों से देखा, समझते हो। गुरुओं के पास जाते हो यह उम्मीद करो किसी गुरु ने तुम्हारी दुनिया की ज़िन्दगी को बदल देना है। जो तुमने प्रारब्ध कर्म किये हुए हैं वो टल नहीं सकते। सत्संग से यह हो सकता है कि चूँकि तुमको ज्ञान हो जायेगा समझ आ जायेगी। तुम वो जो दुख-सुख तुम्हारे सिर पर आते हैं उस के प्रभाव को कबूल नहीं करोगे। यह है गुर। तुम्हारे अपने मनोबल, अपने ही विश्वास का फल है। जो कुछ तुमको मिलना है, तुम्हें अपने ख्याल अपने विश्वास का फल मिलता है।

जो महात्मा ऐसे अज्ञानी जीवों से, जो यह समझते हैं कि बाबा फ़कीर मेरे अन्तर आता है, मेरी मदद करता है, वह मुझ को पैसा देते हैं अगर मैं उस पैसे को आप खा जाऊँ तो मेरा पार उतारा नहीं हो सकता। क्योंकि वो अन्न जो है उसमें धोखा है। यहाँ एक आदमी बैठा हुआ है, ताँगा चलाया करता है। यह और एक जाट मुझ को अपने घर ले गये। सत्संग कराया। हम छः सात आदमी थे, इस के घर का खाया, इसका कोई ज़मीन का झगड़ा था। चूँकि यह मुझ पर विश्वास करता था। उसके

विश्वास की वजह से उसकी मदद होती रही यहाँ तक कि वो कहता था कि जब फैसला हुआ तो थानेदार जिसने उसके विरुद्ध मुकद्दमा चलाया था उस में भी मुझ को ही देखता था। उस थानेदार ने इसी के ही हक में ही गवाही दे दी और यह मुकद्दमा जीत गया। इस विश्वास में यह लोग मुझे ले गये। इस बात का मुझे वहाँ जा के पता लगा। वहाँ उन्होंने भाखड़ा भी दिखाया। दो-दो रूपया वहाँ से हर एक आदमी के लगते थे, वो भी उन्होंने दिये।

शाम को मकान पर लेटा हुआ था जब अभ्यास करने लगता, दिमाग के सामने खबर नहीं क्या कुछ आता। समझ नहीं आती थी दस बज गये। गोपाल दास सोया हुआ था, बोला हुक्का डाल दूँ? मैंने कहा भई, यह हालत हो रही है। सोचा क्यों? अच्छा भई, मैं गया था वहाँ, उनके यहाँ खाना खाकर आया हूँ, दस रुपये मेरे हिसाब में से लेकर के मन्दिर में रसीद काट दे। जब मैंने ऐसा कहा, मैं सो गया और वो ख्यालात चले गये। यह है परदा रखने का फल। इस वास्ते मैं परदा नहीं रखता। इस साफ ब्यानी का नतीजा क्या है? यही ना! कि मुझे कोई पैसा नहीं देता, मन्दिरों में हज़ारों रुपये देते हैं। बिल्डिंग बना जाते हैं। दूसरी जगह रुपयों की बोरियाँ भरी जाती हैं। हरिद्वार में क्या हो रहा है? हमारी अशान्ति का कारण यह है कि दूसरे का अन्न अनुचित ढंग से खाते हैं। अब मैं साफ ब्यानी कर देता हूँ। जो ज्ञानी पुरुष हैं मेरे मिलने वाले, यह मेरी सेवा भी कर देते हैं, मन्दिर में भी देते हैं तो क्या मुझे पाप लगता है? मुझे कोई दुख है, कोई धोखा है, कोई फरेब है!!!

हमारे मन की अशान्ति का क्या कारण है? क्या चाहते हैं? अशान्ति, उसका तो अपना कोई रूप नहीं है, न रूप है, न रंग है, न रेखा है, वो तो अलख, अपार, अगाध और अनामी है, वो तो अकाल पुरुष है, उसका तजुर्बा कैसे हुआ? आप लोगों से हुआ। जो कुछ भी तुम मानते हो, वो तो तुम्हारा माना हुआ रूप है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, लोग अपने भाव से मुझे बना लेते हैं अगर वो रूप जो उन के अन्दर प्रकट हुआ,

उसको मालिक माने, क्या वो मालिक है? वो तो तुम्हारा अपना बनाया हुआ है। मालिक तो आधार है, कूटस्थ है। दाता ने मुझ पर दया कर दी, उस घर को जाना चाहता था जो इस राधास्वामी मत में लिखा है। उस घर को देने और मेरे अज्ञान को मिटाने के लिए यह गुरुवाई मुझको दी थी। इस गुरु पदवी पर आने से मेरा अज्ञान मिट गया, कि वो मालिक कहाँ है।

अब मुझ को मालूम हो गया कि मालिक मेरी ज़ात है। मैं उस में ऐसे रहता हूँ जैसे मछली पानी में रहती है। वो तत्व है, वो आधार है, सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व वही है। मैं या मेरी सुरत, तुम्हारी सुरत मछली की सूरत में, जिस तरह मछली पानी में तैरती रहती है इसी तरह हमारी सुरत उस ज़ात के गति में आने से जो शब्द प्रकट हुआ, उस की जो चेतनता थी उस का नाम है सुरत। मैं इस में फँसा हुआ था, पता नहीं लगता था, तीन तापों का मारा हुआ था। मुझको सुपथ पर लाने के लिए दाता दयाल जी ने बड़े कष्ट उठाये हैं। जब कभी उनके खेलों की जो उन्होंने मेरे साथ खेले, याद आती है तो दिल प्रेम, एहसान के जज्बे में भर जाता है। अज्ञानी जीव फ़कीर चन्द के साथ अज्ञानी बनकर उन्होंने यह सब खेल खेला, मेरे अज्ञान को मिटाने के लिए और वो मिट गया। मेरा अज्ञान कि मालिक कहाँ है? क्या है? कैसा है? मुझे समझ आई केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता।

किसी महात्मा ने आज दिन तक इस वर्णन शैली से सत्संग कराया है? किसी ने नहीं कराया, समय बदल गया, स्थिति बदल गई। मेरे दाता दयाल ने सन् 1933 में जब सुनाम में सतसंग कराया था कहा था फकीर! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना, ताकि संसार पथ भ्रष्ट न हो जाये, मजहब व मिल्लत का असली रूप न जानने से इस प्रकार का प्रोपोगंडा करने से कि तुम्हारे अन्तर रामप्रकट होता है, तुम्हारे अन्तर फ़कीर चन्द प्रकट होता है, फलां महात्मा प्रकट होता है या हनुमान

प्रकट होता है। संसार को इस अज्ञान में रख कर, इस अज्ञान की वजह से इन्सानी नस्ल बँट चुकी है। कोई हिन्दु, कोई सनातनी, कोई सिक्ख, कोई मुसलमान, कोई और कुछ। सन्तों का मार्ग इस संसार में सतज्ञान सच्ची एकता, सच्चा प्रेम और सच्चा जीवन गुज़ारने के लिए, कलयुग में प्रकट हुआ है। हमारी अशान्ति के क्या क्या कारण हैं? मैंने आपको वह बताया है। मन का कारण तो मैं ने तुम को बता दिया कि यह मन अज्ञान में आ कर विषय भोगों में जाकर इस अपने कल्पित संसार को सत मानता हुआ दुखी रहता है। इस का इलाज है सत्संग, ताकि सत्संग से तुम को सच्ची समझ आ जाये–

पानी बिच मीन प्यासी, मोहे सुनि सुनि आवत हांसी।
आत्मज्ञान बिना सब झूठा, क्या मथुरा क्या काशी।
घर में वस्तु धरी नहीं सूझै बाहर खोजन जासी।

मेरे साथ यही कुछ बीता ना। मैं तो मालिक को ढूँढने के लिए सारी उमर इसी धुन में रहा ना। दाता को बाहर समझता था, उन से प्रेम करता था। सन्तरे ले जाता, प्रेम से चार–चार दरजन उन के मुँह में डाल देता। तुम को बताता हूँ कि गुरु किस तरह उद्धार करते हैं।

मैं चार दर्जन संतरे ले के चला गया, प्रेमी या अज्ञानी था, गोद में बैठ गया। चार दर्जन संतरे उनके मुँह में ठोसता गया वे कहने लगे खुश हो? मैंने कहाँ हाँ खुश हूँ। मैं एक तरफ हुआ बाहर निकले। उन्होंने गले में ऊँगली डाली निकाल दिया। मैं आप को अपने अज्ञान की बातें बताता हूँ। बसरे में आया दो पैकट अच्छी खजूरों के ले आया प्रेम से गोद में बैठ गया, वो सारी खजूरे शाम को खिला दीं। सुबह जब उठा, जहाँ भी मैं और मैनेजर देखते, हर जगह चौका दिया हुआ था। जिस तरह बच्चे टट्टी फिर देते हैं तो औरतें साफ करती हैं और चौका डाल देती हैं जगह–जगह चौके दिये हुए थे। गौरी शंकर ने पूछा, महाराज! क्या हुआ? रात को फ़कीर आया, मुझे अमृत खिलाया और मेरा जितना गंद था सब

निकल गया। आह दाता। वो मुझ से नाराज़ नहीं हुये कि तू ने क्या किया फ़कीरचन्द! मैं तुम को बताता हूँ कि गुरु कौन है, किस तरह जीवों की संभाल करता है, अज्ञानी जीवों के साथ कैसे खेलता है, ज्ञान देने के लिए।

एक अयोध्या प्रसाद सत्संगी होता था। वो रात को जब सोता खर्राटे मारा करता था कि दूसरे आदमी रात को सो नहीं सकते थे। वो गया दाता दयाल जी के पास हैदराबाद, वहाँ नन्दूसिंह था। दाता ने कहा हमारे पास सो जाया करो। अब वह उनके पास सोता नहीं था, कहता था मैं रात को खर्राटे मारूँगा तो आप Disturb होंगे। जब वह न आया, तो नन्दूसिंह से पूछते हैं कि भई! अयोध्या प्रसाद कहाँ गया? वह कहता है महाराज, मैं रात को खर्राटे मारता हूँ आपको तकलीफ होगी, तो कहते हैं बुलाओ उस को यह खर्राटे नहीं हैं, मेरे वास्ते लोरियाँ है-लोरियाँ! आह! तुम को मैं गुरु रूप बता रहा हूँ, गुरु क्या करता है जीवों के साथ, सात दिन रहा, उनके पास ज़मीन पर सोता था, रात को खर्राटे मारता था। गुरु बनना, नाम देना आसान है जीवों की ज़िन्दगी की सम्भाल करके उनको राज बता देना, उन को शन्ति देना कुछ और बात है। मैं क्या बता रहा हूँ आपको, सोचो! हमारी अशान्ति का कारण क्या है, अज्ञान–

मृग के नाभी महिं कस्तूरी वन वन खोजत वासी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सहज मिले अविनासी॥

अविनाशी कब मिलेगा? अगर कोई गुरु मिलेगा, मुझे एक ऐसा महापुरुष, परम तत्व आधार मालिके कुल के अवतार दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज मिले थे, जिन्होंने मेरा अज्ञान दूर कर दिया। चूँकि मेरे जिम्मे ड्यूटी लगाई गई थी कि निर्बल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना, जगत कल्याण के लिए काम करना, जीवों को भवसागर से पार करने की तरकीब बताना। इसलिए गुरु ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए, मैंने अपनी ज़िन्दगी में जितना काम किया है और साथ ही

ख्याल रखा है कि मेरी आत्मा पर भी कोई बोझ न आये, चार सौ बीसी व धोखा देही का भी दोष न आये और मैं अपनी डयूटी भी पूरी कर जाऊँ। इसलिए मैंने बड़ी सच्चाई से काम किया, देखो! मुझे समझ नहीं आता था, मैं गुरु को बाहर समझता था कि गुरु लाहौर रहता है या सतगुरु धाम में रहता है, वो कहा करते थे–

गुरु तो तेरे पास फकीरा गुरु तो तेरे पास।

मुझे इसकी समझ नहीं आती थी। मैं इतना विषय-विकारों में फँसा था छोटी उमर की शादी की वजह से चंचल था कि मुझे होश नहीं आती थी कि बात क्या है? मेरे अज्ञान को मिटाने के लिए उन्होंने क्या-क्या मुसीबतें सही, अब मैं समझता हूँ कि उन्होंने मुसीबतें सही हैं–

गुरु हैं तेरे पास फकीरा, गुरु हैं तेरे पास।
त्याग भरम विचार मन का, छोड़ जग की आस।
आस कर गुरु चरन की, सब से होय निरास।
तेरे मन में तेरे तन में, तेरे साँसो साँस।
गुरु बसें दिन-रात प्यारे, धर चरन विश्वास।
गुरु नहीं तीर्थ बरत में,गुरु न योग अभ्यास।
ढूँढ अपने हृदय में नित, वहाँ उनका वास।
करम में माया है व्यापी, धरम यम की फाँस।
मन में अनबन देखी मन में, भरम था सन्यास।
तेरी चिन्ता गुरु को होगी, क्यों है तुझको त्रास।
राधास्वामी चरन, अज्ञान का कर नास।

मैं तो अपने हृदय में उनका रूप बना-बना उस रूप को गुरु मान के पूजा करता था। चूँकि मुझे अपने गुरु के रूप की समझ नहीं आती थी। उन्होंने यह गुरु पदवी दी थी और कहा था कि फकीरचंद! तुझ को सच्चे सतगुरु राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। अब

कमालपुर वाली माई या कृषक या दूसरे आदमियों के अन्तर जब मेरा रूप प्रकट हुआ और मैं नहीं था तो मैं असली गुरु को ढूँढने के लिए मज़बूर हुआ। चूँकि मुझे पता लग गया कि मैं तो उन के अन्तर गया नहीं। फिर वो गुरु कौन है जिस को इन्सान बना-बना कर पूजता है जहाँ तक मानसिक दुनिया का ख्याल है, ऐ भोले-इन्सान! वो रूप जिस को तू गुरु मानता है, तेरे अन्तर में प्रकट होता है, वो तेरा अपना ही मन है।

मैं ऊँचा बोलता हूँ, तुम बात को नहीं समझते। अब मुझ में सतगुरु के रूप में, हेरफेर कर के झूठे दिलासे देने की ताकत नहीं रही। सतगुरु कहते हैं:- सच्चे ज्ञान को, जब मैं सतज्ञान का अवतार हूँ तो मैं हेरे-फेर करूँ या झूठी बात तुम को कैसे कहूँ। सच्ची बात यह है कि तुम मेरे सत्संग के बराबर नहीं हो। इस को मैं जानता हूँ, अगर तुम को यह ऊँची बात न बताऊँ तो तुम लुट जाओगे। मैं निर्बल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता के लिए आया हूँ। तुम्हारे अन्तर अगर आज मेरा रूप प्रकट हो गया और तुमने यह समझा कि बाबा फकीर हमारे अन्तर प्रकट हुआ। जो होशियारपुर में बैठा हुआ है। आ के मेरी सेवा करोगे कि नहीं करोगे? मेरी मुठ्ठियाँ भरोगे कि नहीं भरोगे? मुझे पैसे दोगे कि नहीं दोगे? कर्ज़ा उठा के भी दोगे कि नहीं दोगे? अज्ञान के बस में। मैं इस संसार को लूट से बचाने के लिए आया हूँ। मुझे अगर कोई इच्छा होती रुपये की, मान की, दौलत की तो मैं इस बात को परदे में रखता और आज यहाँ एक बड़ा आश्रम बना हुआ होता, हज़ारों रुपये का मैं मालिक होता और लाखों मेरे चेले होते। मैंने यह काम नहीं किया। दाता दयाल जी महाराज जो संसार में सत ज्ञान देने के लिए आये थे, वो क्या कहते हैं, सुनो-

यह मन समझन जोग, साधु यह मन समझन जोग ॥ टेक ॥
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है मन ही मोक्ष और भोग।
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग।
मन ही अन्तर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग।

मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग।
मन ही गुरु है मन चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्यौहार जगत में, नाहीं जानें लोग।

मुझे यह समझ नहीं आती थी कि दाता कहते हैं फ़कीर, तेरे अन्तर ही सतगुरु है। यह समझ नहीं आती थी मेरी खोपड़ी में और यह समझाने के लिए ही यह मुझे काम दिया था। मैं परम दयाल हूँ। आज दिन तक जितने महापुरुष हुये, यह सब दयाल थे। जिस ने सेवा की, नाक रगड़े, उस को भेद बताया बाकी चलते रहे। उन्होंने इस राज़ को सेवा लेने के बाद दिया, मैं इस राज़ को बिन सेवा किये मुफ्त बाँटता हूँ मगर उस की कद्र करता कोई नहीं। मुफ्त चीज़ की कोई कद्र नहीं करता। हम ने ज़िन्दगी बरबाद करने के बाद इस ज्ञान को प्राप्त किया है तब हम इस की कदर करते हैं। मुफ्त की कोई Value नहीं करता। इस वास्ते आज दिन तक जितना संत मत हुआ है, महापुरुष हुए हैं उन्होंने परदा दारी से काम लिया।

अब मेरे जिम्मे यह चूँकि ड्यूटी लगाई जगत कल्याण की, अब मैं मजबूर हूँ, अपनी डयूटी को पूरा करने के लिए। इस को खोल जाने के लिए, क्यों? ताकि इस समय इस मन के चक्कर की वजह से जो इन्सानी नस्ल भिन्न-भिन्न मतों में फिरकों और गद्दियों में बँटी हुई है और हमारे अन्तर में झगड़े हैं, द्वेष है, नफरत है, हम आपस में इकट्ठे बैठ नहीं सकते क्योंकि एक मुसलमान है, एक हिन्दु है, एक सावन आश्रम का सत्संगी है और एक व्यास का सत्संगी है। अब वो इकट्ठे नहीं होते, चूँकि मेरे जिम्मे यह डयूटी थी, इसलिए मैंने गुरु ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए, अपनी डयूटी को पूरा करने के लिए, इस राज़ को खुले शब्दों में खोल दिया। इस से हानि भी है, किन को? जो बेचारे अभी मन के चक्कर में आये हुये हैं जो काल और माया में है, जिन के मन महाचंचल हैं। यह

शब्द दाता दयाल ने उस समय लिखा था मुझे, जब मैं उन से प्रेम करता था और बसरे–बगदाद में था। आज शब्द था–

अनुआ आतुर पुकार कल नहीं पकड़े धीर न धारे।

इस का जवाब क्या देते है स्वामी जी–

धीरज धरो करो विश्वास, अब करूँ पूर्ण तुम्हारी आसा।

गुरु आसा कैसे पूरी करता है? गुरु अपने वचन कहता है। जो आदमी सत्संग में जाकर वचन को नहीं सुनता और गुनता नहीं, वह इस रास्ते में सफल नहीं हो सकता। दुनिया ने यह समझा हुआ है कि बस गुरु महाराज आये, फूलों का हार, दो रुपये और प्रसाद ला कर भेंट कर दिया। बस तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। अगर इस से बेड़ा पार होता तो लाखों और हज़ारों आदमियों का बेड़ा पार हो जाता। यह स्थूल प्रसादी जो है, यह केवल इन्सान के दिल की चाह की प्रतीक (चिन्ह) है। जितना जिस में ज़बरदस्त जज्बा असलियत के जानने का होगा उतना ही उस जबरदस्त जज्बे से वो सेवा करेगा, समझ गये मेरे भाव को। जितना ही जबरदस्त जज्बा किसी को अपनी शान्ति को प्राप्त करने का होगा वो उसे जज्बे के हिसाब से सेवा करेगा। जिसके पास धन नहीं होता वो दिल से सेवा करता है। जो कुछ उसके पास होता है वो उसके त्याग करने के लिए पेश कर देता है गुरु के आगे, मालिक के आगे।

संत जज्बे को देखते हैं। यह जज्बा है। मैं इस जज्बे को लेकर 1905 में गया था दाता के चरणों में, मैं जानता हूँ इस जज्बे को। जब कोई मेरे पास आता है मैं उसके जज्बे को देखता हूँ। अगर मैं देखता हूँ कि उस के अन्तर इस चीज़ को हासिल करने की जबरदस्त चाह है क्योंकि मुझे यह विश्वास है कि जो कुछ इन को मिलेगा वो उस के जज्बे के अनुसार मिलेगा तो मैं झट कह देता हूँ कि जा तेरा काम हो जायेगा, उसका काम हो जाता है और वो Credit मुझे देता है।

मैं गुर बता रहा हूँ, क्यों बता रहा हूँ? मेरी समझ में यह आया है कि इस समय संसार में जहाँ यह राजनीतिक दल की चार सौ बीसी है। जहाँ हमारे घरों की लूट है, वहाँ सन्तों और महात्माओं और मज़हबों की लूट है। हर जगह लूट है, अब मैं यह जानता हूँ तो यह भाषण देता हूँ। तुझे कौन देगा फकीरचन्द, नहीं देता तो न सही। जिस ताकत ने मुझ को इस तालीम को फैलाने के लिए भेजा है, वो ताकत मरी हुई नहीं है वो ज़िन्दा है। मेरा काम निष्काम है, निष्कपट है, निःस्वार्थ है। सच्चे दिल से मानव जाति का हितैषी बन के आवाज़ दिये जा रहा हूँ कि ऐ इन्सान! अगर तू शान्ति चाहता है, उस मालिक को चाहता है तो जो कुछ मैंने कहा है उसे मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहने की कोशिश करो। मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करो। शुद्ध कमाई खाओ। प्रेम में अगर कोई तुम्हें देता है तो कोई बात नहीं। मगर हेराफेरी कर के चार सौ बीसी कर के किसी से अपना मतलब सिद्ध करते हो, यह तुम को खा जायेगा।

मेरा घर पंझाल में है जब मैं बग़दाद से वापस आया तो मेरा एक भतीजा था मुन्शीराम, उसकी ज़मीन में दो मकान बने हुए थे। एक मेरे बाप ने मेरे और मेरे भाई के लिए बनाया और एक राम नारायण हवलदार ने अपने लिए बनवाया। मैंने पिता जी से पूछा कि यह जगह तो हमारी नहीं, हम को कैसे मिल गई? उन्होंने बड़े गर्व से कहा यह मुन्शीराम बदचलन, आवारा हो गया था खर्च बहुत करता था। हम उसे उधार देते रहे, दस माँगे तो पन्द्रह ले जा भाई। उस ने बीस माँगे, उन्होंने पच्चीस दिये। जब रुपया उस पर ज्यादा हो गया तो कहा अब ज़मीन बेच कर दे। हम ने इस होशियारी से यह ज़मीन ली है। मेरे मुँह से निकला कि हम इस मकान में नहीं रहेंगे। आज दिन तक वह मकान खाली पड़ा है। भाई पता नहीं कहाँ चला गया, मैं कहा हूँ?

मैं दुनिया को नाम की बजाय आचरण की ओर अधिक ध्यान दिलाता हूँ और इस तरफ लाता हूँ। नाम के अधिकारी, जो भगवान् को मिलना चाहते हैं, वो तो बहुत थोड़े आदमी हैं। हम लोग हेराफेरी करते हैं। इसका नतीजा हम भुगतते हैं। स्वामी जी की वाणी है–

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ेगा।

यह मेरी ज़िन्दगी के अपने अनुभव हैं तो इस लिए चूँकि मेरे जिम्मे डयूटी थी, कहना मेरा कर्त्तव्य है राज़ को मैं खोल चला, असलीयत बता चला, किसी की इच्छा है कि इस पर अमल करे या ना करे–

गुरु बेचारा क्या करे, जो हृदय भया कठोर।
नौ नेज़े पानी चढ़ा, तो भी ना डूबो कोर॥

तुम को जो शान्ति नहीं मिलती, इसके कारण मैंने बता दिये। अपने शरीर की सेहत का ख्याल रखो। यह मेरा मतलब नहीं कि तुम औरतों को छोड़ दो, नहीं। अपने–आप को कंट्रोल (Control) में रखो, एक खास बात कहे जाता हूँ, जो मेरे तजुर्बे में आई है। नौजवान बच्चों के लिए कि अपने चाल–चलन का ख्याल रखो। मानसिक व्यभिचार से बचने की कोशिश करो। यह जितने ज्यादा आदमी Devotional हैं जो अधिक अशान्त हैं। ज्यादा राम को मिलना चाहते हैं मेरे जैसे, यह वो आदमी हैं जिनके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरे हुए हैं इन में से एक मैं था और कहने में मुझे कोई शर्म नहीं आती। तुम बच्चों के चालचलन का ख्याल रखो। मगर रखोगे कैसे? जैसे तुम हो वैसी तुमने सन्तान पैदा कर दी। जो ख्यालात माँ–बाप के होते हैं वो बच्चों पर जाते हैं। मैं उदाहरण दिया करता हूँ कि अभिमन्यु माँ के पेट में रहता हुआ अर्जुन के चक्करव्यू बेधने का ज़िक्र सुन कर संस्कार ले सकता है तो बच्चा जब हमारी माताओं, बहनों के पेट में है और वो भोग करते हैं, कामातुर होते हैं तो क्या उस बच्चे में काम नहीं जायेगा? ज़रूर जायेगा, वो समय से पहले कामी हो जायेगा, उसके बस की बात ही नहीं है। बच्चे का क्या कसूर ? जिस प्रकार के जज्बात माँ के होते हैं, वो बच्चे पर जाते हैं और बच्चे वैसे ही बनेंगे। मैं जालंधर गया, वहाँ एक गार्ड है। उस के बच्चे आपस में लड़ते रहते हैं, शिकायतें लाते हैं। फलां ने मुझे मारा, दूसरे लड़के ने मेरे साथ यह सलूक किया। जब वो गार्ड डयूटी से आया, बच्चों ने शिकायत करनी शुरू कर दी। इस बार मैं गया, मास्टर मोहन लाल मेरे साथ थे। वो कहता है पण्डित जी! आप के सत्संग सुने मैंने,

हम चार भाई हैं किसी के सन्तान नहीं सिवाय मेरे। मेरे भी दो बच्चे मर गये थे पहले। मैं सोचा करता था मेरे बच्चे हो जाये और जब मैं आऊँ तो कोई इधर से शिकायत करे, कोई उधर से शिकायत करे। इसमें खुशी लेता था, वो कहता था जैसे मैंने सोचा वैसा हो गया। समझ गये मेरी बात को कि मैं ने क्या कहा।

दूसरी मिसाल मैं अमृतसर गया। वहाँ बिशनदास प्रेम है, उनके यहाँ एक लड़का है अमरजीत यह उस समय पैदा हुआ था जब पाकिस्तान की लड़ाई थी। वे कहते हैं जब यह बच्चा डेढ़ साल का हुआ यह कुछ नहीं कहता था सिवाय इसके तोप लाओ, बन्दूक लाओ, मैं दुश्मन को मारूँगा। डेढ़ साल का बच्चा बोलने लगा तो वो ऐसी बातें करता था। वो क्यों करता था? क्योंकि उस समय लड़ाई लगी हुई थी, वह माँ के पेट में था, उस औरत के दिल में यह ख्याल आता था, नहीं समझ में आती है? मैंने क्या कहा तुम लोगों को। इसलिए मैं, रूहानियत तो एक तरफ रही तुम को जीने का राज़ बताता हूँ, "How to live in the World" यह आस करते हैं इस वक्त कि मानव जाति सुधर जाये। कभी नहीं सुधर सकती, "There can be no Peace" अमन आ ही नहीं सकता। जितनी यह संसार में मानव जाति इस वक्त पैदा की हुई है, क्या सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा किया गया है? यह खुदरौ औलाद है जज्बाती औलाद है तो फिर अगर हर देश में अशान्ति है तो कोई क्या करे। क्या किसी ने कोई फूँक मार देनी है? लाख किसी महात्मा को बुला लो कोई मदद कर जाये। तुम्हारी कौन मदद कर सकता है? ऐ इन्सान! तेरी मदद तू आप कर सकता है। गुरु ज्ञान है, संगत में बैठ कर जीने का राज सीखो "How to live in this world"? कैसे तुम दुनिया में जीओ?

यह एक दिन का काम नहीं है। हर आदमी की प्रकृति जुदा–जुदा है, इसलिए यह गुरुमत है। अपनी–अपनी तकलीफों को अपने गुरुओं को बताओ। अब तो मैं एक हूँ, किस–किस को सुनूँगा। लोग जान खाते हैं, मगर मैं गुर बता चला, जिस से कि इन्सानी नस्ल अगर चाहे तो इस राधास्वामीमत या कबीरमत या संतमत जो असली मज़हब है। असली

मज़हब क्या है? अपने संकल्प को ठीक रखो। **शिव संकल्पं अस्तु**, यही एक उपाय है अगर इससे पार जाना चाहते हो तो अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो, क्यों? जब तुम मरने लगोगे, अगर तुम्हारे सामने कोई रूप न आया, कोई शक्ल न आई केवल प्रकाश आया और शब्द आया तो तुम फिर मुड़ कर इस चोले में न आओगे। जब तक किसी को अन्त समय में शब्द और प्रकाश नहीं होता उसका आवागमन कभी भी छूट नहीं सकता। हिन्दु शास्त्रों के मुताबिक और राधास्वामीमत के मुताबिक।

आजकल एक और ख्याल दिया गया है जीवों को, नाम ले लो और तुम को अन्त समय सतगुरु संत लोक ले जायेगा। इन गुरुओं ने यह प्रोपेगन्डा कर के महाअनर्थ किया है, जीवों के रास्ते में रूकावट डाली है, क्यों? राधास्वामीमत के चलाने वाले हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब साफ लिख गये प्रेम बानी में कि अन्त समय में जिस से तुम्हारा सम्बन्ध होता है, वो फिल्म चलती है। अगर ख्यालात गंदे हैं तो शेर, बिच्छु आ जायेंगे। अगर ख्याल अच्छे हैं तो अच्छे आदमी आ जायेंगे, जिस से नाम लिया हुआ है वो गुरु भी आ जायेगा, वो तुम को नाम भी सुना देगा। कुछ देर तक ऊपर के लोकों में रहोगे, वहाँ सत्संग गुरु का मिलता रहेगा। जब फिर कोई सतगुरु संसार में आयेगा तुम को फिर योनी मिलेगी और तुम उसके सम्पर्क में आओगे। फिर उससे बाकी ज्ञान हासिल करके तुम अपने जन्म-मरण से रहित होकर प्रकाश और शब्द में लय हो जाओगे।

मैं कैसे मान लूँ, गुरु आकर सतलोक को ले जायेगा। हजूर महाराज की किताब में जब यह लिखा हुआ है, जिन्होंने राधास्वामी नाम को प्रकट किया। तो मैंने इस डर के मारे कि भाई! तू दाढ़ी बढ़ा कर अपने आप को सतगुरु कहता है, अगर अन्त समय में कोई भाव तेरा खराब हो तुम को शब्द न आये, प्रकाश न आये, किसी सपने में चला जाये तो फिर तुमको योनी मिलेगी या नहीं मिलेगी? मिलेगी। मैंने इस हेराफेरी से

अपने-आप को बचाने की कोशिश की। अगर योनी मिलेगी तो कम से कम जो कुछ मैंने यहाँ किया हुआ है, उसी का फल मुझे मिलेगा। इस वास्ते मैंने गुरु पदवी पर आकर इस राज़ को खोल दिया किसी पर एहसान नहीं किया। अपनी आत्मा को साफ रखने के लिए मैंने इस सच्चाई का भाषण दिया। इस संसार को व अपने जैसे दीवानों को सच्चा ज्ञान देने के लिए कि तुम लुट रहे हो।

ऐ इन्सान! मालिक यहाँ नहीं रहता है वो अकह, अपार, अगाध, अनामी है। जब तुम सब चीज़ों को छोड़ आओगे तो अनामपद में चले जाओगे जो तुम्हारा रूप है। जब तक इस संसार में हो। ईश्वर की पूजा क्या है? मैं कहा करता हूँ कि अगर सूर्य यहाँ आ जाये तो तुम आग हो जाओ और अगर मालिक यहाँ आ जाये तो यहाँ तो सिवाय प्रकाश के कुछ भी न रहेगा। हम सब खत्म हो जायेंगे, इस दुनिया में ईश्वर पूजा क्या है? वो उस मालिक की किरण हर एक इन्सान में आई हुई है। इन्सान-इन्सान की सेवा करे। मगर तुम लोग सब इन्सानों की सेवा अकेले कर सकते हो? जिन को कुदरत ने तुम्हारे साथ लगाया है, जो तुम्हारे बूढ़े माँ-बाप हैं, भाई हैं, रिश्तेदार हैं जो तुम पर निर्भर हैं उनकी सेवा सब से पहले करो। यह है मेरा पैग़ाम, सन्तमत गुरु की हैसियत से दिये जाता हूँ जीवों के कल्याण के लिए।

सब को राधास्वामी!

शोक-समाचार

श्री घनश्याम दास अदलखा जी की धर्मपत्नी **श्रीमती प्रकाश कुमारी जी** का देहान्त, शनिवार दिनांक 14-06-2014 को हृदयगति रुकने से हो गया है। ये दोनों पति-पत्नी परमसन्त पंडित फ़कीर चन्द जी से सन् 1956-58 से जुड़े रहे तथा मानवता मन्दिर होशियारपुर में इनका सहयोग सराहनीय रहा। मालिकेकुल से प्रार्थना है कि इस पवित्र आत्मा को निज धाम में वास दें।

सत्संग

परमसन्त पूर्णाधनी मालिकेकुल हजूर मानव दयाल जी महाराज

उज्ज़ैन 5-2-91 (सायंकाल)

सत्संग की महिमा

चल गुरु के सत्संग री, मेरी सुरत सहेली।
सतसंगत अमृत जल बरसे, सत्संग निर्मल गंग री।
सतसंग प्रेम सिन्धु है सजनीं उमड़े प्रीत तरंग री।
बास सुबास मिले सत संगत, पावे रंग सुरंग री।
सतसंग का ध्यान रहे नित, कीट सहज हो भंग री।
राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत,काल करम कर भंग री।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥

राधास्वामी!

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप, सद्गुरुरूप परमप्रिय सत्संगी भाइयो और बहनो! जब भी मैं यहाँ आता हूँ और आप लोगों के बीच अपने कुछ अनुभव बाँटने की कोशिश करता हूँ तो मुझे यह पता नहीं

चलता कि क्या कहा जा रहा है। सत्संग एक धारा है। यह धारा सत् से आती है और उस धारा में न ही केवल सुनने वाले सत्संगी बहते हैं बल्कि उस धारा की जो नहर है, वह टूट जाती है और केवल लहर रह जाती है। नहर है धारा। जैसे मेरे प्यारे भट्ट जी ने आपको बताया कि कबीर साहिब ने राधास्वामी की गुप्त शब्दों में व्याख्या करते हुए कहा–

कबीर धारा अगम की, सतगुरु दई बहाय।
ताहि उलट सुमिरन करो, स्वामी संग मिलाय॥

वह सद्गुरु जो इस जगत् से परे है, जो हमारा लक्ष्य है, इष्ट है, वह ऊपर बैठा हुआ हमारे काम का नहीं है, हालाँकि हमें जाना उसी के पास है। जब तक वह स्वयं लहर में आकर के नहर नहीं बनता, तब तक वह खेतों को पानी नहीं दे सकता। इसलिए परमतत्त्व आधार स्वयं नहर बनकर के आता है।'कबीर धारा अगम की'। अगम पर पहुँचा नहीं जा सकता। अगम की धारा इतनी विशाल है कि उसको समझा नहीं जा सकता।

तेरी लीला कौन समझे, तू तो अपरम्पार है।
एक दृष्टि से तेरे, दुःखियों का बेड़ा पार है॥

उस मालिक की लीला अथवा धारा इतनी अपार है कि व्यक्ति चकित रह जाता है, हैरान हो जाता है। आप इस पृथ्वी पर हैं आपकी अर्थात् इन्सान की हस्ती क्या है? सारे सौरमण्डल में यह पृथ्वी एक छोटा-सा टुकड़ा है। हाँ सौरमण्डल के अन्दर तो इसकी हस्ती है। सौरमण्डल क्या है? सौरमण्डल में पृथ्वी, चन्द्रमा, बुध आदि सब सूर्य कीप रिक्रमाक रर हेहैं क योंकिस ूर्यस ेह ीश क्तिि मलतीहै ।स ूर्य परमतत्त्व का अंश है। मगर सूर्य का मण्डल आकाशगंगा में कोई हस्ती नहीं रखता। आकाशगंगा में इस सूर्य से भी बड़े-बड़े सूर्य हैं और अरबों सूर्यमण्डल परिक्रमा कर रहे हैं, आकाशगंगा के केन्द्र की। हमारा सौरमण्डल परिक्रमा कर रहा है– पर मेष्ठी की। वेदों में, ब्राह्मण ग्रन्थों

में परमेष्टी कहा गया है। ब्राह्मण ग्रन्थ जगत् की व्याख्या करते हैं। वेदों में दो विद्याएँ हैं– (1) ब्रह्मविद्या, (2) ब्राह्मण विद्या। एक है मन्त्र विद्या और दूसरी है यज्ञविद्या। यह सारा जगत यज्ञ है। इस यज्ञ का सम्बन्ध परमतत्त्व के एक मन्त्र से होता है। मन्त्र हमें आत्मा के ज्ञान की तरफ ले जाता है। आत्मा के ज्ञान से अभिप्राय है– अपनी जात का ज्ञान, अपनी विशुद्ध आत्मा का ज्ञान, जिस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद कुछ जानने की जरूरत नहीं रहती। सन्तमत और सनातन धर्म की यदि कोई पहिली और अन्तिम किताब है तो वह है भगवद्गीता। भगवद्गीता भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं गाई। स्वामी जी महाराज ने क्या कहा?

राधास्वामी गायकर जनम सुफल कर ले।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले॥

गाने का मतलब है अपने जीवन में उतार लेना। राधास्वामी क्या है? राधास्वामी एक अवस्था है। हम स्वयं पहिले मालिक से अलग होकर धारा बने। स्वामी से या मालिक से अलग होने के बाद हमें विरह हुआ, तड़प हुई। तब हम अपने स्वामी से मिलने के लिए धारा से राधा बने। तब राधास्वामी की अवस्था को प्राप्त करके अपने स्वामी से मिल गये। यह अवस्था हमें सद्गुरु की दया, मेहर और प्रेम के कारण मिली।

गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर नहीं पावई, जहाँ कोई विश्राम॥

आप राधास्वामी को किसी व्यक्ति से सम्बन्धित मत करो। राधास्वामी असली नाम है। यह नाम आदिकाल से चला आ रहा है। गोपालसहस्रनाम में भी यह नाम आता है तो राधास्वामी क्या है?

गुप्त रूप जहाँ धारिय

जब कोई सृष्टि नहीं थी, न सत् था न असत् था, उस समय कोई रचना नहीं थी। कोई देवी-देवता या ब्रह्म की शक्तियाँ नहीं थी। केवल

एक तत्त्व था। उपनिषदों के अनुसार उस परात्पर ब्रह्म में एक हिलोर आई या मौज़ आई। उसने अपने आप से कहा–

एकोऽहं बहु स्याम् अर्थात् मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ। इसी सत्य को स्वामी जी महाराज ने गुप्त शब्द एवं सृष्टि से पहिले परात्पर ब्रह्म की तरफ इशारा किया है और कहा है कि वह गुप्त शब्द प्रकट हुआ, जिसमें से राधा और स्वामी अर्थात् सुरत और शब्द दो धाराएँ बह निकलीं। इसलिए उस प्रकट शब्द को जो गुप्त अवस्था में अनाम था, राधास्वामी नाम में प्रकट कर दिया गया। जब प्रेम से प्रेरित होकर राधा धारा बन जाती है और मालिक की दया से शब्द में विलीन होकर परमतत्त्व में विलीन हो जाती है तो वह अपनी निज अवस्था में पहुँच जाती है। स्वामी जी महाराज ने कहा, 'जब मैं वहाँ जाता हूँ, जहाँ से मैं आया हूँ तो क्या हालत होती है?

नहिं ख़ालिक मख़लूक न ख़िलकत।
कर्ता कारण काज न दिक्कत॥
राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं था सो॥

कुछ नहीं का मतलब है कि हम अपनी बुद्धि के मुताबिक अपने संस्कारों के मुताबिक जो हम समझते हैं, मालिक वह नहीं है। मीरा ने भगवान् कृष्ण को अपना इष्ट माना। **मन्ने की गति कही न जाये।** सद्गुरु से चाहे किसी भी रूप का प्रेम करो, लेकिन प्रेम करो। उसे पिता मानो, भाई मानो, दोस्त मानो, पुत्र मानो। सद्गुरु से आप कोई भी रिश्ता जोड़ लो। मीरा ने इष्ट को आध्यात्मिक पति मान लिया था और उससे इतना अगाध प्रेम किया कि जब मीरा बच्ची थी तो भगवान् श्रीकृष्ण बच्चा बनकर उसके साथ खेला करते थे। जब मीरा बड़ी हुई तो उसका विवाह, मेवाड़ के महाराणा से कर दिया गया। मगर उसका संकल्प दृढ़ था। उसने महाराणा को बता दिया कि उसका विवाह भगवान् श्रीकृष्ण

के साथ हो चुका है। मीरा श्रीकृष्ण से कमरे के अन्दर बात करती रहती थी, जिसे महाराणा सुनता रहता था। जब अन्दर जाता तो मीरा के अतिरिक्त वहाँ और कोई नहीं होता था। कुछ समय के बाद महाराणा की मृत्यु हो गई। बाद में मीरा को गुरु रैदास से ज्ञान प्राप्त हुआ। तब मीरा को पता चला कि भगवान् श्रीकृष्ण अविनाशी दूल्हा हैं। एक पद्य में मीरा ने लिखा है–

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।
ज़हर का प्याला राणा ने भेजा,
पीवत मीरा हाँसी रे॥

अन्त में मीरा कहाँ पहुँची ?

मीरा कहे प्रभु कबहू मिलोगे।
अजर अमर अविनाशी रे॥

गुरु रैदास जी के कहने पर मीरा ने भगवान् श्रीकृष्ण को अविनाशी दूल्हा माना। मेवाड़ में जब मीरा को अधिक दु:ख दिया गया तो उसने सन्त तुलसी दास जी को एक पत्र में अपना सारा हाल लिखकर भेजा। तुलसी दास जी ने पत्र के जवाब में लिखा –

जा के प्रिय न राम वैदेही।
तज़िये जाहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही॥

इस पद्य को पढ़कर मीरा ने मेवाड़ त्याग दिया और वृन्दावन चली गई। मीरा सद्‌गुरु के असली स्वरूप को समझ गई थी।

आज के शब्द में **सुरत सहेली** क्यों कहा है? इसकी व्याख्या आगे करूँगा। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि परमतत्त्वाधार को चाहे आप राम समझो या श्रीकृष्ण समझो, किन्तु उस रूप को उसी अविनाशी, अनन्त हर प्रकार के रंगरूप से परे धुरधाम निवासी का रूप मानो, क्योंकि उस रूप से प्रेम करते-करते तुम अन्त में उसी निज अवस्था,

परात्पर ब्रह्म में विलीन हो जाओगे जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह नहीं कहा जा सकता कि वह अमुक वस्तु है और अमुक नहीं है।

स्वामी जी महाराज ने कहा–

राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहीं कुछ नहीं कुछ नहीं था सो॥

तुम समझते हो कि वह कुछ नहीं है, लेकिन वह है ज़रूर। वह सब कुछ है।

कोई अगुण कहे, कोई सगुण कहे।
कोई निराकार, साकार कहे॥

कुछ लोग उस मालिक को निर्गुण कहते हैं और कुछ लोग उसे सगुण कहते हैं। निर्गुण कहने वाले भी ठीक हैं। क्योंकि गुणों की एक सीमा होती है। जैसे लम्बा, चौड़ा, गोरा, काला, मुकुटधारी, धनुषधारी आदि। अपना-अपना विश्वास है। यही कारण है कि तुलसी दास जी द्वारिकाधीश के मन्दिर में गये और कहने लगे–

तुलसी मस्तक तब निवे, जब धनुषबाण लो हाथ।

इतना कहते ही मुरली के स्थान पर धनुष आ गया था। असलियत में न वह मुरली वाला है, न धनुष वाला है। यदि आपका प्रेम सच्चा व अगाध है तो मालिक को उसी रूप में प्रकट होना पड़ता है जिस रूप को तुम चाहते हो। इसलिए मीरा ने तुलसी के राम को अपना श्रीकृष्ण माना।

वह सर्वशक्तिमान् है। मैं आपको इस्लाम धर्म के बारे में बताता हूँ। मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ता है। नमाज़ पढ़ने में कहता है–

लाइलाहाइलिहलाह मोहम्मद-उल-रसूल इल्लाह।
रहमान उल् रहीम रब्बुल आलमीन।

यह हमारे ही वेदमन्त्र का अनुवाद है। वह देवताओं को मानते हैं। **लाइलाहा** देवताओं में एक की पूजा करो। मैंने आपको बताया कि गुरु

प्रकाश में रहता है, इसलिए सारे देवता उसके अन्दर रहते हैं। **लाइलाहा इलिल्लाह मोहम्मद उल रसूल इल्लाह** मोहम्मद गुरु है, तुम गुरु के द्वारा ही खुदा के पास पहुँच सकते हो। **रहमान उल् रहीम।** वह दयाल है, परम दयाल है। **रब्बुल आलमीन** वह ब्रह्माण्डों का खुदा है। मोहम्मद साहिब ने यह तो नहीं कहा **रब्बुल मुसलमीन** जब वह रब्बुल आलमीन अर्थात् सारे आलम का खुदा है तो क्या वह एक मस्जिद के अन्दर बैठा है? मोहम्मद साहिब ने कहा, **वह सच्चा मुसलमान नहीं जो दूसरे मज़हब का ताज़ीम नहीं करता।** मैं आपको सच्चाई बयान कर रहा हूँ। मस्जिद कहाँ है? अरे! जहाँ पर जरूर नमाज़ (मुसल्ला) बिछाया, वहाँ पर मस्जिद है। मैं आपको एक बात सुनाना चाहता हूँ।

1982 में महाराज जी की आज्ञा के मुताबिक मैं त्यागपत्र देकर भारत आ गया। देहली में विश्वविद्यालय ग्राँट कमीशन ने एक सम्मेलन किया, जिसमें फ्रांस, इंग्लैंड से दार्शनिकों को बुलाया था और भारत के भी हिन्दु – **हिन्दु धर्म और इस्लाम धर्म में साहश्य।** मैं सलवान स्कूल में दशहरे का सत्संग दे रहा था। तभी टेलीफोन पर मुझे कहा गया ''डॉ. शर्मा! आप 2, 3 घण्टे के लिए सम्मेलन में आ जायें।'' जब मैं सम्मेलन में गया, तो उस वक्त गोवहाटी के डॉ. शर्मा अपना लेख पढ़ रहे थे। वह अपने लेख के माध्यम से इस्लाम धर्म और हिन्दु धर्म की समानता पर प्रकाश डाल रहे थे। अब वहाँ पर एक फ्रांस के प्रोफेसर थे। पश्चिम के लोग समानता नहीं देखते, बल्कि अलगाव देखते हैं। वह खुदा को नहीं जानते। समानता का नाम ईश्वर है। फ्रांस का प्रौफेसर ईसाई था। उसने कहा, ''हिन्दु धर्म और इस्लाम धर्म में समानता नहीं है, बल्कि असमानता है।'' सम्मेलन का संयोजक डॉ. दुरानी उदयपुर में मेरा सहायक रह चुका था। उसने कहा, ''गोवाहाटी के प्रोफेसर डॉ. शर्मा ने ग़लत कहा है। हम मोहम्मद को खातमुलबीन मानते हैं।'' अब मैंने उठ

करके कहा, ''मित्र! अब मेरा यह चोला प्रोफेसर का नहीं है। मेरा चोला अब सन्त का चोला है। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इस चोले के अन्दर दर्शन का भेद क्या है? आप सब समानता के ऊपर व असमानता के ऊपर बोल रहे हैं। मगर क्या किसी ने कबीर साहिब को पढ़ा। कबीर साहिब का किसी ने नाम ही नहीं लिया।''

तब मैंने उनको कबीर साहिब के इस शब्द के बारे में बताया– ''**सखिया वा घर सबसे न्यारा।**'' मैंने कहा कि भारतीय दृष्टि एकत्व की है और पश्चिमी दृष्टि अनेकत्व की है। एकत्व का मतलब है कि हर एक के अन्दर उसी मालिक को देखना। पश्चिम के दृष्टिकोण के अनुसार ''मैं और तू दोनों नहीं रह सकते। मैं रहूँगा या दूसरा रहेगा।'' अब मैंने डॉ. दुरानी को कहा ''आपने एक बात तो सही कही है कि मोहम्मद साहिब को खातमुलबीन अर्थात् आखिरी गुरु कहा है। क्या आपने कभी यह सोचा कि क्या वह गुरु है?'' गुरु का रूप क्या होता है? गुरु को जब तुम परमतत्त्व नहीं मानते, बल्कि शरीरधारी मनुष्य मानते हो, तो तुम गुरु के असली स्वरूप को नहीं समझ सकते। मोहम्मद का मतलब है गुरु और गुरु हमेशा रहने वाला होता है। मैंने यह सब बात उनको बताई।

मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि राम रहीम करीम न केशो कि उस मालिक को हम जो कुछ मान लेते हैं, वह वैसा नहीं है। लेकिन वह है जरूर। उसके अतिरिक्त और कोई हस्ती है ही नहीं। स्वामी जी महाराज ने जो भी बात कही वह अनुभव के आधार पर कही। लोग सोचते हैं कि स्वामी जी महाराज ने जो कहा है, वह वेदों में नहीं है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में नासदीय सूक्त है, जिसके अन्दर लिखा है कि शुरू में न देवी थी, न देवता थे, न ब्रह्मा, विष्णु, शिव थे, न सत् था न असत् था। 'तदेकं तथा' वह था, जिसको हम परमतत्त्व कह रहे हैं। अब सोचो कि स्वामी जी महाराज की बात में और ऋग्वेद की इस बात में क्या भेद है?

वास्तविकता यही है कि चाहे आप उसे राम मानो या कृष्ण मानो– लेकिन उन्हें शरीरधारी न मानकर परमतत्त्व सर्वाधार मानो।

कोई अगुण कहे कोई सगुण कहे।

सगुण का मतलब है कि उसको गुणों की सीमा में बाँधना कि वह काला है, गोरा है, लम्बा है, चौड़ा है, राम है कृष्ण है। लेकिन अगुण का मतलब है कि हम उस मालिक को किसी सीमा में नहीं बाँध सकते। अगर हमने उसे सीमा में लिया तो वह सर्वाधार नहीं है। अगुण का मतलब यह नहीं कि वह खाली है। यह जगत सुन्दर है अर्थात् राधा सुन्दर है। सन्तमत यह नहीं कहता कि जगत् से नफ़रत करो। जैसे वल्लभाचार्य जी ने कहा, ''अद्वैत वेदान्ती मूर्ख है, जो कहते हैं कि यह जगत् भ्रम है। जगत् को भ्रम कहने का मतलब है अपने–आपको भ्रम में डालना। अरे राधा या धारा उस स्वामी अर्थात् मालिक की है। अगर धारा को यह ध्यान आ जाये कि मुझे स्वामी के पास वापिस जाना है, तो वह वापिस राधा बनकर चलेगी। जब तक वह स्वामी से नहीं मिलेगी, तब तक उसे न शान्ति मिलेगी न उसे परम अवस्था प्राप्त होगी।''

गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर नहीं पावई, जहाँ कोई विश्राम॥

जब राधा और स्वामी, सुरत और शब्द दो हो गये तब फिर वह असली धाम पर पहुँचकर तब तक एक नहीं हो सकते जब तक सद्‌गुरु की मेहर नहीं होती और यह मेहर तब सद्‌गुरु की मेहर नहीं होती और यह मेहर तब तक नहीं होती, जब तक तुम प्रेममय नहीं हो जाते। यह प्रेम का रास्ता है। जब धारा प्रेममय होकर राधा बन गई तब वह अवस्था आती है–

बैठक स्वामी अद्‌भुती, राधा निरखनहार।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार॥

धारा से राधा बनकर जब राधा और स्वामी एक हो जाते हैं तब विश्राम मिलता है।

मैं आपको बता रहा था कि राधास्वामी हालत में रहने का नाम राधास्वामी गाना है। अब भगवद्‌गीता को गीता इसलिए कहा गया क्योंकि भगवान् कृष्ण उसके अन्दर रहते थे अर्थात् उसके अन्दर ओत–प्रोत थे। गीता में 18 सत्संग है। गीता के इस श्लोक में राधास्वामी परमतत्त्व का भेद छुपा हुआ है।

इदं तु ते गुह्यतमम् प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज् ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥

अर्जुन बड़ा प्यारा भक्त था उसको कहा ''अर्जुन! इदं तु मैं तुम्हें जबरदस्त छुपा हुआ गूढ़ रहस्य बता रहा हूँ क्योंकि तू मेरा भक्त है। तेरे अन्दर ईर्ष्या नहीं है।'' सद्‌गुरु के प्यार में ईर्ष्या नहीं होती। सद्‌गुरु का प्यार सबके लिए बराबर होता है। लेकिन सबका नमूना अलग–अलग होता है। जब भक्त के अन्दर ईर्ष्या है वह असली भक्त नहीं बन सकता। भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को आगे कहा–

ज्ञानं विज्ञानसहितम् मैं तुम्हें एकत्व का ज्ञान, स्वामी अर्थात् मालिक का भी ज्ञान दूँगा और राधा का भी ज्ञान दूँगा। **ज्ञानं विज्ञानसहितम्** तुम्हें प्रवक्ष्यामि ज्ञान, विज्ञान दोनों पक्ष बताऊँगा। **यज्ज्ञात्वा** जिसका अनुभव करने के याद, तू हर प्रकार की रुकावटों से आज़ाद हो जायेगा। परमतत्त्वाधार, मालिकेकुल हमें वापिस ले जाने के लिए ही शरीर धारण करके जगत में आता है। यही बात मैं आपको बता रहा था।

शब्द गुप्त जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर नहीं पावई, जहाँ कोई विश्राम॥

विश्राम आख़िरी अवस्था है और भक्त आख़िरी अवस्था तब तक नहीं पाता जब तक सद्‌गुरु की मेहर न हो। सद्‌गुरु की मेहर कब होगी, जब तुम प्यार करोगे। पहिले दूर का प्यार होता है, फिर नज़दीक का प्यार होता है। यह बात आज के शब्द में भी आई है।

चल गुरु के सतसंग री, मेरी सुरत सहेली।

अब देखो! दाता दयाल जी महाराज ने सुरत सहेली कहा है क्योंकि पुरुष तो केवल एक ही है, बाकी सब स्त्री है, राधा है।

सतसंगत अमृत जल बरसे, सत्संग निर्मल गंग री।

अमृत जल क्या है? अमृत जल है गुरु की वाणी। सत्संग के अन्दर जो गुरु की वाणी रूपी धारा बह रही है, उसको सुनकर तुम अमरत्व को प्राप्त कर रहे हो।

वाणी गुरु है गुरु वाणी है, वाणी अमृत सारे।

सत्संग के अन्दर सद्गुरु की वाणी को ध्यान से सुनो। क्योंकि सद्गुरु की वाणी की महिमा है और वह अमृत का सार है। अब सवाल पैदा होता है कि हम सत्संग के अन्दर कैसे बैठे? कैसे देखे और कैसे सुने? हमारे व्यवहार के तीन तरीके हैं – (1) मन, (2) वचन (3) कर्म। शिवसंकल्प का क्या अर्थ है? शिवसंकल्प का अर्थ है कि हम मन, वचन और कर्म से शुद्ध हों अर्थात् किसी को भी हम मानसिक, शारीरिक और शब्दों से भी दु:ख न पहुँचायें। बार-बार आपको कहा जाता है कि घर में शान्ति रखो। माताएँ बच्चों को पीटती हैं। बड़ा होकर बच्चा औरतों से नफ़रत करेगा। यदि बाप मारता है तो बच्चा मर्दों से नफ़रत करेगा। किसी ऋषि ने कहा है–

लालयेत्पंच वर्षाणि षोड़श वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥

अर्थात् पाँच वर्ष तक बच्चे को कुछ नहीं कहना चाहिए। सोलह वर्ष तक बच्चे को डाँट-फटकार करना चाहिए। सोलह वर्ष के बाद पुत्र के साथ मित्र जैसा व्यवहार करना चाहिए। मैं आपको दुनिया के व्यवहार की बात बता रहा हूँ।

मैं आपको सत्संग की अमृतधारा के बारे में बता रहा था। अमृतधारा वाणी की धार है। बच्चे की भलाई के लिए आप पीटते भी हैं, लेकिन कटु वचन मत बोलो। यदि आप शारीरिक रूप से किसी को दु:ख नहीं दे

रहे, मगर कटु वचन बोल रहे हें तो आप हिंसक है। वाणी की हिंसा, वचन की हिंसा, शारीरिक हिंसा से ज्यादा खतरनाक है क्योंकि कटु वचन मन से नहीं निकलता।

जैन धर्म में 'क्षमा' के ऊपर अधिक ज़ोर दिया गया है। अब लोग कहते हैं कि हमने क्षमा कर दिया मगर मन से बात नहीं निकलती। यदि आपने अपराधी को माफ कर दिया, मगर मन के अन्दर बात को भुलाया नहीं तो आप अपने-आपको दु:ख दे रहे हैं। दूसरे के कटु शब्द बार-बार याद करने से आपका मन दूषित हो जाता है। इस प्रकार मानसिक कर्म, वचन के कर्म सभी अधिक दु:ख देने वाला है तथा ख़तरनाक व ज्यादा देर तक रहने वाला है। अब वचन जो है वह शारीरिक और मानसिक कर्मों के बीच में है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैंने क्यों कहा कि वाणी से तुम गुरु को पहिचान सकते हो। जैसा मैंने आपको बताया कि मीठी वाणी शारीरिक और मानसिक कर्म के बीच में है। एक बात को हम गुस्से से भी कह सकते हैं और मीठा बोलकर भी कह सकते हैं। अगर आप प्रेम से कहेंगे तो आपसे हिंसा भी नहीं होगी और आपका मन भी शुद्ध हो जायेगा। मीठा बोलने में आपके पैसे नहीं लगते। इसलिए वाणी आपके शारीरिक कर्म को बताती है और उसके अन्दर मन को भी बताती है। वाणी एक ऐसा दीपक है जो दहलीज़ पर रखा हुआ है, जिससे अन्दर भी रोशनी होती है और बाहर भी रोशनी होती है। इसलिए गुरु की वाणी आपको उभारने वाली है। जब मीठी वाणी से आपका मन साफ हो जायेगा तब आपको गुरु का दर्शन भी हो जायेगा।

मेरे दोनों बच्चों के संस्कार मेरे जैसे ही हैं। वह कड़वा बोलकर किसी का मन नहीं दुखाते। गुरु की जो वाणी अर्थात् धारा है, वह अगम की धारा है, इसीलिए उसे 'निर्मलगंग' कहा गया है। यह स्वच्छ व विशुद्ध है। जब यह बहती है तो मुझे न समय का होश रहता है, न इस बात का पता चलता है कि मैं क्या कह रहा हूँ? जब कभी यह ख्याल

आता है कि मैं सत्संग दे रहा हूँ तो लगता है कि जैसे मैं अपने-आपको सत्संग दे रहा हूँ। यह लहर गुरु के शरीर के अन्दर आती है। अगर तुम अपनी नहर को ढीला कर दो, मन के अहंकार को दूर कर दो, तो लहर इतनी तेज़ आयेगी कि नहर टूट जायेगी और लहर ही रह जायेगी। वह मौज़ की धारा बहती है। यह अवस्था सत्संग के अन्दर होती है। सत्संग वास्तव में निर्मल गंगा है।

परम दयाल जी महाराज कहते थे, ''मैं चाहता हूँ कि सारे सत्संगियों को एकदम ऊपर ले जाऊँ।'' यदि आपको एक क्षण के लिए भी यह पता लगता है कि यह बहने वाली धारा आपके शरीर, मन,आत्मा को छू रही है तो समझ लो कि आप ऊपर पहुँच गये। यह धारा अशुद्ध नहीं है। यह नि:स्वार्थ है। जैसे गंगा है। तीर्थस्थानों पर बहुत दूषित वातावरण है लेकिन फिर भी आप हरिद्वार, ऋषिकेश जाइये, आपको शान्ति मिलेगी क्योंकि हमारे ऋषियों ने हज़ारों वर्षों तक गंगा के किनारे पर तपस्या की है, मालिक से मिलने के लिए प्रार्थना की है। वह किरणें आज भी वहाँ मौजूद हैं। लक्ष्मण झूले पर जो हवा लगती है उससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम साँस ले रहे हों। हर जी की पौढ़ी पर गंगा में डुबकी लगाने पर ऐसा लगता है जैसे सारे पाप धुल गये हों। सारा शरीर हल्का हो जाता है। गंगा में और सत्संग की गंगा में बहुत कुछ समानता है। सत्संग के व गंगा से होने वाले लाभ के चार दर्जे हैं-

(1) **सालोक्य-** लोग हरिद्धार में रहते हैं। गंगा के किनारे नहीं जाते, मगर गंगा का पानी कुओं व नलों के ज़रिये पीते रहते हैं। वह गंगा की परिधि अर्थात् गंगा के लोक में हैं। इसलिए उनको भी असर होता है। इसी प्रकार पहले सत्संगी आता है और दूर बैठ जाता है मगर फिर भी उसे फायदा हो जाता है। एक शहर में एक ब्राह्मण परिवार रहता था। वहाँ पर सत्संग होता था। ब्राह्मण ने अपने बच्चों को सत्संग में जाने के लिए मना कर दिया और कहा, ''यदि तुम सत्संग की जगह से निकल

रहे हो तो कानों में अंगुलियाँ डाल लिया करो।'' ब्राह्मण का एक लड़का जा रहा था और साधु सत्संग दे रहा था। साधु बता रहा था कि देवताओं की परछाई नहीं होती। ब्राह्मण के लड़के ने सुन लिया। अब कुछ दिनों के बाद ब्राह्मण के घर चोर आया। चोर ने काली देवी का रूप बना रखा था। लड़के ने देखा कि उसकी परछाई थी। उसने डंडे मारने शुरू कर दिये। चोर पकड़ा गया। ब्राह्मण ने पूछा, ''बेटे! तुम्हें कैसे पता चला कि यह देवी नहीं है?'' लड़के ने कहा ''पिता जी! मैं जा रहा था। ग़लती से मैंने साधु की बात सुन ली कि देवी-देवताओं की परछाई नहीं होती।'' उसी समय ब्राह्मण ने अपने बच्चों को कहा, ''तुम सत्संग में जाया करो।'' सत्संग में जाने से तुमको वही लाभ होता है जो गंगा के किनारे या घरों में रहने वाले पंडों को व लोगों को होता है। इसे कहते हैं सालोक्य अर्थात् एक ही इलाके में रहने का सम्बन्ध।

(2) **सामीप्य –** अब आप गंगा के नज़दीक आ गये। आप सत्संग में गुरु के पास आकर बैठे और आपने नामदान ले लिया। इसको कहते हैं सामीप्य।

(3) **सारूप्य-** अब आप हर जी की पौढ़ी पर गये। आपने जंजीर पकड़ी और डुबकी लगाई। आपके चारों तरफ पानी ही पानी हो जाता है। आपका रूप पानी का रूप बन गया। इसी प्रकार सत्संगी नाम लेते-लेते वह अवस्था प्राप्त कर लेता है, जिसमें हर एक के अन्दर गुरु की झलक दिखाई देती है। यह अवस्था जीवनमुक्ति की अवस्था है। इस अवस्था में हम जिससे प्रेम करते हैं, वैसे ही हो जाते हैं। इस अवस्था में 'मैं' 'तू' का झगड़ा नहीं रहता।

जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी वा में दो न समाहि॥

(4) **सायुज्य-** अब आपने गंगा में डुबकी लगाई और आप एक हो गये। जल से बाहर ही नहीं निकले। सत्संगी इस अवस्था में मालिक में विलीन हो जाता है।

सत्संग निर्मल गंगा है। इन चारों अवस्थाओं को एक पद्य में कहा है।

एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निजधाम॥

इस पद्य में चार जन्म की बात नहीं कही गई है। जन्म का मतलब है कि सत्संगी इसी जन्म में कुछ समय के लिए गुरु की भक्ति करे, गुरु की मुट्ठी-चापी करे। निकट आने से प्रेम होता है। फिर कुछ समय गुरु के बताये हुए नाम का जाप करे, गुरु का ध्यान करे। इससे वह जीवन मुक्ति की अवस्था पा जायेगा। अर्थात् सारूप हो जायेगा और चौथी अवस्था में न तू रहेगी और न मैं रहेगी। यह सत्संग की महिमा है।

सत्संग प्रेम सिन्धु है सजनी, उमड़े प्रीत तरंग री।

सत्संग तो प्रेम का, ज्ञान का अथाह समुद्र है। सत्संग में बैठने से मालिक के प्रीत की तरंग उठती है। हालाँकि आप सब के अन्दर प्रेम का समुद्र ठाठें मार रहा है। लेकिन सद्गुरु के पास बैठने से जब प्रेम की तरंग उठती है तो यह दुनियावी तरंगों को रद्द कर देती है। मुझे भर्तृहरि का ध्यान आ गया। यह उज्जैन नगरी भी उन्हीं की नगरी है। कहते हैं कि वह अभी तक शरीर में हैं। वह राजा थे। ऐश-परस्ती में थे। वह अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते थे। राजा भर्तृहरि में तीन शतक लिये। पहिला शतक शृंगार शतक है- भामिनी विलास- इसके अन्दर उन्होंने बताया कि गृहस्थ के अन्दर रहते हुए उन्होंने किस प्रकार काम को भोगा। **दूसरा** उन्होने नीतिशतक लिखा जिसमें उन्होंने बताया कि दुनिया में रहकर कैसे व्यवहार करना चाहिए। **तीसरा** वैराग्यशतक लिखा जिसमें उन्होंने बताया कि दुनिया में रहकर दुनिया में फँसना नहीं चाहिए असल में उनके जीवन की एक बड़ी घटना मैं आपको बताना चाहता हूँ-

राजा भर्तृहरि अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे। उनके राज्य में किसी ब्राह्मण ने बहुत बड़ा अनुष्ठान किया। उस ब्राह्मण को अनुष्ठान का अमृतफल मिला। उसने सोचा कि हमारा राजा बहुत अच्छा है। मैं

यह फल राजा को ही दे दूँ। यह सोचकर ब्राह्मण ने वह अमरफल राजा को दे दिया। जब राजा ने वह अमृतफल अपनी रानी को दे दिया। रानी महल में आने वाले एक धोबी से प्यार करती थी, उसने वह फल धोबी को दे दिया। धोबी एक वेश्या से प्रेम करता था, उसने वह फल वेश्या को दे दिया। वेश्या ने सोचा कि मेरा जीवन तो बेकार है। हमारा राजा बहुत अच्छा है। अगर वह अमर हो जाये तो कितना अच्छा रहे। वेश्या जब दरबार में नृत्य करने के लिए गई तो उसने नृत्य करते-करते वह अमर फल राजा को पेश किया। राजा अमर फल को देखकर चौंक गया। उसने जब सारी बात का पता लगाया तो उसे वैराग्य हो गया। तब उन्होंने लिखा-

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरवता।
साऽ यन्यमिच्छतिजनं स जनोऽन्यसक्तः॥
अस्मत्कृते परिशुष्यति काचिदन्या।
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च॥

जगत में सद्गुरु के अतिरिक्त कौन सच्चा प्यार कर सकता है? राजा भर्तृहरि ने कहा कि मैं रात-दिन जिसकी चिन्ता में रहा, वह किसी और से प्यार करती है। धोबी महारानी का प्यार पाकर किसी और पर निहाल है और यह नाचने वाली हम पर निहाल हो रही है। अरे! महारानी को भी धिक्कार है, धोबी को भी धिक्कार है, वेश्या को धिक्कार है और मुझे भी धिक्कार है।

मैं आपको तरंग के बार में बता रहा था। कौन-सी तरंग है जो हमें बाँधती है? प्रेम की तरंग हमें ऊपर ले जाती है। भर्तृहरि ने इस सम्बन्ध में लिखा है-

आशानाम नदी मनोरथजला।
तृष्णा तरंगाकुला॥
मोहावर्त्तसुदुस्तरा अति गहना।
दुकूल चिन्तातटी॥

तस्याः पारगता विशुद्धमनसा।
नन्दन्ति योगीश्वराः॥

अब प्रेम की तरंग कैसे ऊपर ले जायेगी? राजा भर्तृहरि कहते हैं कि आशा एक प्रकार की नदी है। उसके अन्दर मनोरथरूपी जल रहता है और तृष्णारूपी तरंगे होती हैं। जैसे इन तरंगों से लोग व्याकुल हैं अर्थात् नदी के अन्दर भँवर में फँसना है। हमारी आशाएँ मोह–भँवर हैं। इसको पार नहीं किया जा सकता। आशारूपी नदी बहुत गहरी है। नदी के दो चिन्तारूपी किनारे हैं। मैं कहता हूँ कि सारी चिन्ताएँ मुझे दे दो। मगर मुझे कोई चिन्ता भी नहीं देता। शुद्ध मन वाले सन्त उस आशारूपी नदी के पार जाकर आनन्द से रहते हैं। अब आप इस नदी से कैसे पार होंगे? जबअ ापइ सीन दीम ें अ ाकरफ ँसेंगे,त ेप्ीतक ीत रंगेउ ठेंगीत ो आशारूपी तरंगों का मुकाबला करके आपको समता की ओर ले जायेंगी। आपके लोक और परलोक बन जायेंगे।

बास सुवास मिले सतसंगत, पावे रंग सुरंग री।

जैसा कि आपको शब्दानन्द जी ने बताया कि आपको जो कुछ मिलता है वह सत्संग से मिलता है। क्योंकि सत्संग के अन्दर सत् और प्रेम रहता है। प्रेम भी एक छूत की बीमारी है और सत्य भी एक बीमारी है। जब आप प्रेम करोगे, तो दूसरा भी प्रेम करेगा। इसलिए सत्संग के अन्दर जब गुरु प्रेममय है तो आपके ऊपर भी प्रेम का प्रभाव तो होगा ही। मैं कई बार कहता हूँ कि मेरे प्रेम से कोई बच नहीं सकता।

राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत, काल करम कर भंग री।

राधास्वामी कौन है? राधास्वामी वो है जो प्रेममय है।

गुरु वही जो शब्द सनेही, शब्द बिना और नहीं सेही।

इसका मतलब यह नहीं कि आप कानों में अँगुली देकर बैठे रहो। हम तो इसलिए बैठते हैं जिससे आपके सब काम ठीक होते रहें। **गुरु वही जो शब्द सनेही।** गुरु वह है जो शब्द में सना हुआ है। शब्द क्या है? पाँचों तत्त्वों में शब्द आकाश है। आकाश में सब समाविष्ट हो जाते

हैं। ऐसा गुरु जो एकत्व में रहता है वह सबको अपने अन्दर समाविष्ट कर देता है। जिसका प्रेम व्यापक है वही शब्दसनेही है। दूसरी बात यह है कि जो प्रेम में ओत–प्रेत है, उसके शब्द, उसकी वाणी, उसके सत्संग सुनने से कभी न कभी आप कहोगे कि हमें भी थोड़ी देर के लिए अनुभव हो गया। उसकी वाणी के अन्दर ओज होगा। सद्गुरु की वाणी तुमको ऊपर उठायेगी। अगर सत्संग में वाणी से तुम नीचे गिरते हो तो वह सत्संग किसी मतलब का नहीं।

राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत।

मैंने आपको कल बताया था कि राधास्वामी गुरु की संगत करो।

कोटि–2 करूँ वन्दना अरब खरब दण्डौत।
राधास्वामी मिल गये खुला भक्ति का स्रोत॥

वन्दना का मतलब है– अपने अहंकार को मिटा देना। अहंकार हटते ही आप राधास्वामी के नज़दीक आ जायेंगे। राधास्वामी से मिलकर एक हो जायेंगे। भक्ति का स्रोत खुल जायेगा।

राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत।
काल करम कर भंग री॥

कितनी आसान बात है कि राधास्वामी गुरु की संगत करो। संगत का मतलब यह नहीं कि तुम गुरु को न खाना खाने दो, न आराम करने दो। संगत का मतलब है कि हर समय गुरु को अपने पास समझो और गुरु के ध्यान में मस्त रहो। मैं हमेशा तुम्हारे पास हूँ। मेरी प्रेम की धार से कोई बच नहीं सकता। राधास्वामी सद्गुरु की संगत करने से तुम्हारी संगत भी वैसी ही हो जायेगी और इस जीवन के अन्दर तुम्हारे लोक और परलोक दोनों बन जायेंगे। यह सत्संग की महिमा है, जिसे आज मैंने आपको बताया। आज का सत्संग मैं यहीं पर समाप्त करता हूँ।

सबको राधास्वामी!

(M : 0 94183–70397)

दयाल कमल जी महाराज

दिनाँक 12-04-15 (वैसाखी पूर्व संध्या सत्संग)

राधास्वामी!

सुखी रहो, आपने मेरे भाईयों से सत्संग सुना। सब ने यही कहा कि गुरु होना चाहिए। क्या गुरु की भी कोई शिष्य के प्रति ड्यूटी है? क्या गुरू पैसे लेने के लिए है, हार चढ़वाने के लिए है या मत्थे टिकवाने के लिए है? नहीं। उनकी भी आपके प्रति ड्यूटी है। वह ड्यूटी क्या है, वह आज तुम्हें मैं बताता हूँ। तुम ध्यान लगाओ, सिमरन करो, योग करो या जो चाहे करो जब तक तुम गुरू की बात को पकड़कर चलोगे नहीं और गुरु जो कह रहा है वह तुम नहीं करते तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।

गुरु क्या करता है वह तुम्हें आज मैं बताऊँगा। गुरु घुँघट के पट खोल देता है। जो मैल है, जन्म-जन्म के संस्कार हैं उनको भी वह काट देता है। किनके? जो कटवाना चाहते हैं, जो अपने मन को शुद्ध करवाना चाहते हैं। जिसको भूख नहीं है उसके आगे जितना चाहे पदार्थ रख दो जिसको भूख लगी है वह सूखी रोटी खाकर भी मालिक का शुक्रिया करेगा। जिसको प्यास लगी है वही पानी पीयेगा। अगर आपको प्यास

नहीं है तो गुरु चिल्ला-चिल्ला कर जो मर्ज़ी कहता रहे तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। पहले प्यास पैदा करो, पहले अन्दर अग्नि पैदा करो। मेरे सद्‌गुरु महाराज हमेशा वाणी का साथ लेकर चलते थे। गुरु जब बाँह पकड़ लेता है, तो कौए को हंस बना देता है। कौआ गन्दगी पर जाता है। **फैज़ का दर खुला बन्द वह हरगिज़ नहीं पर शर्त केवल यही, माँगने कोई साहिल आए।** यह दरवाज़ा किसी के लिए बन्द नहीं है। आओ, हम गले लगाने के लिए बैठे हैं। सारा ट्रस्ट आपकी सेवा में खड़ा है। मैं आपकी सेवा में बैठा हूँ, तो दरवाज़े बन्द हो ही नहीं सकते। दाता दयाल जी महाराज कहते हैं– हम सब क्या हैं? हम धोबी हैं।

धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय।

तुम्हारा मस्तिष्क तुम्हारी चुनरी है। इसकी क्या हालत है आपने नहीं देखी। तुम अपनी-अपनी चुनरी को देखो कि तुम्हारी चुनरी में कितने दाग हैं? मैं अपनी चुनरी को जानता था। मेरी चुनरी मेरे सद्‌गुरु परमदयाल जी महाराज ने धो दी। कैसे धोई?

जनम जनम की मैली चुनरिया, देखत जिया घबराय॥

हम अपने साथ क्या लाए हैं? हम कहते हैं कि हम कुछ नहीं लाये, न कुछ लेकर जायेंगे। लेकिन हम अपने साथ जन्म-जन्म के संस्कार लेकर आए हैं। वह संस्कार हमारे मस्तिष्क में हैं। दाता दयाल जी महाराज कहते हैं कि वह संस्कार बड़े गन्दे हैं। यह चुनरी बहुत गन्दी है। जब तुम देखोगे तो घबरा जाओगे। मैं उस चुनरी को देखकर पाँच-छः साल की उम्र से लगा हुआ था कि भगवान् क्या है? मौत क्या है? मरकर कहाँ जाना है? मैं इस दुनिया में क्यों आया? माता कहती थी कि यह सद्‌गुरु बतायेंगे तो मैं कहता हूँ कि सद्‌गुरु कहाँ मिलेंगे? बड़ी खोज की, मौज परमदयाल जी महाराज के चरणों में ले आई। वे मेरे संस्कार थे, मेरे जन्म-जन्म के सवाल थे कि मैं कौन हूँ? मुझे गुरु क्यों नहीं मिल

रहा? जब गुरु मिले और बोले बच्चा, तेरे मन में यह जो ख्याल हैं इन्हें छोड़ दे। अब सवाल यह है कि यह छूटेंगे कैसे? पहली बात सत्संग। दूसरी बात सत्संग में कही गई बात पर चलना, अमल करना। लोग कहते हैं कि सिमरन करो, सिमरन करो। अरे! सिमरन क्यों करो? उससे क्या मिलेगा? हमारे सिमरन करने पर यह होता है कि जितनी जन्म-जन्म की गन्दगी मस्तिष्क में भरी हुई है। सिमरन के नाम में ताकत है वह इसे काट देती है। तुम्हारा चिराकाश साफ हो जाता है। लेकिन निर्मल कब होगा? जब तुम उसे निर्मल करना चाहोगे। यही नहीं कि गुरु जी ने आशीर्वाद दे दिया। परमदयाल जी महाराज हमेशा कहते थे- मैं कोई फूँक नहीं मारता। जो चीज़ मैं देना चाहता हूँ, दुनिया उसे लेने नहीं आती। कितने कम लोग हैं जो मुझसे अध्यात्म की बात पूछते हैं या अभ्यास की बात पूछते हैं। दुनिया को दुनिया चाहिए। मैं कहता हूँ कि दुनिया भी बनाओ। पर कैसे बनाओ-

काम क्रोध कीचड़ लपटानी, दुरगंध बास बसाय।
धोबिया प्रगटा जग में सजनी लीजो चुनर धुलाय॥

दाता दयाल जी महाराज ने यहाँ दो बातें कह दी कि काम, क्रोध कोई भी आदमी चाहे वह सन्त है, परमसन्त है, गुरु है, चेला है, कोई भी है, सब में कोई न कोई वासना है। सब में कोई न कोई इच्छा है। किसी को धन प्राप्त करने की इच्छा है, किसी को बड़ा पद प्राप्त करने की इच्छा है, किसी को इच्छा बड़ी बिल्डिंग बनाने की है, किसी को परमात्मा पाने की इच्छा है, किसी को शब्द और प्रकाश में जाने की इच्छा है। जब वह इच्छा पूरी नहीं होती तब क्रोध आता है। तुम अपने-आपको देखो कि जब तुम्हें कुछ प्राप्त करने की इच्छा है जब तुम्हें वह नहीं मिलती तब तुम्हें गुस्सा आता है। तुम्हारा बच्चा होनहार है, तुम्हारी आज्ञा का पालन करता है लेकिन एक बार उसने आज्ञा का पालन नहीं किया तुम्हें क्रोध

आयेगा। तुम्हारी पत्नी बड़ी आज्ञाकारी है, सेवादार है, सारे परिवार का पालन-पोषण करती है लेकिन कहीं एक छोटी सी गलती हो गई। मायके गई हुई है, घर आने में दो दिन लेट हो गई तुम्हें क्रोध आयेगा। लेकिन यदि हम इसकी गहराई में जायेंगे कि क्रोध, काम, वासना पैदा क्यों हुई? आशा करो, वासना करो, इच्छा करो, Desire करो, सब कुछ प्राप्त करने की इच्छा करो। लेकिन उसके आगे और उसके पीछे एक इच्छा और रखो और वह इच्छा है....सद्गुरु की दया की। सवाल यह है कि सद्गुरु की दया कैसे प्राप्त करोगे?

स्कूल में बच्चा पढ़ाता है। मास्टर जी ने उसको काम दिया कि यह काम कल करके लाना। दस बच्चों ने काम नहीं किया जिन्होंने किया वह गलत किया तो क्या मास्टर जी उनको शाबाशी देंगे? मास्टर जी उनको शाबाशी नहीं देंगे बल्कि फटकार लगायेंगे। एक बच्चा सबसे बढ़िया लिखकर लाता है जैसा मास्टर जी ने कहा वैसा लिखकर लाता है, तो मास्टर उसको कहेंगें शाबाश! आपने बहुत अच्छा काम किया। ऐसे ही सत्संग में जो बात आपको कही जाती है या तुम अकेले में उस रहबर को मिलते हो जिसको तुम गुरु कहते हो। मैं तो आपका सेवक हूँ, तुम मुझे जो चाहे मर्ज़ी मान लो यह तुम्हारी इच्छा है क्योंकि तुम्हारी इच्छा का फल तुम्हें मिलना है। अगर मैं गुरु बन गया तो मुझे सजा मिलेगी। मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज ने कहा कि गुरु बनना महापाप है, मैं आपका सेवक हूँ। जो भी शिष्य, जो भी सेवक गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए, उनके आदेश पर चलते हुए अपनी सफलता गुरु को आकर बताता है। महाराज जी, आपने यह हुक्म दिया था मैंने यह काम किया। गुरु आपको शाबाश देगा। तुम सत्संग सुनते हो पर उनकी बात पर नहीं चलते हो, तो फिर काम कैसे चलेगा? तुम एक नियम बना लो देखो! तुम्हारी ज़िन्दगी में कितना फर्क पड़ जायेगा। मैं

किसी भी हालत में घर की शान्ति भंग नहीं होने दूँगा। बस! बात बन गई। मैं घर की शान्ति और बहुओं में प्रेम बनाये रखूँगा। मैं कभी उन पर उँगली नहीं उठाऊँगा। मैं कभी उनकी नुक्ताचीनी नहीं करूँगा फिर देखना आपके घर में शान्ति आ जायेगी। जब घर में शान्ति आ जायेगी तो तुम नाम भी जप सकोगे। अगर घर में शान्ति नहीं तो तुम नाम भी नहीं जप सकते। बच्चे आज्ञाकारी नहीं तो तुम नाम नहीं जप सकते। तुम्हारी सेहत ठीक नहीं तुम नाम नहीं जप सकते। नाम जपने के लिए भी Condition है।

पहले वातावरण को शुद्ध करो, अपने घरों में शान्ति लाओ दूसरे नम्बर पर अपनी सेहत का ख्याल रखो। सबसे बड़ा वरदान तुम्हारी सेहत का है। दूसरा वरदान जो मैं समझता हूँ कि तुम्हें आज्ञाकारी पत्नी मिली, बच्चे आज्ञाकारी मिले। तीसरा वरदान मालिक ने दिया कि तुम्हें किसी के आगे हाथ नहीं फैलाने पड़े, पैसे की कमी नहीं है। बस तुम्हारा काम बन गया और यह सब कब होगा जब तुम गुरु की आज्ञा में रहोगे और अपनी चुनरी धुला लोगे। बाहर के कपड़े तो धुल जाते हैं लेकिन अन्दर के कपड़े धुलने बड़े मुश्किल हैं। वह कहाँ धूलेंगे? वह सत्संग में धूलेंगे। इसलिए मेरे दाता दयाल जी महाराज कहा करते थे– जो इन्सान साधना करता है, नाम जपता है और ध्यान करता है पर सत्संग नहीं करता वह भी धोखे में है क्योंकि मन उसको मारेगा। जो इन्सान सत्संग करता है साधन नहीं करता वह भी धोखा खा जायेगा। इसलिए सत्संग और साधन दोनों बराबर होने चाहिए। सन्त तो यहाँ तक कह गए कि हफ्ते में एक बार सत्संग होना चाहिए। अगर हफ्ते में नहीं तो पन्द्रह दिन में सत्संग करो। अगर पन्द्रह दिन नहीं तो महीने में करो, महीने में नहीं तो तीन महीनों में करो, तीन महीने में नहीं तो छः महीने में करो। अगर

तुमसे यह भी नहीं होता तो साल में एक बार ही सत्संग कर लो और उसको ध्यान से सुनो–

जा के गुरु के पास बैठो और वचन उनके सुनो
जो सुनो उसको गुनो।

तुम्हारे दिमाग में जितना फितूर है वह निकल जायेगा। इसलिए दाता दयाल जी महाराज की वाणी आपको सुनाता हूँ। क्योंकि मेरी चुनरिया इसी घर में धुली। मास्टर मोहन लाल के घर में 1956 में मैंने पहली बार परमदयाल जी महाराज का सत्संग सुना। आज 2015 है, मेरी चुनरी अब भी धुल रही है क्योंकि चुनरी के ऊपर हवा पड़ती है। समाज में रहता हूँ, दुनिया में रहता हूँ। सफेद से सफेद कपड़ा भी दुनिया की हवा से मैला होता है। लेकिन जब मैं यहाँ आता हूँ तो आपके चरण कँवलों की वजह से वह मैल धुलती रहती है। अपना निरीक्षण करने का मौका मिलता रहता है। अपना निरीक्षण करो दुनिया का निरीक्षण करना छोड़ दो। जो लोग दुनिया में भगवान की खोज में लगे हुए हैं, शायद वह दुनिया में धोखा खा रहे हैं। भगवान् की खोज करते–करते तुम थक जाओगे, जीवन व्यतीत हो जायेगा वह नहीं मिलेगा। जब तक तुम अपनी खोज नहीं करोगे वह नहीं मिलेगा। तुम अपनी खोज क्यों करो? मेरे सद्गुरु महाराज परमदयाल जी महाराज एक बड़ी प्यारी सी मिसाल दिया करते थे। मैंने उनकी हर एक बात को हृदय में रखा हुआ है। आजकल कुकर आ गए हैं जिसमें औरतें खाना बनाती हैं। 1956–57 में कुक्कर नहीं होते थे। मिट्टी की हाँडी होती थी उसमें औरतें दाल–सब्जी बनाती थी। चूल्हें के ऊपर हाँडी रखकर खाना बनाती थी तथा हाँडी के ऊपर जो ढक्कन होता था उसमें छेद होते थे। उनमें से हवा ऊपर से निकलती रहती थी। वे घर का काम करके हाँडी में से सब्जी या दाल को

देखती थी कि बन गई है या नहीं। दो दानों से ही पता लग जाता था कि दाल बन गई है या नहीं।

ऐसे ही परमतत्व जो विशाल है Unlimited है जिसकी कोई सीमा नहीं। जिसको बेअंत कह दिया क्या उसकी खोज हो सकती है? नहीं हो सकती। उसका केवल अनुभव हो सकता है। अनुभव तब होगा जब तुम उसके अंश को जान जाओगे तब उसको भी जान जाओगे। तुमने अपने अंश को जान लिया तुमने अपने-आपको जान लिया फिर तुमने उसको भी जान लिया। तुम्हारे सारे भ्रम, तुम्हारे सब संशय खत्म हो जायेंगे उसको कहते हैं- भक्ति। **कबीर भक्ति अजब है जो सद्‌गुरु मिले फकीर, संशय, भ्रम निवार के निर्मल करे शरीर।** वह हमें बाहरमुखी से अन्तरमुखी कर देता है। जो ब्रह्मडें सो ही पिंडे। जो ब्रह्मांड में है वही इस चोले में है, उसकी खोज करो वह कौन है। आँख में बैठकर देखने वाला कौन है? कान में बैठकर सुनने वाला कौन है? रसना में स्वाद लेने वाला कौन है? आप सबने तो अपने-आपको मन के आधीन किया हुआ है। मन से ही तुम पूजा करते हो, मन से ही तुम पाठ करते हो सब मन ही का चक्कर है। जब तक तुम मन में हो उसको तुम पा ही नहीं सकते। मन से तुम अपनी दुनिया बना लो। मन को Positive कर लो, मन में अच्छे ख्याल रखो। लोगों का भला करो , तुम्हारा भला हो जायेगा। अगर मन में गन्दे विचार होंगे तो तुम कहीं के भी नहीं रहोगे। इसलिए मेरे दाता कहा करते थे-

ऐ दुनियादारों तुम गृहस्थी हो तुम वेद मार्ग पर चला करो। शिवसंकल्पमस्तु, हमेशा अच्छे ख्याल रखो। वे कहा करते थे कि ख्याल रखना भी तुम्हारे बस में नहीं है, क्यों नहीं हैं? उसका भी कारण हैं- एक हम जो कर्म करते हैं वह निस्वार्थ नहीं होता, उसमें अपना स्वार्थ होता है। मेरा भला हो जाये दूसरे का बेशक नुकसान हो जाये, तो फिर काम

कैसे चलेगा? नहीं, ऐसी कमाई तुम्हारे मन को विचलित करेगी। **जैसा खाये अन्न, वैसा होगा मन।** इसीलिए सन्तों ने कहा कि हक-हलाल की कमाई खाओ, सात्विक कमाई खाओ। आजकल तो ऊपर की कमाई नहीं की तो लड़के की शादी नहीं होगी। आजकल तो बड़े गर्व से कहते हैं कि लड़के की तनख्वाह एक लाख है और इतनी ही ऊपर से बन जाती है। ऐसा काम अध्यात्म में नहीं चलेगा। अध्यात्म में तो इस चुनरी को साफ करना पड़ेगा।

धोबिया आया चतुर सियाना, अवघट घाट सजाय।
धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय॥

चतुर सयाना किसको कहते हैं जो आपसे ज्यादा ज्ञान रखता है। जिसको शरीर का, मन का, आत्मा का और अपना अनुभव हो गया वह चतुर और सयाना है। सन्तमत में चतुर वह है जिसको सद्‌गुरु के बताये मार्ग पर चलकर अपने शरीर का, मन का और आत्मा का अनुभव हो गया कि मैं कौन हूँ? वह सयाना है। हमारे बुजुर्ग कहा करते थे- **आप न बसदी सौरे, लोकी मताँ दे।** इसका मतलब है आप तो जाकर ससुराल रहती नहीं। सास-ससुर की सेवा नहीं करती और लोगों को आकर कहती है कि तुम सास की सेवा ऐसे किया करो। आजकल दुनिया में यही हाल है।

मैं छोटा था, एक दिन कहीं कथा-प्रवचन सुनने चला गया। वहाँ पण्डित जी कह रहे थे देखो माताओं, आप मसर की दाल न खाया करो, यह तब पैदा हुई थी जब धेनू गाय ऊपर जा रही थी तो राक्षसों ने तीर मारा। जो उसके पाँव में लगा उसके पाँव के दो टुकड़े हो गए जो खून ज़मीन पर गिरा उससे यह लाल मसर पैदा हुआ। इसीलिए इसे मत खाना। पण्डित की पत्नी वहाँ बैठी थी, उसने कहा पण्डित ने तो कह

दिया मैं तो घर में यही दाल चढ़ा कर आई हूँ। पण्डित जी तो मुझे मारेंगे। वह औरत वहाँ से उठी और सारी दाल नाली में गिरा दी। पण्डित जी घर आए और बोले भाग्यवान, ला खाना दे दो। पत्नी ने अचार के साथ रोटी रख दी। पण्डित जी बोले यह क्या है? पत्नी बोली पण्डित जी मैंने तो मसर की दाल बनाई थी तड़का भी लगाया था, लेकिन आपने तो वहाँ प्रवचन में बोला कि यह गाय के पैर के खून से बनी है, इसीलिए मैंने सारी दाल फैंक दी। पण्डित बोले तू भी पागल हो गई है। वह तो लोगों को बताने के लिए है अपने लिए नहीं है। तूने तो अपना कितना नुकसान कर लिया। हम लोगों का ये हाल है। अपनी चुनरी साफ नहीं हुई। अरे, मैं तो बड़ा भाग्यशाली हूँ मुझे तो मिल गए मेरे सद्‌गुरु परमदयाल जी महाराज और मेरी बाँह पकड़ ली। तुम बाँह पकड़ाते नहीं हो। वह बाँह यह बाँह नहीं है, तुम्हारा मन है।

महापुरुषों ने कहा है– **मन को बेचो, सद्‌गुरु के पास, तिस सेवक के कारज रास।** अरे, सद्‌गुरु तुम्हारे मन को चाहता है, वह तुम्हारे धन को नहीं चाहता है। इसलिए अपने मन को पाँच मिनट रोज़ दे दिया करो। तुम्हें पता लगेगा कि तुम कौन हो? कुछ भी नहीं। जो बना वह टूटा–बिगड़ा। साधु कुछ नहीं बनता है। वह किस बात का अभिमान करे। **दौड़त–दौड़त दौड़या, जहाँ लग मन की दौड़।** गुरु पहले दौड़ाता है, कोशिश कर लो, दौड़ लो, मन के पीछे। फिर तुम कहाँ पहुँच गए? बचपन में चले गए। बचपन में कोई चंचलता नहीं थी। बचपन में मेरा–तेरा नहीं था। बचपन में कोई नफरत नहीं थी। जैसे–जैसे मन बलवान होता गया। हमने संसार की सब मुसीबतें बाँध ली। हम ठेकेदार बन गए। तुम जीवन सुधारने के लिए आए हो तो उसको छोड़ना पड़ेगा अपनी चुनरी को धुलाना पड़ेगा। जो चतुर–सयाना गुरु है, जो तुम्हारा

हितकारी है, जो चाहता है तुम सुखी रहो, जो चाहता है कि तुम्हारे जीवन में कोई कमी न रहे। तुम निर्धन से धनी हो जाओ, तुम्हें कामयाबी मिले, अच्छी सेहत मिले। जो हित चाहता है वही गुरु है। जो ठीक रास्ता बताता है वही गुरु है। सबसे बड़ा गुरु माँ है, फिर बाप है। फिर तुम्हारे टीचर हैं। हर जगह, हर स्थान पर तुम्हें गुरु मिलेगा। गुरु वह नहीं है जो गद्दी पर बैठा है। जो तुम्हें ज़िन्दगी में ठीक रास्ता बताता है वही तुम्हारा गुरु है। अध्याम का गुरू वह है, जो तुम्हें इस जीवन–मरण से छुटकारा दिलाता है उसकी ड्यूटी है कि वह तुम्हारी चुनरी को साफ करके ठीक रास्ता बता दे। जो तुम तरह–तरह की कल्पनाएँ करते हो, अध्यात्म में बैठकर तरह–तरह के दृश्य देखते हो, तरह–तरह की दुनिया देखते हो, घण्टा सुनते हो, शंख सुनते हो, बाँसुरी सुनते हो, बीना सुनते हो यह कुछ भी नहीं तेरा अपना मन है, यही मेरे सद्‌गुरु ने बताया।

जो भी दृश्य तू अपने अन्दर देखता है वह तेरा मन है। तू उन दृश्यों से आगे निकल जा। कैसे जा? गुरु के आज्ञानुसार चल। जो गुरु की आज्ञा के बगैर चलते हैं, वे भी धोखा खाते हैं और उनके पागल होने का भय रहता है। यह प्रेम का मार्ग है, यह सत्संग का मार्ग है इसलिए धीरे चलो, **धीरज धरो करो विश्वासा, सद्‌गुरु करेंगे पूर्ण आसा।** दाता दयाल जी ने बार–बार कहा कि '**आस कर गुरु की दया की, हो न तू निराश कभी, जो हुआ निराश समझ ले तू न गुरु का दास कभी।** तुम कहते हो मैं गुरु का दास हूँ फिर हाय–हाय भी करते हो। रोते हो, शिकायतें करते हो यह बात नहीं बनती और न बनेगी। जब शिकवा खत्म हो गया, शिकायत खत्म हो गई। किसी में कोई नुक्स न देखो। दुनिया में कोई बुरा नहीं है। ऐ इन्सान दुनिया में न कोई तेरा शत्रु है, न कोई बुरी चीज़ है। तेरा ही ख्याल तेरे लिए शत्रु पैदा करता है, तेरा ही ख्याल तेरे लिए मुसीबतें पैदा करता है।

मेरे बाबा जी ने 105 साल की उम्र में अपना चोला छोड़ा। उनको दिखता नहीं था, तो मैं उनको पकड़कर खेतों में ले जाया करता था। फिर उनको स्नान करवाता था। एक बार उन्होंने मुझे कहा कि देख बच्चा एक बात हमेशा याद रखना दुनिया में किसी चीज़ से नफरत नहीं करना। उन्होंने हाथ को ज़मीन पर टटोल कर घास का एक तिनका उठाया और कहा कि इससे भी नफरत नही करना। मैंने कहा बापू जी यह तिनका क्या करेगा? वह बोले बच्चा यही तो तुझको पता नहीं है। वह बोले हवा का झोंका आया और इसे ले उड़ा, यह उड़कर तुम्हारी आँख में पड़ जायेगा फिर क्या करोगे? छोटा सा तिनका जिसको तुमने बुरा कहा वह उड़ा और तुम्हारी आँख में पड़ गया फिर तुम चिल्ला उठोगे। इस कुदरत के खेल में जो कुछ भी बना है, चाहे वह जल में रहने वाला है, चाहे वह थल में रहने वाला है, चाहे वह आकाश में रहने वाला है, चाहे वह पाताल में रहने वाला है, वह कुदरत ने किसी नियम के मुताबिक बनाया है। इसलिए अपने मन से इस नफरत को निकाल दो।

तुम मानवता मन्दिर में आते हो। तुम्हें किसी और धर्म का या किसी और गुरु का शिष्य मिले उसको गले से लगाओ। किसी से यह मत कहो कि वह वहाँ जाता है और हमारे नहीं आता। जिसको जिस कुएँ के पानी से आराम आयेगा वह उसी कुएँ का पानी पीयेगा। जिसको जिस वैद्य से आराम आयेगा वह उसी वैद्य के पास जायेगा। किसी को कभी भी बुरा मत कहो। सबसे प्रेम करो चाहे वह किसी भी धर्म का हो, चाहे वह किसी भी गुरु से सम्बन्ध रखता हो। तब मैं समझूँगा कि तुम मानवता-मन्दिर के राजकुमार हो क्योंकि यहाँ मानवता का झंडा है। यहाँ इन्सानियत का झंडा है। जहाँ इन्सानियत है, मानवता है वहाँ मेरा-तेरा होगा ही नहीं। पहले इस मेरे-तेरे का खत्म कर दो। फिर देखना तुम्हारे अन्दर उड़ने के पँख लग जायेंगे।

बुल्लेशाह एक सूफी संत हुए हैं। उनके गुरु थे तो मुसलमान ही, लेकिन उनका धर्म किसी और परम्परा का था। बुल्लेशाह दूसरी परम्परा का था। बुल्लेशाह ने उनको अपना गुरु बनाया, खेती-बाड़ी करते थे, सब्जियाँ उगाया करते थे। बुल्लेशाह को लोग बोला करते थे कि तुमने भी किस व्यक्ति को अपना गुरु बना लिया। वे कहते थे कि गुरु की कोई जात नहीं होती। गुरु का कोई पद नहीं होता। एक बार बुल्लेशाह बोले कि आज तो मैंने गुरु से भेद लेकर ही छोड़ना है। वे अपने गुरु के पास गए तो देखते हैं कि गुरु जी प्याज की पनीरी को एक तरफ से उठा कर दूसरी तरफ लगा रहे हैं। बुल्ला रो रहा है, वह कहता है कि महाराज दया करो नहीं तो मैं आज यहाँ अपने-आपको समाप्त कर दूँगा। गुरु की दया हुई उन्होंने इधर से प्याज की पनीरी को उठाया और दूसरी तरफ लगा दिया और कहा –

बुल्लया, रब दा की पाणा इधरौं पटणा, ते उधर लाणा।

फिर भी उसकी समझ में बात नहीं आई। वे बोले आप तो प्याज लगा रहे हैं, मुझे तो कुछ पता नहीं लगा। हमारा मन प्याज है। इसकी जड़ें नीचे की ओर हैं। हमारा मन नौ द्वारों में खेल रहा है। इसको उठाकर ऊपर की ओर ले जाना। दाता दयाल जी महाराज कहते हैं–

तुम उलट चलो असमान नीचे क्यों रहना। नीचे छाया, माया आदि है। लेकिन हमको जो आनन्द नीचे मिल रहा है हम उसको छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। कहीं आँखों से आनन्द ले रहे हैं, कहीं जुबान से आनन्द ले रहें हैं, कहीं कानों से आनन्द ले रहे हैं कहीं इन्द्रियों से आनन्द ले रहे हैं। अरे! एक बार उस आनन्द का नजारा तो लेकर देख लो, तुम सब कुछ भूल जाओगे। इसलिए **धोबिया प्रकटा जग में सजनी।** मेरे पूजनीय कैप्टन लाल चंद जी बैठे हैं, इनकी संगत प्राप्त करो। यह वह

फल देते हैं जो पका हुआ है। मैं वह फल देता हूँ, जो पकने वाला है। मैं तो पौधा तैयार करता हूँ, परमदयाल जी महाराज के दरबार का बगीचा तैयार करता हूँ जिसमें फूल खिलें। ये आपको ज़िन्दगी का पूरा अनुभव देते हैं। पका हुआ फल देते हैं। इसलिए संतों का लाभ उठा लो। यह वक्त बार-बार नहीं आयेगा। यह ज़िन्दगी भी बार-बार नहीं आयेगी। आयेगी भी तो किसी और रूप में आयेगी। भाग्यशाली कौन है? तुम कहोगे उसके बच्चे बड़े लायक हैं वह बड़ा भाग्यशाली है। उसका कारोबार बड़ा अच्छा है, वह बड़ा भाग्यशाली है। उसके पास धन-दौलत हैं, वह मन्त्री बन गया वह बड़ा भाग्यशाली है। संतमत में भाग्यशाली कौन है? जिसको सद्गुरु मिल गया, उसका पहला भाग खुल गया। उसको सद्गुरु का सत्संग मिल गया, उसका दूसरा भाग खुल गया। उसने सद्गुरु की वाणी को समझा, उसका तीसरा दरवाज़ा भी खुल गया। बात को समझकर यदि वह उस पर चल गया, उसकी दुनिया ही बदल गई। उसका दीन भी बन जायेगा और उसकी दुनिया भी बन जायेगी। तुम एक बार उस पर चल कर तो देख लो।

मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ता था लेकिन एक खोज थी, गुरु को प्राप्त करने की और अपने-आपको जानने की। मैंने हजूर परमदयाल जी महाराज से दुनिया की कोई चीज़ नहीं माँगी। हालाँकि गरीबी बहुत थी पर मैंने उनसे नहीं कहा। मैं उनका हो गया, उन्होंने मेरा घर ही भर दिया। अरे! माँगने की जरूरत ही नहीं पड़ी। अरे! तुमने माँगा तो गुरु की दया क्या हुई? बिन माँगे ही सब कुछ मिलेगा, तुम उनकी बात पर चलना शुरू कर दो।

हाथ कंगन को आरसी क्या।
पढ़े-लिखे को फारसी क्या।

यह प्रैक्टिकल है, भाषण नहीं। मैं दर्दे दिल से कह रहा हूँ। तुम एक कदम चलो वह तुम्हारी तरफ दस कदम आने को तैयार है। तुम उनकी एक बात पर तो चलो तुम्हारी सारी दुनिया बदल जायेगी। दुनिया तब बदलनी शुरू होगी जब तुम घरों में शान्ति ले आओगे। अपने अहम को कम करो फिर देखो क्या बनता है।

कर्म की भट्टी तप की अग्नी, ज्ञान का साबुन लाय।
धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय॥

तुम कहो कि गुरु जी आशीर्वाद दे दो और काम बन गया। नहीं, कर्म करना पड़ेगा। **कर्म प्रधान विश्वकर राखा।**

जो जस किन वैसो फल चाखा।

तुम यहाँ बैठे हो यह तप ही तो कर रहे हो और मैं अनुभव के ज्ञान का साबुन लगा रहा हूँ। तुम्हारे मन को धोने की कोशिश कर रहा हूँ। तुम्हारे मन में पुरानी चीज़ों को निकाल कर नई चीज़ें भरने की कोशिश कर रहा हूँ। जिनका मस्तिष्क खुला हुआ है वे प्राप्त कर लेंगे। जिन्होंने बन्द किया हुआ है उनको कुछ नहीं मिलेगा। कर्म करो, मेरे सद्गुरु महाराज फरमाया करते थे कि काम करो। अगर कोई काम नहीं है तो कपड़े फाड़कर फिर से सिल लिया करो बजाय इसके कि इधर-उधर की चुगली निंदा करो। अपने मन को किसी काम में लगा लो। जब मन को काम में लगाओगे तो मन एकाग्र होगा। जब मन एकाग्र होगा तो नाम सिमरन भी होगा। एक कहते हैं दुविधा दूसरी दुचिताई (दोपना)। तुम सिमरन करने को बैठे हो लेकिन मन तुम्हारा कहीं ओर है। तुम दो चित्त हो गए। मन और चित्त दोनों को एक करके चलना है। मन में इतनी बड़ी ताकत है। तुम शास्त्रों में पढ़ लो। रावण के द्वार में अंगद ने पाँव रख दिया कि उठाओ किसमें इतनी ताकत है कि मेरा पैर उठाए। उसकी ताकत

नहीं उसके मन का बल था। तुम्हारे मन में बल है किन्तु तुमने उस ताकत का क्या किया।

Uncalled for Children पैदा कर लिये। अपनी ताकत को जाया कर दिया। मेरे दाता बार-बार यही कहते थे- ऐसी औलाद पैदा करो जो आज्ञाकारी हो, नेक हो, तुम्हारे लिए भी सुखदायी हो और देश के लिए सुखदायी हो। जो औलाद पैदा हो गई है उसको प्यौंद लगाओ यानि सत्संग में ले जाओ। उनको किसी महापुरुष का स्पर्श करवाओ। वे अपनी Radiation से उस पर पड़े संस्कारों को बदल देंगे। बच्चे को बदला जा सकता है। आज दुनिया किससे दुखी है? अपनी औलाद से दुखी है। कारण क्या है? हम सनातन धर्म के नियमों को भूल गए। हमने उन नियमों को छोड़ दिया, इसलिए हम आज दुखी हैं।

जननी जनें तो भगत जन या फिर जनमें शूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहे काहे गवाए नूर॥

ऐ माता तू ऐसा बच्चा पैदा कर जो या तो उस परम तत्व को पाने वाला हो या फिर बहादुर हो। अपना नाम रौशन करे, अपने माता-पिता का नाम रौशन करे, अपने देश का नाम रौशन करे, ऐसी औलाद पैदा कर। सन्तों ने बड़ा कुछ कहा लेकिन Science ने इतनी तरक्की कर ली कि बच्चा गर्भ में है, उसका पहले ही टैस्ट करवा लेते हैं कि बच्चा लड़की है या लड़का। लड़की है तो खत्म कर दो। कन्या, जिसको हम लक्ष्मी कहते हैं, जिसको हम दुर्गा कहते हैं, जिसको जगत-जननी कहते हैं, उसको जन्म से पहले ही हम कत्ल कर रहे हैं, तो हमारा कल्याण कैसे होगा? इस बात को ध्यान में रखो जो मालिक ने दिया, उसको स्वीकार करो। उसको नेक बनाओ, तुम्हारी दुनिया बदल जायेगी।

परमदयाल जी महाराज अभिमन्यु की मिसाल दिया करते थे। अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में चक्रव्यूह भेदना सीख लिया। अगर वह माँ के

गर्भ में पिताजी की कहानी से चक्रव्यूह भेदना सीख सकता है, तो आजकल की माताएँ गन्दे सीरियल, लड़ाई-झगड़े देखती हैं, तो बच्चे भी वैसा ही करेंगे। आजकल मैं देखता हूँ छोटे-छोटे बच्चे बहुत अच्छा डाँस करते हैं। मैंने कहा इनकी मम्मी जरूर डाँस वाले सीरियल देखती होंगी। बच्चे पर असर जरूर आयेगा। तुम्हारे मन की सफाई करना चाहता हूँ।

सत्संग शिला पै मल-मल धोवे, चूनर मैल भराय।
धोबिया प्रगटा जग में, सजनी, लीजो चूनर धु लाय॥

धोबी की यह सत्संग शिला है। शिला पर तुम्हारा मन साफ किया जाता है।

मन के मते न चालिए, मन के मते अनेक।
मन पर जो असवार है, वह साधु कोई एक॥

आप बस अपने मन की किताब पढ़ा करो। मुझे मेरे दाता ने यही कहा कि बच्चा अपने मन की किताब पढ़ा कर। पता लगा कि ख्याल ठीक नहीं है साथ ही साफ कर दिया पर वह महापुरुष जिन्होंने यह परम्परा चलाई, वे बहुत मेहरबान थे, दयावान थे जो ऐसी परम्परा हमको दे गए कि यहाँ पर सभी इकट्ठे बैठकर विचार-विमर्श करते हैं। यह सत्संग शिला है, कोई कान्फ्रेन्स नहीं हैं। तुम्हारे भले के लिए है, अज्ञान को दूर करने के लिए है। वह अज्ञान कब दूर होगा? संत कृपाल सिंह जी महाराज सन् 1964 में यहाँ आए थे। उन्होंने इसी मंच से एक बात कही-सड़क पर खम्बें लगे होते हैं, उस पर बल्ब लगे होते हैं। जिस खम्बे पर बल्ब लगा होता है वहाँ तुम निर्भय होकर चलते हो। यहाँ खम्बे लगे हैं पर बल्ब नहीं है। तुम कहते हो यहाँ अन्धेरा हैं, यहाँ नहीं जाना। वे कहा करते थे जगते हुए उस खम्बे के पास बैठो जहाँ लाईट है। अन्धेरे में टक्कर मत मारा करो। दाता दयाल जी महाराज हमें एक सन्देश दे रहे हैं वही मैं आप तक पहुँचाने की कोशिश कर रहा हूँ।

फटे न बिगड़े सूत न बिखरे, सहज ही साफ कराय।
धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय॥

फटे न बिगड़े का मतलब होता है दो पाड़ हो जाना या उसकी शक्ल बिगड़ जाना। इस दरबार से एक खास बात कही जाती है और परमदयाल जी महाराज भी एक बात कहा करते थे– यह जरूरी नहीं है कि तुम मेरा ध्यान करो। जिस पर भी तुम्हारा विश्वास है, उसका ध्यान करो। किसी देवी या देवता को मानते हो उसके साथ लगे रहो। अगर उससे टूटोगे तो समझो चुनरी के दो टुकड़े हो रहे हैं। हम दो टुकड़े नहीं करते। जिस भी महापुरुष पर तुम्हें विश्वास है। जिस भी महापुरुष से तुम्हें प्यार है, उसी को अपना इष्ट बनाओ। जिस देवी–देवता को मानते हो उसको इष्ट बनाओ। जन्म–मरण से छुटकारा तुम्हें ज्ञान और सद्‌गुरु से मिलेगा। दुनिया प्राप्त करना चाहते हो, जिसका मर्जी ध्यान करो। **राम नाम जपो, हरि ओम जपो, वाहे गुरु जपो, राधास्वामी जपो।** कबीर साहिब ने तो यहाँ तक कह दिया– **कबीर राम उत्तम वाणी। 'राम'** महापुरुषों के मुखारविन्द से निकली हुई वाणी है।

वाणी गुरु, गुरु है वाणी।
विच वाणी अमृत सारे॥

अगर तुम वाणी पर नहीं चलोगे तो कामयाबी नहीं है। इसलिए जहाँ भी तुम हो और जिस भी गुरु को मानते हो मुबारक है। उस गुरु को आदमी मत समझो।

गुरु को मानुष जानते, जे कहिए नर अन्ध।
दुखी हुए संसार में, आगे जम का फन्द॥
राधास्वामी धोबिया न्यारा, शब्द का रंग दिलाय।
धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय॥

तुम्हारी ज़िन्दगी बाहर के शब्द ने बदलनी है। बाहर के शब्द में चलते हुए तुमने अन्दर का शब्द पकड़ना है। जिस पर उसकी दया हो

जाती है वह उस शब्द को भी पकड़ेगा। मगर तुम दुनियादार हो, पहले अपनी दुनिया बनाओ। नेक बनने की कोशिश करो, एक दूसरे के काम आओ। चुगली, निन्दा, बुराई को छोड़ दो। तुम्हारा दुश्मन न काम है, न क्रोध है, न लोभ है, न मोह है, वह पाँच मित्र हैं, तुम्हारे घोड़े हैं उन पर सवार होना सीखो। यह ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, दुश्मनी सबसे खतरनाक है इनसे बचो। काम, क्रोध और मोह के बिना तो कोई जी नहीं सकता। मैंने बहुत कुछ कह दिया। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ भर लो झोलियाँ, कुछ ले जाओ। वह दौलत ले जाओ जो तुम्हारा साथ देगी। गुरु तुम्हारे पास नहीं जाता, गुरु को तुम प्रगट करते हो। गुरु को पैदा करने वाले तुम हो, तो तुम बड़े हुए कि गुरु बड़ा हुआ।

आप सब का भला हो। सच्चे दिल से चाहता हूँ जिस मनोकामना को लेकर आए हो, वह मनोकामना पूर्ण हो। तुम्हें शारीरिक तन्दुरुस्ती मिले, तुम्हारे घरों में शान्ति आए, तुम्हें खाने को इज्जत की रोटी मिले, पहनने को कपड़ा मिले। रहने को मकान मिले और मन को शान्ति मिले।

सबको राधास्वामी!

सूचना-निवेदन

सभी सत्संगी भाई–बहनों से निवेदन है कि अपने–अपने मोबाईल से हमें निम्न दिए गए नम्बर पर कॉल करें। हमारा विचार है कि हम आप सबको प्रतिदिन परमदयाल जी महाराज के अनमोल वचनों में से एक वचन प्रेषित किया करेंगे।

:- 0 90411-42545

– सचिव

आभार प्रदर्शन

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि भेजी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों और इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। – सचिव

S. NO.	DONOR	AMOUNT
1.	HH Dayal Kamal Ji Maharaj (Hoshiarpur)	3100/–
2.	Roop Chand Dewda (Hyderabad)	51000/–
3.	Jagjit Awasthi (U. S. A.)	45500/–
4.	Prem Lata Gupta (Delhi)	13000/–
5.	Rajesh K. Hiranandani (Mumbai)	11111/–
6.	Praveen Sharma (Delhi)	11101/–
7.	Bhagwan Vyas (Hyderabad)	11000/–
8.	Dr. H. S. Chawla (Chandigarh)	10000/–
9.	Kanta Devi (Saloh (Una)	10000/–
10.	Kanta Devi/ Suparkash (Chandigarh)	7500/–
11.	Vaneet Saini (U.S.A)	6328/–
12.	Vinod/ Parmod/ Manoj (New Delhi)	5151/–
13.	Lakhwinder Kaur (U. K.)–Adampur	5100/–
14.	Opinder Singh (U. S. A.)	6000/–
15.	Mata Lajwanti & Nand Singh (Harchowal)	5100/–
16.	Dalbir Chaudhart (Begusarai)	5000/–
17.	Dr. Anup Kumar (Pragpur)	5000/–
18.	Dr. Jyotsna Sharma (Nizamabad)	5000/–
19.	Hari Singh Bhatia (Hoshiarpur)	3600/–
20.	Sunny Bhadaur	3100/–
21.	Sangat Bhadaur	3100/–
22.	Kuldeep Sharma (Batala)	3200/–
23.	Nisha Bhatnagar (Hissar)	2100/–
24.	Surinder Kumar (Hoshiarpur)	2100/–
25.	Adlakha Family (Gurgaon)	2100/–
26.	Virender Kr./ Kiran Sharma (Ludhiana)	2000/–
27.	Vidya Rani W/o Satnam Singh (Shahdra)	2000/–
28.	Sarwan Kumar (Gagret)	2000/–
29.	Atul Kumar (Kheri)	1500/–
30.	Ganesh C. Kaushal (Adampur)	1500/–
31.	Vipin W. Jaswante (Amarawati)	1501/–
32.	Babu Ram Thakur (Nimhol (H. P.)	1500/–
33.	Anand Kakkar (Jalandhar)	1100/–
34.	Hardyal Singh	1100/–
35.	Meenu Model School (Datarpur)	1100/–
36.	S. K. Sethi (Jalandhar)	1100/–
37.	Amar Singh (Jhawan)	1100/–
38.	Sewa Kaur (Jhawan)	1282/–
39.	Satish Sharma (Hoshiarpur)	1100/–
40.	Mrs. Shama Raghav (Hoshiarpur)	1100/–
41.	Dinesh & Rakesh (Delhi)	1101/–
42.	Mr. Ladhar (Jalandhar)	1100/–
43.	Satpal Devgan (Amritsar)	1200/–
44.	Ram Kumar Sharma (Chandigarh)	1100/–
45.	Anup Kumar (Gurgaon)	1100/–
46.	Sushil Gandhi (Alwar)	1100/–
47.	Vaibhav (Delhi)	1100/–
48.	Dhiman Watch Co. (Saharanpur)	1100/–
49.	Manoj Kumar Khurana	1100/–
50.	Chaman Lal (Hoshiarpur)	1000/–
51.	In Memory of Late Sh. Naresh Kr. Gautam (Hoshiarpur)	1000/–
52.	Ram Prakash Vohra (New Delhi)	1500/–
53.	Murti Ram (Hissar)	1000/–
54.	Kashmiro Devi (Nadaun)	1000/–
55.	Raghuwar Dayal & Sons (Amritsar)	1000/–
56.	Mata Bhanwar Kanwar (Jaipur)	1000/–
57.	Ganga Singh (Jodhpur)	1000/–
58.	Krishan Gopal (Jalandhar)	1500/–
59.	B. S. Sharma (Jwalamukhi)	1000/–
60.	Rakesh Sharma	1000/–

61.	Hem Kanwar (Jodhpur)	700/–
62.	Ashok (Delhon)	772/–
63.	Chaman Lal Tarsem (Maur Nabha)	700/–
64.	K. Sood (Sahibabad)	600/–
65.	M. A. Sahai (Naya Nangal)	600/–
66.	Nepal Singh (Akhtiyarpur)	560/–
67.	J. K. Trading Corp.(Mumbai)	531/–
68.	Ganesh Gupta (Hoshiarpur)	511/–
69.	Sanjay Kumar (Nagrota)	501/–
70.	Aditya Garg (Hoshiarpur)	511/–
71.	Suresh Kumar (Behion (H. P.)	501/–
72.	Rajan Chopra (Hoshiarpur)	501/–
73.	Ajit Singh Pathania (Hoshiarpur)	501/–
74.	Rajinder Singh (Aligarh)	510/–
75.	Kapil Sharma (Delhi)	501/–
76.	Smt. Ram Devi (Padampur)	500/–
77.	Agam Dua (Adampur)	500/–
78.	Jarnail Singh (Bhoma)	500/–
79.	Mukesh Kulshreshta (Kangra)	501/–
80.	Anil Kumar (Hyderabad)	500/–
81.	Jai Krikhaloo (Jammu)	500/–
82.	Manohar Lal (Hoshiarpur)	500/–
83.	Rattan Lal (Navi Bassi)	500/–
84.	Sadhu Singh (Gurdaspur)	500/–
85.	Bai Harbans Lal Ji (Jalal()	500/–
86.	Sahib Saran (Jalal)	500/–
87.	Binder Rani Dhir (Jalal)	500/–
88.	Baiti Dhir (Jalal)	500/–
89.	Vishal Dhir (Jalal)	500/–
90.	Anand Prakash Dhir (Jalal)	500/–
91.	Sangeeta Rani (Badhni Kalan)	500/–
92.	Satpal (Binjal)	500/–
93.	Jagmail Singh Jaildar (Ghuman Kalan)	500/–
94.	Rajinder Pal (Badhni Kalan)	500/–
95.	Amar Nath (New Delhi)	500/–

96.	Harmandir Jaildar (Ghuman Kalan)	500/–
97.	Mata Gurdev Kaur (Barnala)	500/–
98.	Amar Singh Pathi (Bhadaur)	500/–
99.	Hariday Mohan Srivastava (Mishrik)	500/–
100.	Anjali Veer Srivastava (Mishrik)	500/–
101.	D. J. Kamal Ji (Una)	500/–
102.	Manav Dayal Enterprises (Pathankot)	1100/–
103.	Ramesh Pal (Bhikhiwind)	500/–
104.	Pratap Singh (Hissar)	500/–
105.	Madan Lal (Rohana Khurd)	500/–
106.	Om Prakash Bhandari (Alawalpur)	500/–
107.	Prabhu Dayal Malhotra (Amirtsar)	500/–
108.	Rajesh Kumar (Budhawar)	500/–
109.	Gurmeet Singh (Singhpur)	500/–
110.	Ram Chand Bhandari (Jalandhar)	500/–
111.	Ashok Khetrapal (Panchkula)	500/–
112.	Arjun Saini (Mahilpur)	500/–
113.	Sneh Lata (Simbholi (UP)	500/–
114.	Modu Ram (Ludas (Hissar)	500/–
115.	Amin Lala (Sheikhupur)	500/–
116.	Bhuvnesh Sharma (Delhi)	500/–
117.	Reetu Kanwar (Khatu Shyam)	500/–
118.	K. C. Prashar (New Delhi)	500/–
119.	M. L. Sharma (Dharamsal (Una)	500/–
120.	Gurbachan Singh (Chandigarh)	500/–
121.	K. N. Ahuja (Hoshiarpur)	500/–
122.	Ashok Kumar (Muzaffar Nagar)	500/–
123.	Sukh Samiti Sadan (Jassur)	500/–
124.	Dr. P. N. Sharma (Chohal)	500/–
125.	Mrs. Manju Gupta (Chandigarh)	2100/–
126.	Kishore Chand Gupta (Noida)	11001/–